‘कौल-कल्पतरु’ चण्डी

६७ वर्षों से प्रकाशित आध्यात्मिक पुस्तक-माला

महा-पर्व

दीपावली

विशेषाङ्क

श्रीलक्ष्मी
श्रीसिद्ध-लक्ष्मी
श्रीरमा
एवं
श्रीमहा-लक्ष्मी
मन्त्र-विधान
सहित

प्रकाशक :
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

समुद्र-मन्थन
श्रीलक्ष्मी का प्रादुर्भाव

चेतना को ढँकनेवाली अर्थात् 'असुर' एवं
चैतन्य अर्थात् 'सुर'–दो प्रकार की वृत्तियों द्वारा
'संसार'-रूपी समुद्र के मन्थन से
'श्रेय'-स्वरूपा श्रीलक्ष्मी का प्रादुर्भाव

वर्ष : ६८ अङ्क : ६

महा-पर्व दीपावली

विशेषाङ्क

भगवान् श्रीधन्वन्तरि

भगवान् श्रीहनुमान

भगवान् श्रीगणेश

भगवती श्रीमहा-काली

भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी

भगवती श्रीमहा-सरस्वती

श्रीलक्ष्मी, श्रीसिद्ध-लक्ष्मी, श्रीरमा

साधना

***

सम्पादक
ऋतशील शर्मा

*

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ०९४५०२२२७६७

अनुदान [illegible]/-

समर्पण

पञ्च-दिवसीय 'महा-पर्व दीपावली' के
शोधात्मक ज्ञान-विज्ञान के सूत्रधार

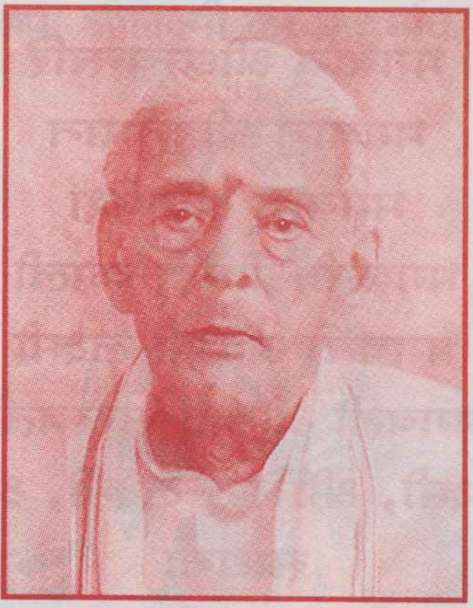

'चण्डी' एवं 'सम्पादक की वाणी' के सम्पादक
'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल जी के
कर-कमलों में समर्पित

❋

सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संशोधित एवं संवर्धित संस्करण
आश्विन शुक्ला पञ्चमी, शुभ-कृत् सं० २०६६ वि० (२३ सितम्बर, २००९)

मुद्रक : परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)-२११००६

महा-पर्व 'दीपावली'

- **'शारदीय नवरात्र'** के बाद **'दीपावली'** साधकों के लिए अत्यन्त महत्व-पूर्ण है। **'नव-रात्रों'** में साधक **'परा-शक्ति'** की आराधना करते हैं और अपने को उनकी **'कृपा'** प्राप्त करने का अधिकारी बनाते हैं।
- **'नव-रात्रों'** में साधक के हृदय में **'भक्ति'**-रूपी **'पुष्प'** के रूप में आत्म-समर्पण का जो भाव जाग्रत होता है, वही **'दीपावली'** में साधकों के मन में **'दीप'** की आकृति धारण करता है। जब उसमें से **'काश'** निकलने लगता है, तब धूम-रहित **'दीप'**-शिखा-रूप **'साधना'-मार्ग** भी दिखाई देने लगता है। इस प्रकार **'दीपावली'**—साधकों के लिए अत्यन्त महत्व-पूर्ण है।
- **'धर्म'**-शास्त्रों के अनुसार **आषाढ़ शुक्ला एकादशी** से **कार्तिक शुक्ला एकादशी** तक का समय **'चतुर्मास'** (चार महीने)—**देवताओं का 'सुषुप्ति'- काल** कहलाता है। **'प्रकृति'** - नई सृष्टि के लिए गर्भवती रहती है। वर्षा से **'प्रकृति'** की प्राण-मयी **'अग्नि'-ज्योति** भी क्रमशः क्षीण होती है। **दक्षिणायन** होने के कारण **'सूर्य'-ज्योति** भी क्षीण होती है। अतएव पहले तो साधक को एक बार पुनः **'शक्ति' का बोधन, आवाहन-पूजन** अर्थात् **'शारदीय नवरात्र'** का आयोजन करना होता है, फिर **साधना का चैतन्यीकरण** अर्थात् **'दीपावली'** का आयोजन करना होता है।
- **'साधना'** को चैतन्य करने के लिए महा-पर्व **'दीपावली'** में पाँच पर्व-दिन हैं—**(१) कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी—'धन-त्रयोदशी', 'धन्वन्तरि-जयन्ती'।(२) कार्त्तिक कृष्णा चतुर्दशी —'नरक-चतुर्दशी'। (३) कार्तिक अमावास्या—'दीपावली'।(४) कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा—'गो-वर्धन-पूजा', 'अन्न-कूट'।(५) कार्तिक शुक्ला द्वितीया—'भ्रातृ-द्वितीया', 'यम-द्वितीया'**। इन **पाँच पर्व-दिनों** के बाद भी **'अक्षय-नवमी'** जैसे कई महत्व-पूर्ण पर्व **'कार्तिक' - पूर्णिमा** तक हैं, जिनमें साधक अपनी अभीष्ट साधना का अभ्यास कर उसे **चैतन्य** बन सकता है। **'दीपावली' का पहला पर्व-दिन कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (कार्तिक शिव-रात्रि)** है। यहाँ से **देवताओं की सुषुप्तावस्था—चतुर्मास** का **अन्तिम भाग** ही शेष रहता है और **देवताओं के जागरण की पूर्व-सन्ध्या** प्रारम्भ होती है। साधक इस दिन दिव्य भावों की ऋणात्मकता के स्थान पर धनात्मकता की कल्पना करता है और **दिव्य भावों की धनात्मकता** का आभास—**'अमृत'-प्राप्ति** का आभास कराता है। इसीलिए इस दिन **'अमृत'-कलश-धारी महा-विष्णु धन्वन्तरि** का स्मरण-पूजन होता है। साथ ही; **काम-देव** द्वारा पूजित **देवी कामेश्वरी** का भी पूजन होता है, क्योंकि कामनाओं को सिद्ध करने की बेला होती है।
- **'दीपावली' का दूसरा पर्व-दिन कार्त्तिक कृष्णा-चतुर्दशी** है। इसे **'नरक' - चतुदर्शी** कहते हैं। इस दिन मन-वचन और कर्म से पवित्र होने के लिए **'नरक'** का स्मरण कराया जाता है, जिससे साधक दुष्कर्मों और दुष्ट भावनाओं से बचता है। साथ ही, अपनी **'प्राण'-शक्ति** को सम्वर्धित करने के लिए **रुद्रात्मक भ० हनुमान** की आराधना करता है। रात्रि में **'दरिद्रता' - रूपा अलक्ष्मी** का गमन होता है और विशिष्ट साधक **ज्येष्ठा लक्ष्मी भगवती धूमावती** की आराधना करते हैं।
- **'दीपावली' का तीसरा पर्व-दिन कार्त्तिक अमावास्या** है। **अमावास्या** के कारण इस दिन रात्रि में तीसरी ज्योति-**'चन्द्र' -ज्योति** भी नहीं रहती। अतः सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करनेवाली **मूल ज्योति**

'**महा-लक्ष्मी**' की आराधना होती है। '**महा-लक्ष्मी**' की आराधना के लिए **भगवान् गणेश, महा-काली, महा-सरस्वती** की आराधना आवश्यक है, अत: रात्रि में उनकी पूजा-अर्चना भी की जाती है।

- '**दीपावली' का चौथा एवं पाँचवा पर्व-दिन** क्रमश: **कार्त्तिक शुक्ला प्रतिपदा – द्वितीया** है। इन दिनों भक्त-गण अपनी ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों को सम्वर्धित करने के लिए '**अन्न-कूट**', '**गो-वर्द्धन-पूजा**', '**प्रात: काल चन्द्र-दर्शन**', '**यमुना'-स्नान** आदि करते हैं, जिससे धन, यश, आयु और बल—चारों की वृद्धि होती है।
- **महा-पर्व 'दीपावली'** के उक्त **पाँचों पर्व-दिनों** के लिए **प्रस्तुत विशेषाङ्क में विविध साधनाएँ** दी जा रही हैं। साधक इन्हें जानकर इनसे लाभ उठा सकते हैं। ये साधनाएँ '**दीपावली**' के **पर्व-दिनों** में तो विशेष रूप से करणीय हैं ही, साथ ही अन्य **सामान्य दिनों में भी उपयोगी** हैं। अत: इनके द्वारा **सतत अभ्यास** कर हम **विशेष-विशेष लाभ** प्राप्त कर सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं। **महा-पर्व 'दीपावली'** में '**दीप'-दान, 'दीप'-प्रज्वलन का विशेष महत्व** होता है। **गुप्तावतार बाबा श्री** के शब्दों में '**दीप**' के पाँच अङ्ग होते हैं—

(१) **पात्र या आधार,** जो मिट्टी या धातु का होता है।
(२) **जलनेवाला द्रव,** यथा तेल।
(३) **बत्ती,** जो रुई की बनाई जाती है।
(४) **चोषण-शक्ति,** जिससे तेल व हवा दोनों चूसे जाकर रुई की नोंक पर एकाग्र होते हैं।
(५) **उष्णता,** जिससे प्रज्वालन होता है।

'**दीप**' के उक्त पाँचों अङ्गों को साधक को अपने में देखना-ढूढँना चाहिए। इससे साधक की **साधना का विकास** होता है। यथा—

(१) वह स्वयं मिट्टी का बना हुआ **देह-धारी** है।
(२) उसका **स्नेह** ही घृत या तेल-वत् '**दीप**' के जीवन का आधार है।
(३) जितनी जैसी '**भक्ति**' होगी, उतने समय तक एकाग्रता होगी व वैसा ही '**काश**' होगा।
(४) उसके **स्नेह** व **भक्ति** को **इष्ट-देवता** के चरणों में खींच ले जानेवाली '**कुण्डलिनी**' भी उसी में है।
(५) '**अभ्यास**' करते '**मन्त्रार्थ**' व '**मन्त्र-चैतन्य**' से कुछ सुलग उठता है व चमकता है, जिसमें से **आशीर्वाद** या **कृपा** बरसती है।

संक्षेप में **महा-पर्व 'दीपावली**' सभी साधकों द्वारा कुछ करने का '**पर्व**' है। पिछले कुछ वर्षों से **गुरु-मण्डल की कृपा** एवं '**कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त जी शुक्ल** की विशेष प्रेरणा से '**चण्डी**'-पत्रिका द्वारा प्रति वर्ष '**दीपावली**'-अङ्क प्रकाशित होते रहे हैं। आज वही संग्रह यहाँ परिवर्धित रूप में '**श्रीलक्ष्मी, श्रीसिद्ध-लक्ष्मी, श्रीरमा, श्रीमहा-लक्ष्मी**' के कुछ विशिष्ट मन्त्रों के विधान के साथ पुन: प्रस्तुत हो रहा है। आशा है कि '**चण्डी**' के पाठक-बन्धु इससे प्रसन्न होंगे। उन्हें एक ही अङ्क में भिन्न-भिन्न कई अङ्कों की उपयोगी बातें इकट्ठी मिल जाएँगी और **भगवती श्रीलक्ष्मी** की विशेष प्रकार से साधना करने की प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

—ऋतशील शर्मा

'श्रीचण्डी'-धाम, प्रयाग-राज

महा-पर्व 'दीपावली'—विशेषाङ्क

निबन्ध-संग्रह

१. श्री धन्वन्तरि-व्रत-कथा ३
२. भगवान् धन्वन्तरि अष्टोत्तर-शत-नाम-पूजा ७
३. श्री हनुमान-चालीसा ९
४. श्री बजरङ्ग-बाण १२
५. श्रहनुमदष्टोत्तर-शत-नामावली १४
६. विघ्न-राज भगवान् गणेश की सरल साधना १६
७. श्री गणेश अष्टोत्तर-शत-नामावली १७
८. श्री महा-गणपति सहस्त्र-नाम-जप-प्रयोग १९
९. महा-लक्ष्मी ध्यानावली ३३

१०. त्रैलोक्य - मङ्गल लक्ष्मी-स्तोत्र ३४
११. श्रीमहा-लक्ष्मी स्तोत्रम् ३५
१२. श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्त्र-नाम-जप-प्रयोग ३७
१३. श्री काली - सहस्त्र-नाम-साधना ४१
१४. श्री सरस्वती-सहस्त्र-नामावलि ६२
१५. सुख-शान्ति-दायक महा-लक्ष्मी महा-मन्त्र-प्रयोग ७३
१६. सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-लक्ष्मी महा-मन्त्र-प्रयोग ७८
१७. एकाक्षर लक्ष्मी-बीज (श्रीं) की साधना ८१
१८. श्री मञ्जु-घोष की साधना ८२
१९. महा-लक्ष्मी अष्टोत्तर-शत-नाम-साधना ८३
२०. ऋण-हरण श्री गणेश-मन्त्र-प्रयोग ८४
२१. ऋण-मोचन महा-गणपति-स्तोत्र ८५
२२. श्री हनुमत्-साधना ८६
२३. 'श्रीलक्ष्मी' - नाम-मन्त्र-साधना ८७
२४. श्रीमहा-लक्ष्मी-सप्त-विंशाक्षर-मन्त्र-साधना ९१
२५. सर्व-सिद्धि-दायक श्री महा-लक्ष्मी-नामावली प्रयोग ९६
२६. 'कुञ्जिका स्तोत्र' और 'बीसा-यन्त्र' का अनुभूत अनुष्ठान ९९
२७. श्रीराम-बीसा-यन्त्र और श्रीनृसिंह-बीसा-यन्त्र १०३
२८. श्री हनुमान-बीसा-यन्त्र १०४
२९. श्री गो-रक्ष-बीसा-यन्त्र १०५
३०. सर्व-कामना-सिद्धि-यन्त्र १०६
३१. पञ्च-दशी प्रयोग-विधि १०७
३२. 'पञ्च-दशी-यन्त्र' से भगवती लक्ष्मी की कृपा-प्राप्ति १०८
३३. 'दीपावली' में धारण हेतु एक विशिष्ट यन्त्र १०९
३४. 'जैन-धर्म' के यन्त्र ११०
३५. श्रीलक्ष्मी, श्रीसिद्ध-लक्ष्मी, श्रीरमा एवं श्रीमहा-लक्ष्मी- मन्त्र-विधान ११३

★★★

श्री धन्वन्तरि व्रत-कथा

पहला अध्याय

सनकादिक मुनियों ने सूत जी से कहा — हे सूत महा-मुने! आपने भगवान् धन्वन्तरि की पूजा-विधि का विस्तार-पूर्वक वर्णन किया, किन्तु इसे सुनने पर भी हमें तृप्ति नहीं हुई। अतः **श्री धन्वन्तरि का माहात्म्य** अधिक विस्तार से बताइए।

मुनि - श्रेष्ठ सूत जी ने कहा — हे मुनियों! आप पाप - विनाशिनी कथा को सुनिए। इस कथा को सुनने से सभी रोगों का नाश होता है—

एक समय नारद जी सभी लोगों के कल्याण की इच्छा से समुद्र - द्वीप - पर्वत - सहित सम्पूर्ण पृथ्वी में भ्रमण कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सभी लोगों को विविध रोगों से दुःखी देखा। यह देखकर नारद जी चिन्तित हुए और वहाँ से 'स्वर्ग' जा पहुँचे।

स्वर्ग में इन्द्र आदि देवता भी रोगी हो रहे थे। यह देखकर नारद जी की चिन्ता और बढ़ गई। चिन्ता करते हुए वे 'वैकुण्ठ' में पहुँचे।

'वैकुण्ठ' में नारद जी ने **शङ्ख - चक्र - अमृत - कलश - धारी** और **अभय - हस्त धन्वन्तरि विष्णु** को देखा। श्री (लक्ष्मी), भू (पृथ्वी) और नीला देवी उनकी चरण - सेवा कर रही थीं। ऐसे महात्मा धन्वन्तरि-रूपी श्री विष्णु को नारद जी ने भक्ति - पूर्वक प्रणाम किया और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे।

श्री नारद जी बोले — हे देवों के देव! जगन्नाथ! भक्तों पर दया करनेवाले, दीन - बन्धु, दया - सागर, जगत् की रक्षा में तत्पर! आप मुझे शरणागत जानकर सन्तुष्ट कीजिए।

हे भगवन्! मैंने पृथ्वी आदि सभी लोकों में पर्यटन किया और वहाँ के निवासी जनों को नाना रोगों से दुःखी पाया। किसी को ज्वर ने गिराया है, तो किसी को राज-यक्ष्मा ने धर दबाया। कोई अतिसार, श्वास, खाँसी, संग्रहणी और पाण्डु - रोगादि से पीड़ित है। कोई वात - रोगों से पीड़ित है। कोई फोड़े, गिल्टी, प्लेग आदि से युक्त सन्निपात रोग और प्रमेहादि रोगों से घेरे गए हैं।

इस प्रकार लोग अनेक रोगों से ग्रस्त और दुःखी हैं। उन्हें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ और बारम्बार मैंने चिन्ता की। मैंने सोचा कि ये लोग कैसे नीरोग होंगे और प्रसन्न होंगे? इसी चिन्ता से मन में व्याकुल होकर मैं आपकी शरण में आया हूँ।

हे विश्वात्मन्! शरणागत भूम्यादि लोकों की आप रक्षा कीजिए। त्रैलोक्य में आपके अतिरिक्त इनका कोई रक्षक नहीं है।

भगवान् श्री विष्णु नारद जी के उक्त वचनों को सुनकर गम्भीर वाणी से बोले — हे मुने! आप भय न कीजिए। मैं **'आदि - धन्वन्तरि'** इन्द्र से आयुर्वेद प्राप्त कर पुनः अवतार लेकर सभी लोकों को नीरोग करूँगा। मैं कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, गुरुवार, हस्त नक्षत्र के समय अवतार लेकर **'आयुर्वेद' का उद्धार** करूँगा। इसमें सन्देह न करो। **।। श्री धन्वन्तरि - व्रत - कथा का पहला अध्याय।।**

दूसरा अध्याय

भगवान् विष्णु के उक्त वचनों को सुनकर **नारद मुनि अति प्रसन्न हुए और हर्ष से बोले—** हे भगवन्! आप **'धन्वन्तरि - पूजा' की विधि** बताइए। **'धन्वन्तरि - पूजा'** में कौन - सा ध्यान या विधान किया जाए? उसका नियम क्या है? उसका फल क्या है? किस समय, किसने उस पूजा को किया है? पूजा में क्या - क्या चीजें चाहिए? हे देव - देवेश्वर! लोकों पर अनुग्रह करने की इच्छा से कृपा - पूर्वक यह सब मुझे बताइए।

श्री भगवान् ने कहा — हे मुने! तुमने लोकोपकार की इच्छा से पूछा है। अतएव तुमसे 'पाप-नाशिनी, रोग-नाशिनी कथा' कहता हूँ।

धनगुप्त राजा के निमित्त **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** गुरुवार हस्त नक्षत्र के समय मैं रात्रि के प्रथम प्रहर में गुप्त धन के समान **'धन्वन्तरि'** नाम से अवतीर्ण होता हूँ। अतएव वह दिन संसार में **'धन - त्रयोदशी' (धन - तेरस)** नाम से प्रसिद्ध होगा। यह तिथि सभी कामनाओं को देनेवाली है।

नारद जी ने पूछा — हे भगवन्! कृपया विस्तार - पूर्वक बताइए कि बड़-भागी **'धनगुप्त'** कहाँ हुआ और आपके दर्शन की प्राप्ति के लिए उसने कौन - सा व्रत किया था और हे दया - सागर नारायण! उसने आपका पूजन क्यों किया था?

श्री भगवान् ने कहा — पहले अवन्तीपुर (उज्जैन) में 'धनगुप्त' नामक राजा धर्म-मार्ग से प्रजा का पालन करनेवाला हुआ था। वह सभी लोगों को प्यारा, उदार - चित्त था। उसे क्षय रोग हो गया। उससे वह दिन - रात पीड़ित होने लगा। पीड़ा की निवृत्ति के लिए उसने जप, होम, नाना प्रकार की औषधियाँ कीं, परन्तु नीरोग न हुआ। तब वह खिन्न होकर विलाप करने लगा।

राजा की स्त्री त्रिलोक में प्रसिद्ध सुशीला, पतिव्रता, सदाचारिणी थी। उसने भी पति के मङ्गल की आकांक्षा से अनेक नियम, उपवास आदि किए, पर इससे भी राजा नीरोग न हुआ और अन्त में वह स्त्री भी अतीसार रोग से रोगिणी हो गई।

हे मुने! उस राजा से उस पतिव्रता स्त्री के पाँच पुत्र हुए। वे क्रमशः आमवात, प्लीहा, कुष्ठ, खाँसी और श्वास से पीड़ित हुए। उनको भी रोग से छुटकारा न मिला। राजा और रानी अपने पुत्रों को रोगार्त देखकर अत्यन्त दुःखी हुए।

स्त्री-पुत्रों को रोग के सागर से मुक्त कराने की इच्छा से चिन्तित राजा घोर वन को चला गया। वन में राजा ने महा -मुनि 'भरद्वाज' को बैठे देखा। राजा ने उन्हें भक्ति - पूर्वक प्रणाम किया और अपना दुःख बताया। महा - मुनि भरद्वाज से राजा ने रोग - कष्ट - निवारण हेतु उपाय पूछा।

भरद्वाज मुनि ने कहा — हे राजन्! तुम्हारा वत्तान्त मैंने जान लिया। तुम अति शीघ्र **महा - विष्णु**

'धन्वन्तरि' की शरण में जाओ। मनुष्य उनके दर्शन मात्र से घोर दुस्तर रोगों से मुक्त हो जाता है।

राजा ने भरद्वाज मुनि से उक्त बात सुनकर उनसे पूछा — हे महात्मन्! आप कृपा कर उनकी आराधना-विधि मुझे भली - भाँति बताइए।

ऋषि भरद्वाज ने कहा — हे महाभाग राजन्! उस विधि को मैं कहता हूँ, सावधान - चित्त से सुनिए।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (धन-तेरस) के शुभ दिन, प्रातः - काल उठकर शौच - मुख - मार्जन आदि से निवृत्त होकर 'स्नान' करे। शुद्ध वस्त्र आदि धारण कर गुरु से प्राप्त उपदेशानुसार भगवान् धन्वन्तरि का ध्यान करे। फिर निम्न मन्त्र पढ़कर 'व्रत' का प्रारम्भ करे —

'करिष्यामि व्रतं देव! त्वद् - भक्तस्त्वत्- परायणः। श्रियं देहि जयं देहि, आरोग्यं देहि मे प्रभो!'

अर्थात् हे देव! मैं आपका भक्त हूँ, आप में चित्त लगाकर आपका व्रत करूँगा। आप मुझे लक्ष्मी दीजिए, विजय दीजिए, आरोग्य दीजिए।

देव - देव धन्वन्तरि से उक्त प्रार्थना कर, उनकी षोडशोपचारों से पूजा करे। (षोडशोपचार पूजा - विधि हेतु देखिए - 'दीपावली की पूजा - विधि', मूल्य १०-०० रुपए।

'पूजा' करने के बाद तेरह धागों का सूत्र लेकर तेरह गाँठवाला **'दोरक'** बनाए। इस **'दोरक'** की भक्ति - पूर्वक पूजा करे और निम्न - लिखित मन्त्र पढ़कर पुरुषों के दाहिने हाथ में तथा स्त्रियों के बाँएँ हाथ में बाँधे —

धन्वन्तरे! महा - भाग! जरा - रोग - निवारक!
दोर - रूपेण मां पाहि, स - कुटुम्बं दया - निधे!
आधि - व्यधि - जरा - मृत्यु - भयादस्मादहर्निशम्,
पीड्यमानं देव - देव! रक्ष मां शरणागतम्॥

अर्थात् — हे धन्वन्तरे! हे महा - भाग! आप जरा (बुढ़ापा) और रोग के मिटानेवाले हैं। इसलिए हे दया - निधे! आप इस सूत्र - रूप से स - कुटुम्ब मेरी रक्षा कीजिए। मैं दिन - रात आधि (मानसिक दुःख) और व्याधि (रोग), जरा (बुढ़ापा) अर्थात् आयु - विषयक टेढ़ी कमर, सन्धि - पीड़ा, क्षुधा - नाश, अरुचि आदि त्रास - दायी उपद्रवों तथा मृत्यु (कु - समय अपघातादि से मरना) के भय से त्रस्त हो रहा हूँ। हे देव - देव! शरण में आए हुए मेरी अब आप रक्षा करें।

सूत्र - बन्धन के बाद 'देव - देव धन्वन्तरि' को भक्ति - पूर्वक **'अर्घ्य'** निवेदन करे। **अर्घ्य** प्रदान करने का मन्त्र इस प्रकार है —

जातो लोक - हितार्थाय, आयुर्वेदाभिवृद्धये।
जरा - मरण - नाशाय, मानवानां हिताय च॥
दुष्टानां निधनायाथ, जात्त धन्वन्तरे प्रभो!
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं, देव - देव कृपा-कर॥

अर्थात् हे देव - देव, दया-कारी धन्वन्तरि! आप लोकापकार के लिए, आयुर्वेद की अभिवृद्धि के निमित्त, मनुष्यों के हित तथा जरा - मरण का नाश करने के लिए अवतरित हुए हैं। मैं आपको अर्घ्य प्रदान करता हूँ। इसे स्वीकार कीजिए।

अर्घ्य प्रदान करने के बाद ब्राह्मण को बायन - दान करे। **'बायन' - दान** के लिए गेहूँ के आटे

में दूध, घी डालकर पकाए। पकने पर शक्कर डाले। केसर, कपूर, इलायची, लौंग जावित्री डालकर इस सिद्ध नैवेद्य को भगवान् को अर्पित करे। आधा 'प्रसाद' वेदज्ञ ब्राह्मण को अर्पित करे और आधा स्त्री-पुत्रादि सहित स्वयं प्रसाद-स्वरूप ग्रहण करे। हे राजन्! इस विधि से व्रत करने से साक्षात् धन्वन्तरि स्वयं प्रकट होकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करेंगे। इतनी कथा सुना कर भरद्वाज मुनि ने विश्राम लिया।

॥ श्री धन्वन्तरि - व्रत - कथा का दूसरा अध्याय ॥

तीसरा अध्याय

सूत जी बोले — हे मुनि-वरों! राजा धनगुप्त ने मुनि की आज्ञा पाकर उनके कहे अनुसार तेरह वर्ष पर्यन्त भक्ति-पूर्वक 'व्रत' किया।

एक दिन 'व्रत - समाप्ति' के अवसर पर साक्षात् धन्वन्तरि प्रगट हुए। राजा ने साष्टाङ्ग प्रणाम कर उनकी स्तुति की। भक्ति-पूर्वक की गई स्तुति स्वीकार कर भगवान् धन्वन्तरि ने कहा — 'हे राजन्! अब तुम डरो मत, तुम्हारा मङ्गल होगा। तुम हमसे वर माँगो।

राजा ने यह सुनकर उन्हें पुनः साष्टाङ्ग प्रणाम किया और उनकी स्तुति की —

धन्वन्तरे! नमस्तुभ्यं, नमो ब्रह्माण्ड - नायक!
सुरासुराराधितांघ्रे, नमो वेदैक - गोचर!
आयुर्वेद - स्वरूपाय, नमस्ते जगदात्मने॥१
प्रपन्नं पाहि देवेश! जगदानन्द - दायक!
दया - निधे महा -देव! त्राहि मामपराधिनम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगैः, पीड़ितं स - कुटुम्बिनम्॥

अर्थात् हे धन्वन्तरे! ब्रह्माण्ड - नायक! आपको नमस्कार। देव - दैत्यों से पूज्य-चरण! केवल वेद के ही जानने योग्य आपको नमस्कार। आयुर्वेद - स्वरूप - जगत् के अन्तर्यामी आपको नमस्कार। हे जगत् के सुखदायी देव - देव! दया - सागर, महा - देव! आप मुझ शरणागत अपराधी की रक्षा करें। मैं कुटुम्ब सहित जन्म - मृत्यु जरा आदि रोगों से पीड़ित हूँ।

भगवान् धन्वन्तरि ने यह स्तुति सुनकर मेघ - गर्जन के समान गम्भीर वाणी से मुस्कुराते हुए कहा- हे महा-राज! ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूँ। अब तुम हमसे वर माँग लो।

राजा बोले — हे देव! यदि आप प्रसन्न हैं, तो सबसे पहले स्त्री - पुत्रों सहित मुझे आरोग्य दीजिए।

यह प्रार्थना सुन कर भगवान् ने कहा — राजन्! तुमने जो प्रार्थना की है, वह पूर्ण होगी। इसके अतिरिक्त भी मैं वर देता हूँ। उसे सावधान होकर सुनो—

तुमने जिस प्रकार यह 'व्रत' किया है, इसी तरह जो 'व्रत' करेंगे, उनको आरोग्य प्रदान कर मैं उन्हें अपनी स्थिर भक्ति दूँगा।

सूत जी बोले — भगवान् धन्वन्तरि यह कहकर अन्तर्धान हो गए और राजा धनगुप्त अपनी पुरी में लौट गया। राजा नित्य स्त्री - पुत्रों सहित अमृत - पाणि धन्वन्तरि की स्तुति करने लगा। उसने पृथ्वी-लोक में नाना प्रकार के सुख भोगे और अन्त में भगवान् धन्वन्तरि की कृपा से मोक्ष - पद प्राप्त किया। इस प्रकार मैंने तुम लोगों को **भगवान् धन्वन्तरि की जन्मोत्सव-कथा** सुनाई। इसके सुनने से सभी पापों का नाश होता है। **॥श्री धन्वन्तरि - व्रत - कथा तीसरा अध्याय॥**

❑

भगवान् धन्वन्तरि
अष्टोत्तर-शत-नाम-पूजा

१ ॐ अमृत-वपुषे नमः
२ ॐ धर्म-ध्वजाय नमः
३ ॐ धरा-वल्लभाय नमः
४ ॐ धीराय नमः
५ ॐ धिषण-वन्द्याय नमः
६ ॐ धार्मिकाय नमः
७ ॐ धर्म-नियामकाय नमः
८ ॐ धर्म-रूपाय नमः
९ ॐ धीरोदात्त-गुणोज्ज्वलाय नमः
१० ॐ धर्म-विदे नमः
११ ॐ धराधर-धारिणे नमः
१२ ॐ धात्रे नमः
१३ ॐ धातृ-गर्व-भिदे नमः
१४ ॐ पुण्य-पुरुषाय नमः
१५ ॐ धाराधर-रूपाय नमः
१६ ॐ धार्मिक-प्रियाय नमः
१७ ॐ धार्मिक-वन्द्याय नमः
१८ ॐ धार्मिक-जन-ध्याताय नमः
१९ ॐ धनदादि-समर्चिताय नमः
२० ॐ धन्विने नमः
२१ ॐ धर्म-नारायणाय नमः
२२ ॐ आदित्य-रूपाय नमः
२३ ॐ अमोघाय नमः
२४ ॐ धिषण-पूज्याय नमः
२५ ॐ धिषणाग्रज-सेव्याय नमः
२६ ॐ धिषण-वन्द्याय नमः
२७ ॐ धिषणा-दायकाय नमः
२८ ॐ धार्मिक-शिखा-मणये नमः
२९ ॐ धी-प्रदाय नमः
३० ॐ धी-रूपाय नमः
३१ ॐ ध्यान-गम्याय नमः
३२ ॐ ध्यान-ध्यात्रे नमः
३३ ॐ ध्यातृ-ध्येय-पदाम्बुजाय नमः
३४ ॐ धूप-दीपादि-पूजा-प्रियाय नमः
३५ ॐ धूमादि-मार्ग-दर्शकाय नमः
३६ ॐ तेजोकृत-अग्नि-रूपाय नमः
३७ ॐ प्रभञ्जन वायु-रूपाय नमः
३८ ॐ सौम्याय चन्द्रमसे नमः
३९ ॐ बृहस्पति-प्रसूता-ओषध-द्रव्य-पतये नमः
४० ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
४१ ॐ धर्म-मार्गे विघ्न-कृत्-सूदनाय नमः
४२ ॐ धनुर्वातादि-रोगघ्नाय नमः
४३ ॐ धारणा-मार्ग-दर्शकाय नमः
४४ ॐ ध्यातृ-पाप-हराय नमः
४५ ॐ बरदाय धन-धान्य-प्रदाय नमः
४६ ॐ धेनु-रक्षा-धुरीणाय नमः
४७ ॐ धरणी-रक्षण-धुरीणाय नमः
४८ ॐ ओजस्तेजो-द्युति-धराय नमः

४९ ॐ मोहिनी-रूपाय नमः
५० ॐ समुद्र-मन्थनोद्भवाय नमः
५१ ॐ धर्म-धुरन्धराय नमः
५२ ॐ तुष्टाय पुष्टाय नमः
५३ ॐ वेद्याय वैद्याय नमः
५४ ॐ सोमपोऽमृतपः सोमाय नमः
५५ ॐ पुरुष -पुरुषोत्तमाय नमः
५६ ॐ वाचस्पतये नमः
५७ ॐ भेषजे भिषजे नमः
५८ ॐ महा-कृतवे नमः
५९ ॐ महा-यज्ञाय नमः
६० ॐ हविषे महा-हविषे नमः
६१ ॐ लोक-बन्धवे माधवाय नमः
६२ ॐ धनगुप्त-वरदाय भक्त-वत्सलाय नमः
६३ ॐ इन्द्र-कर्मणे नमः
६४ ॐ पावनाय नमः
६५ ॐ अमृताशाय नमः
६६ ॐ अमृत-वपुषे नमः
६७ ॐ सर्वतो सुखाय नमः
६८ ॐ न्यग्रोधौदुम्बराय नमः
६९ ॐ अश्वत्थाय नमः
७० ॐ अणवे नमः
७१ ॐ बृहते नमः
७२ ॐ धनुर्धराय नमः
७३ ॐ धनुर्वेदाय नमः
७४ ॐ प्रिय-कृते प्रीति-वर्धनाय नमः
७५ ॐ ज्योतिषे नमः
७६ ॐ सुखदाय नमः
७७ ॐ स्वस्तिने स्वस्ति-कृते नमः
७८ ॐ कुण्डलिने नमः
७९ ॐ चक्रिणे विक्रमिणे नमः
८० ॐ शब्द-सहाय नमः
८१ ॐ दुःस्वप्न-नाशनाय नमः
८२ ॐ आधार-निलयाय नमः
८३ ॐ प्राणाय प्राणदाय नमः
८४ ॐ प्राण-निलयाय नमः
८५ ॐ प्राण-धृते नमः
८६ ॐ प्राण-जीवनाय नमः
८७ ॐ तत्त्वाय तत्त्व-विदे नमः
८८ ॐ जन्ममृत्यु-जरागाय नमः
८९ ॐ यज्ञाय महेज्याय नमः
९० ॐ क्रतवे यज्ञ-वाहनाय नमः
९१ ॐ यज्ञ-भृते नमः
९२ ॐ यज्ञाय यज्ञाङ्गाय नमः
९३ ॐ ईज्याय यज्ञिने नमः
९४ ॐ यज्ञ-भुजे नमः
९५ ॐ यज्ञ-साधनाय नमः
९६ ॐ यज्ञान्न-कृते नमः
९७ ॐ यज्ञ-गुह्याय नमः
९८ ॐ साम-गानाय नमः
९९ ॐ पाप-नाशनाय नमः
१०० ॐ भरद्वाज-प्रियाय नमः
१०१ ॐ महोत्साहाय नमः
१०२ ॐ वर्धमानाय नमः
१०३ ॐ काशिराज-धन्वन्तरये नमः
१०४ ॐ दिवोदास-धन्वन्तरये नमः
१०५ ॐ श्री-धारामृत-हस्ताय नमः
१०६ ॐ धृतामृत-कलश -कराय नमः
१०७ ॐ लक्ष्मी-सहोदराय
१०८ ॐ आधि-व्याधि-विनाशिने नमः

श्रीहनुमान-चालीसा

कार्तिक-मास की **'शिव'-रात्रि** अथवा 'नरक'-चतुर्दशी **'श्रीहनुमान्-जयन्ती'** का पावन पर्व है। इस दिन सायं-काल **'धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष'**-रूपी चार बत्तियों का 'दीपक'— **'यम'-देवता** के लिए जलाया जाता है। इस दिन भक्त-गण **'श्रीहनुमान-चालीसा'** आदि **सिद्ध स्तुतियों का पाठ** भी करते हैं। यहाँ **'श्रीहनुमान-चालीसा'** का प्रामाणिक पाठ दिया जा रहा है। यदि कोई विशेष कामना हो, तो **'सङ्कल्प'**-पूर्वक **'श्रीहनुमान-चालीसा का सम्पुटित पाठ'** करना चाहिए। कामना की पूर्ति हेतु इस दिन से **४० दिन तक नित्य ११ बार 'सम्पुटित पाठ'** करना चाहिए। विविध कामनाओं हेतु **'श्रीहनुमान-चालीसा'** के साथ सम्पुटित की जानेवाली चौपाइयाँ इस प्रकार हैं—

१. कुमति के नाश और सुमति के लिए—

महावीर विक्रम बजरङ्गी। कुमति निवार सुमति के सङ्गी।

२. बल, विद्या, बुद्धि की प्राप्ति तथा मनो-विकार दूर करने के लिए—

बुद्धि-हीन तनु जानि के, सुमिरों पवन-कुमार।
बल-बुद्धि-विद्या देहु मोहि, हरहु क्लेश विकार।।

३. कठिन रोग से मुक्ति के लिए—

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
लाय सजीवन लखन जियाए। श्रीरघुवीर हरषि उर लाए।। अथवा
नासे रोग हरे सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत वीरा।।

४. सङ्कट, बाधा से मुक्ति के लिए—

सङ्कट ते हनुमान छुड़ावे। मन क्रम बचन ध्यान जो लावे।। अथवा
सङ्कट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

५. अभिलषित कार्य की सिद्धि के लिए—

सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन-फल पावै।।

६. भूत, प्रेत-बाधा दूर करने के लिए—

भूत-पिसाच निकट नहीं आवे। महा-वीर जब नाम सुनावे।।

७. कठिन कार्य की सिद्धि के लिए—

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

कार्य अथवा उद्देश्य के अनुसार उक्त अभीष्ट चौपाइयों के साथ **'श्रीहनुमान-चालीसा'** का **'सम्पुट-पाठ'** करने से सफलता शीघ्र मिलती है। **'श्रीहनुमान - चालीसा'** का पाठ इस प्रकार करे—

।। श्रीहनुमते नमः ।।

श्रीहनुमान-चालीसा

।।दोहा।।

श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरणौं रघुवर बिमल यस, जो दायक फल चारि।।
बुद्धि-हीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन - कुमार।
बल-बुधि - विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम-दूत अतुलित बल-धामा। अञ्जनि-पुत्र पवन - सुत नामा।।
महा - बीर बिक्रम बजरङ्गी। कुमति निवार सुमति के सङ्गी।।
कञ्चन- बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुञ्चित केशा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ छाजै।।
सङ्कर-सुवन केसरी - नन्दन। तेज प्रताप महा जग - बन्दन।।
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम - काज करिबे को आतुर।।
प्रभु-चरित्र सुनिबे को रसिया। राम - लषन-सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म-रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट- रूप धरि लङ्क जरावा।।
भीम-रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लषन जियाए। श्रीरघुबीर हरषि उर लाए।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद - सहित अहीसा।।
यम कुबेर दिग-पाल जहाँ ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज - पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लङ्केश्वर भए सब जग जाना।।
युग सहस्त्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे।। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत-पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
सङ्कट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन-फल पावै।।
चारों युग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु-सन्त के तुम रखवारे। असुर-निकन्दन राम-दुलारे।।
अष्ट-सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन्ह जानकी माता।।
राम - रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को भावै। जन्म-जन्म के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
सङ्कट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बल-बीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
यह सत बार पाठ कर जोई। छूटइ बन्दि महा-सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान-चालीसा। होय सिद्धि, साखी गौरीसा।।
'तुलसीदास' सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

पवन- तनय सङ्कट हरन, मङ्गल-मूरति रूप।
राम-लषन-सीता-सहित, हृदय बसहु सुर-भूप।।

★★★

श्रीबजरङ्ग-बाण

पहले हाथ जोड़कर **श्रीमहा-वीर हनुमान् जी** को निम्न वन्दना से सभक्ति प्रणाम करें—

अतुलित-बल-धामं, स्वर्ण-शैलाभ-देहम्। दनुज-वन-कृशानुं, ज्ञानिनामग्र-गण्यम्॥
सकल-गुण-निधानं, वानराणामधीशम्। रघुपति-प्रिय-भक्तं, वात - जातं नमामि॥

प्रणाम करने के बाद **श्रीहनुमान् जी** का मानसिक पूजन या मूर्ति, चित्रादि का बाह्य पूजन कर '**श्रीबजरङ्ग-बाण**' का पाठ करें। यथा—

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम-प्रतीति ते, विनय करै सह मान। तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त! सन्त-हितकारी। सुन लीजे प्रभु! विनय हमारी॥ १
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा-सुख दीजै॥२
जैसे कूदि सिन्धु के पारा। सुरसा - वदन पैठि विस्तारा ॥३
आगे जाय लङ्किनी रोका। मारेहु लात—गई सुर-लोका ॥४
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा॥५
बाग उजारि सिन्धु मँह बोरा। अति आतुर यम कातर तोरा॥६
अखय-कुमार मारि संहारा। लूम लपेट लङ्क को जारा॥७
लाह समान लङ्क जरि गई। जै-जै ध्वनि सुर-पुर नभ भई॥८
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी? कृपा करहु प्रभु! अन्तर्यामी!॥९
जय-जय लखन-प्राण के दाता! आतुर ह्वै दुख करहु निपाता ॥१०
जै गिर-धर ! जै-जै सुख-सागर। सुर-समूह समरथ भट-नागर!॥११
ॐ हनु-हनु-हनु हनुमन्त हठीले! बैरिही मारु बज्र-सम मीले॥१२
गदा-बज्र लै बैरिहि मारौ। महा-राज! निज दास उबारौ॥१३
ॐकार हुङ्कार करि धावौ। वज्र-गदा हनु! विलम्ब न लावौ॥१४
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा! ॐ हुँ हुँ हुँ हनु! अरि-उर सीसा॥१५
सत्य होहु हरि सपथ पाय कै। राम-दूत! धरु मारु धाय कै॥१६
जै हनुमन्त! अनन्त अगाधा! दुख पावत जन केहि अपराधा॥१७
पूजा-जप-तप-नेम-अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥१८
वन-उपवन-जल-थल-गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥१९
पाँव परौं कर जोरि मनावौं। अपने काज लागि गुण गावौं॥२०
जै अञ्जनी-कुमार! बल-वन्ता! शङ्कर-सुवन वीर हनुमन्ता!॥२१
वदन कराल! काल-कुल-घातक! राम-सहाय! सदा प्रति-पालक!॥२२
भूत-प्रेत-पिशाच-निशाचर। अगिन-बेताल-काल-मारी -मर॥२३

इन्हें मारु, तोहिं शपथ राम की। राखु नाथ! मर्याद नाम की॥२४
जनक-सुता-हरि-दास कहावौ। ताकी सपथ विलम्ब न लावौ॥२५
जै-जै-जै ध्वनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुख नाशा॥२६
चरण-शरण कर जोरि मनावौं। एहि अवसर अब केहि गोहरावौं?॥२७
उठ-उठ चल तोहि राम-दुहाई। पाँय परौं कर जोरि मनाई॥२८
ॐ चं-चं-चं-चं चपल चलन्ता। ॐ हनु-हनु-हनु-हनु-हनु हनुमन्ता॥२९
ॐ हं-हं हाँक देत कपि चञ्चल। ॐ सं-सं सहमि पराने खल-दल॥३०
अपने जन कौं तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनन्द हमारौ॥३१
ताते विनती करौं पुकारी। हरहु सकल दुःख विपति हमारी॥३२
ऐसौ बल-प्रभाव प्रभु! तोरा। कस न हरहु दुःख-सङ्कट मोरा?॥३३
हे बजरङ्ग! बाण-सम धावौ। मेटि सकल दुःख दरस दिखावौ॥३४
हे कपि-राज! काज कब ऐहौ? अवसर चूकि अन्त पछतैहौ॥३५
जन की लाज जात एहि बारा। धावहु हे कपि! पवन-कुमारा! ॥३६
जयति-जयति जै-जै हनुमाना! जयति-जयति गुण-ज्ञान-निधाना!॥३७
जयति-जयति जै-जै कपि-राई! जयति-जयति जै-जै सुख-दाई॥३८
जयति-जयति,जै राम-पियारे! जयति-जयति जै, सिया-दुलारे॥३९
जयति-जयति मुद-मङ्गल-दाता!जयति-जयति त्रिभुवन-विख्याता!॥४०
एहि प्रकार गावत गुण शेषा। पावत पार नहीं लव-लेसा॥४१
राम - रूप सर्वत्र समाना। देखत रहत सदा हर्षाना॥४२
विधि-सारदा-सहित दिन-राती। गावत कपि के गुन बहु भाँती॥४३
तुम सम नहीं जगत बलवाना। करि विचार देखउँ विधि नाना॥४४
यह जिय जानि शरण तव आई। ताते विनय करौं चित लाई॥४५
सुनि कपि! आरत-वचन हमारे। मेटहु सकल दुःख - भ्रम भारे॥४६
एहि प्रकार विनती कपि केरी। जो जन करै, लहै सुख-ढेरी॥४७
याके पढ़त वीर हनुमाना। धावत बाण - तुल्य बलवाना॥४८
मेटत आय दुःख छिन माहीं। दै दर्शन रघुपति ढिंग जाहीं॥४९
पाठ करे 'बजरङ्ग-बाण' की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की॥५०
डीठ-मूठ-टोनादिक नासै। पर-कृत यन्त्र - मन्त्र नहिं त्रासै॥५१
भैरवादि सुर करैं मिताई। आयसु मानि करैं सेवकाई॥५२
प्रण करि पाठ करै मन लाई। अल्प-मृत्यु ग्रह-दोष नशाई॥५३
आवृत ग्यारह प्रति-दिन जापै। ताकी छाँह काल नहिं व्यापै॥५४
दै गूगुल की धूप हमेशा। करै पाठ तन मिटै कलेशा॥५५
यह 'बजरङ्ग-बाण' जेहि मारै। ताहि कहौ, फिर कौन उबारै?॥५६
शत्रु-समूह मिटै सब आपै। देखत ताहि सुरासुर काँपै॥५७
तेज प्रताप - बुद्धि अधिकाई। रहै सदा कपि-राज सहाई॥५८

॥दोहा॥

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान। तेहि के कारज तुरत ही, सिद्ध करैं हनुमान॥

श्रीहनुमदष्टोत्तर-शत-नामावली

१ ॐ आञ्जनेयाय नमः।
२ ॐ महा-वीराय नमः।
३ ॐ हनुमते नमः।
४ ॐ मारुतात्मजाय नमः।
५ ॐ तत्त्व-ज्ञान-प्रदाय नमः।
६ ॐ सीता-देवी-मुद्रा-प्रदायकाय नमः।
७ ॐ अशोक-वनिका-छेत्रे नमः।
८ ॐ सर्व-माया-विभञ्जनाय नमः।
९ ॐ सर्व-बन्ध-विमोक्त्रे नमः।
१० ॐ रक्षो-विध्वंस-कारकाय नमः।
११ ॐ पर-विद्या-परीहाराय नमः।
१२ ॐ पर-शौर्य-विनाशनाय नमः।
१३ ॐ पर-मन्त्र-निराकर्त्रे नमः।
१४ ॐ पर-यन्त्र-प्रभेदकाय नमः।
१५ ॐ सर्व-ग्रह-विनाशाय नमः।
१६ ॐ भीमसेन-सहाय-कृते नमः।
१७ ॐ सर्व-दुःख-हराय नमः।
१८ ॐ सर्व-लोक-चारिणे नमः।
१९ ॐ मनोजवाय नमः।
२० ॐ पारिजात-द्रुम-मूलस्थाय नमः।
२१ ॐ सर्व-मन्त्र-स्वरूपवते नमः।
२२ ॐ सर्व-तन्त्र-स्वरूपाय नमः।
२३ ॐ सर्व-यन्त्रात्मकाय नमः।
२४ ॐ शिवाय नमः।
२५ ॐ कपीश्वराय नमः।
२६ ॐ महा-काव्याय नमः।
२७ ॐ सर्व-रोग-हराय नमः।
२८ ॐ प्रभवे नमः।
२९ ॐ कपि-सेना-नायकाय नमः।
३० ॐ भविष्य-चतुराननाय नमः।
३१ ॐ कुमार-ब्रह्मचारिणे नमः।
३२ ॐ रत्न-कुण्डल-दीप्ति-मते नमः।
३३ ॐ सञ्चलद्-बाल-सन्नद्ध- लम्बमान-शिखोज्ज्वलाय नमः।
३४ ॐ गन्धर्व-विद्या-तत्त्वज्ञाय नमः।
३५ ॐ महा-बल-पराक्रमाय नमः।
३६ ॐ कारागृह-विमोक्त्रे नमः।
३७ ॐ शृङ्खला-बन्ध-मोचकाय नमः।
३८ ॐ सागरोत्तारकाय नमः।
३९ ॐ प्राज्ञाय नमः।
४० ॐ राम-दूताय नमः।
४१ ॐ प्रताप-वते नमः।
४२ ॐ वानराय नमः।
४३ ॐ केसरी-सूनवे नमः।
४४ ॐ सीता-शोक-निवारकाय नमः।
४५ ॐ अञ्जना-गर्भ-सम्भूताय नमः।
४६ ॐ बालार्क-सदृशाननाय नमः।
४७ ॐ विभीषण-प्रियंकर्त्रे नमः।
४८ ॐ दश-ग्रीव-कुलान्तकाय नमः।
४९ ॐ लक्ष्मण-प्राण-दात्रे नमः।
५० ॐ बज्र-कायाय नमः।
५१ ॐ महा-द्युतये नमः।

५२ ॐ चिरञ्जीविने नमः।
५३ ॐ राम-भक्ताय नमः।
५४ ॐ दैत्य-कार्य-विघातकाय नमः।
५५ ॐ अक्ष-हन्त्रे नमः।
५६ ॐ काञ्चनाभाय नमः।
५७ ॐ पञ्च-वक्त्राय नमः।
५८ ॐ महा-तपसे नमः।
५९ ॐ लङ्किनी - भञ्जकाय नमः।
६० ॐ श्रीमते नमः।
६१ ॐ सिंहिका-प्राण-भञ्जनाय नमः।
६२ ॐ गन्ध-मादन-शैलस्थाय नमः।
६३ ॐ लङ्का-पुर-विनाशकाय नमः।
६४ ॐ सुकण्ठ-सचिवाय नमः।
६५ ॐ धीराय नमः।
६६ ॐ शूराय नमः।
६७ ॐ दैत्य-कुलान्तकाय नमः।
६८ ॐ सुरार्चिताय नमः।
६९ ॐ महा-तेजसे नमः।
७० ॐ राम-चूडामणि-प्रदाय नमः।
७१ ॐ काम-रूपिणे नमः।
७२ ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः।
७३ ॐ वार्धि-मैनाक-पूजिताय नमः।
७४ ॐ कवलीकृत-मार्तण्ड-मण्डलाय नमः।
७५ ॐ विजितेन्द्रियाय नमः।
७६ ॐ राम-सुग्रीव-सन्धात्रे नमः।
७७ ॐ महीरावण-मर्दनाय नमः।
७८ ॐ स्फटिकाभाय नमः।
७९ ॐ वागधीशाय नमः।
८० ॐ नव-व्याकृति-पण्डिताय नमः।
८१ ॐ चतुर्बाहवे नमः।
८२ ॐ दीन-बन्धवे नमः।
८३ ॐ महात्मने नमः।
८४ ॐ भक्त-वत्सलाय नमः।
८५ ॐ सञ्जीवन - शैल-हर्त्रे नमः।
८६ ॐ शुचये नमः।
८७ ॐ वाग्मिने नमः।
८८ ॐ दृढ-व्रताय नमः।
८९ ॐ कालनेमि-प्रमथनाय नमः।
९० ॐ हरि-मर्कट-मर्कटाय नमः।
९१ ॐ दान्ताय नमः।
९२ ॐ शान्ताय नमः।
९३ ॐ प्रसन्नात्मने नमः।
९४ ॐ दश-कण्ठ-मदापहर्त्रे नमः।
९५ ॐ योगिने नमः।
९६ ॐ राम-कथा-लोलाय नमः।
९७ ॐ सीतान्वेषण-पण्डिताय नमः।
९८ ॐ वज्र-दंष्ट्राय नमः।
९९ ॐ वज्र-नखाय नमः।
१०० ॐ रुद्र-वीर्य-समुद्भवाय नमः।
१०१ ॐ इन्द्रजित्-प्रहितामोघ-ब्रह्मास्त्र-
विनिवारकाय नमः।
१०२ ॐ पार्थ-ध्वजाग्र-संवासिने नमः।
१०३ ॐ शर-पञ्जर-भेदकाय नमः।
१०४ ॐ दश-बाहवे नमः।
१०५ ॐ लोक-पूज्याय नमः।
१०६ ॐ जाम्बवत्-प्रीति-वर्धनाय नमः।
१०७ ॐ शाकिनी-डाकिनी-यक्ष-
रक्षो-भूत-प्रभञ्जकाय नमः।
१०८ ॐ सीता-समेत-श्रीराम-पाद-
सेवा-धुरन्धराय नमः।

लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु

गणेश भगवान् की सरल सिद्धि-साधना

माँ विन्ध्य-वासिनी के मन्दिर, **विन्ध्याचल, मिर्जापुर (उ० प्र०)** में १४ जनवरी, १९७४ को एक महात्मा सँन्यासी ने '**भोज-पत्र**' पर निम्न-लिखित मन्त्र लिखकर दिया था। महात्मा सँन्यासी ने कहा था कि—"**गणेश भगवान्** की छोटी-सी प्रतिमा अपने सामने रखकर ध्यान / पूजन कर '**गणेश-चतुर्थी**' अथवा '**दीपावली**' से निम्न-लिखित स्तोत्र-मन्त्र का एक बार पाठ नित्य भावार्थ समझते हुए करें। इससे **जीविका का साधन, लक्ष्मी** तथा **सुख-शान्ति** की प्राप्ति होती है। '**दीपावली**' से प्रारम्भ करें, तो '**दीपावली**'-**पूजन** सम्पन्न कर **भ० गणेश-लक्ष्मी की नवीन मूर्ति** के सामने '**पाठ**' करें। फिर नित्य करें।"

● **पं. कृपाशङ्कर दुबे, कानपुर (उ. प्र.)**

॥ मूल स्तोत्र-पाठ ॥

ॐ नमो विघ्न-राजाय, सर्व-सौख्य-प्रदायिने!
दुष्टारिष्ट-विनाशाय, पराय परमात्मने!॥१॥
लम्बोदरं महा-वीर्यं, नाग-यज्ञोप-शोभितम्।
अर्ध-चन्द्र-धरं देवं, विघ्न-व्यूह-विनाशनम्॥२॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः श्रीहेरम्बाय नमो नमः।
सर्व-सिद्धि-प्रदोऽसि त्वं, सिद्ध-बुद्धि-प्रदो भव।
चिन्तितार्थ-प्रद्-सत्वं हि, सततं मोदक-प्रियः।
सिन्दूरारुण-वस्त्रश्च, पूजितो वर-दायकः॥३॥

॥ फल-श्रुति ॥

इदं गणपति-स्तोत्रं, यः पठेद् भक्तिमान् नरः।
तस्य देहं च गेहं, स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति॥१॥

अर्थात् **सर्व सुख प्रदान करनेवाले, दुष्ट अरिष्ट ग्रहों का नाश करनेवाले, लम्बोदर, महा पराक्रमी, नाग-यज्ञोपवीत से सु-शोभित, अर्ध-चन्द्र-धारी, विघ्न-समूह का विनाश करनेवाले, परात्पर परमात्मा-स्वरूप विघ्न-राज गणेश** को नमस्कार है। **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः श्री हेरम्ब** को नमस्कार है। आप सर्व-सिद्धियों के देनेवाले हो, हमारे लिए **सिद्ध-बुद्धि-प्रदाता** होओ। आप मन के द्वारा चिन्तित अर्थ (धन) को देनेवाले हो, आपको मोदक (लड्डू) सदा प्रिय है। सिन्दूर और लाल वस्त्र से पूजित होकर आप सदा वर प्रदान करते हो।

'**फल-श्रुति**'—जो मनुष्य भक्ति से युक्त होकर उक्त **गणपति स्तोत्र** का पाठ करता है, स्वयं **भगवती लक्ष्मी** उसके शरीर तथा घर को नहीं छोड़ती। ●●●

श्रीगणेश अष्टोत्तर-शत-नामावली

** 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील, श्रीदेवी-संस्थान, १८ / १३, गोंधले नगर, पुणे*

ॐ विघ्नेशाय नमः।
ॐ विश्व-वरदाय नमः।
ॐ विश्व-चक्षुषे नमः।
ॐ जगत्-प्रभवे नमः।
ॐ हिरण्य-रूपाय नमः।
ॐ सर्वात्मने नमः।
ॐ ज्ञान-रूपाय नमः।
ॐ जगन्मयाय नमः।
ॐ ऊर्ध्व-रेतसे नमः।
ॐ महा-बाहवे नमः॥१०॥
ॐ अमेयाय नमः।
ॐ अमित-विक्रमाय नमः।
ॐ वेद-वेद्याय नमः।
ॐ महा-कालाय नमः।
ॐ विद्या-निधये नमः।
ॐ अनामयाय नमः।
ॐ सर्वज्ञाय नमः।
ॐ सर्वगाय नमः।
ॐ शान्ताय नमः।
ॐ गजास्याय नमः॥२०॥
ॐ चित्तेश्वराय नमः।
ॐ विगत-ज्वराय नमः।
ॐ विश्व-मूर्तये नमः।
ॐ अमेयात्मने नमः।
ॐ विश्वाधाराय नमः।
ॐ सनातनाय नमः।

ॐ साम-गायाय नमः
ॐ प्रियाय नमः।
ॐ मन्त्रिणे नमः।
ॐ सत्त्वाधाराय नमः॥३०॥
ॐ सुराधीशाय नमः।
ॐ समस्त-साक्षिणे नमः।
ॐ निर्द्वन्द्वाय नमः।
ॐ निर्लोकाय नमः।
ॐ अमोघ-विक्रमाय नमः।
ॐ निर्मलाय नमः।
ॐ पुण्याय नमः।
ॐ कामदाय नमः।
ॐ कान्तिदाय नमः।
ॐ काम-रूपिणे नमः॥४०॥
ॐ काम-पोषणे नमः।
ॐ कमलाक्षाय नमः।
ॐ गजाननाय नमः।
ॐ सुमुखाय नमः।
ॐ शर्मदाय नमः।
ॐ मूषकाधिप-वाहनाय नमः।
ॐ शुद्धाय नमः।
ॐ दीर्घ-तुण्डाय नमः।
ॐ श्रीपतये नमः।
ॐ अनन्ताय नमः॥५०॥
ॐ मोह-वर्जिताय नमः।
ॐ वक्र-तुण्डाय नमः।

ॐ शूर्प-कर्णाय नमः।
ॐ परमाय नमः।
ॐ योगीशाय नमः।
ॐ योग-धाम्ने नमः।
ॐ उमा-सुताय नमः।
ॐ आपद्धन्त्रे नमः।
ॐ एक-दन्ताय नमः।
ॐ महा-ग्रीवाय नमः।।६०।।
ॐ शरण्याय नमः।
ॐ सिद्ध-सेनाय नमः।
ॐ करुणाय नमः।
ॐ सिद्धाय नमः।
ॐ भगवते नमः।
ॐ अव्यग्राय नमः।
ॐ विकटाय नमः।
ॐ कपिलाय नमः।
ॐ ढुण्ढि-राजाय नमः।।७०।।
ॐ उग्राय नमः।
ॐ भीमोदराय नमः।
ॐ शुभाय नमः।
ॐ गणाध्यक्षाय नमः।
ॐ गणेशाय नमः।
ॐ गणाराध्याय नमः।
ॐ गण-नायकाय नमः।
ॐ ज्योतिः-स्वरूपाय नमः।
ॐ भूतात्मने नमः।
ॐ धूम्र-केतवे नमः।।८०।।
ॐ अनुकूलाय नमः।
ॐ कुमार-गुरवे नमः।

ॐ आनन्दाय नमः।
ॐ हेरम्बाय नमः।
ॐ वेद-स्तुताय नमः।
ॐ नाग-यज्ञोपवीतिने नमः।
ॐ दुर्धर्षाय नमः।
ॐ बाल-दूर्वांकुर-प्रियाय नमः।
ॐ भाल-चन्द्राय नमः।
ॐ विश्व-धात्रे नमः।।६०।।
ॐ शिव-पुत्राय नमः।
ॐ विनायकाय नमः।
ॐ लीला-सेविताय नमः।
ॐ पूर्णाय नमः।
ॐ परम-सुन्दराय नमः।
ॐ विघ्नान्धकाराय नमः।
ॐ सिन्दूर-वरदाय नमः।
ॐ नित्याय नमः।
ॐ विभवे नमः।
ॐ प्रथम-पूजिताय नमः।।१००।।
ॐ दिव्य-पादाब्जाय नमः।
ॐ भक्त-मन्दराय नमः।
ॐ महा - शूराय नमः
ॐ रत्न-सिंहासनाय नमः।
ॐ मणि-कुण्डल-मण्डिताय नमः।
ॐ भक्त-कल्याणाय नमः।
ॐ अमेयाय नमः।
ॐ कल्याण-गुरवे नमः।।१०८।।
ॐ सहस्र-शीर्ष्णे नमः।
ॐ महा-गणपतये नमः।।११०।।

★ ★ ★

'नामावली' - जप के बाद **'दुर्वांकुरान् समर्पयामि'** दूब के अंकुर समर्पित कर **'आरती'** करें।

श्रीमहा-गण-पति सहस्र-नाम-जप-प्रयोग

सङ्कल्प— ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः, तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त-देशे, पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक (.....) सम्वत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो), अहं श्रीमहा-देव-प्रीत्यर्थं सहस्र-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीमहा-गण-पति-सहस्र-नामावलि-महा-मन्त्रस्य श्रीगणेश ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीमहा-गण-पतिः देवता। गं वीजं। हुं शक्तिः। स्वाहा कीलकं। श्रीमहा-गण-पति-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीगणेश-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा-गण-पति-देवतायै नमः हृदि। गं-वीजाय नमः गुह्ये। हुं शक्तये नमः नाभौ। स्वाहा-कीलकाय नमः पादयो। श्रीमहा-गण-पति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास— गां अंगुष्ठाभ्यां नमः। गीं तर्जनीभ्यां नमः। गूं मध्यमाभ्यां नमः। गैं अनामिकाभ्यां नमः। गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। गः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्ग-विन्यास— गां हृदयाय नमः। गीं शिरसे स्वाहा। गूं शिखायै वषट्। गैं कवचाय हुं। गौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। गः अस्त्राय फट्।

दिग्-बन्धन— 'भूर्भुवः स्वः ॐ' से।

ध्यान—

पञ्च-वक्त्रो दश-भुजो, ललाटेन्दुः शशि-प्रभः।
मुण्ड-मालः सर्प-भूषो, मुकुटाङ्गद-भूषणः॥
अग्न्यर्क-शशिनो भाभिः, तिरस्कुर्वन् दशायुधः।
सर्व-विघ्न-हरो देवः, तं ध्यायामि दिवा-निशम्॥

अर्थात् पाँच मुख, दश भुजाओं, मस्तक पर चन्द्र, चन्द्रमा जैसी आभावाले, मुण्ड-माला-धारी, सर्पों से विभूषित, मुकुट एवं अङ्गद से सुशोभित, अग्नि-सूर्य-चन्द्र-जैसी ज्योतिवाले, दशायुध का तिरस्कार करनेवाले, सर्व-विघ्न-हारी श्री महा-गण-पति भगवान् का मैं अहर्निश ध्यान करता हूँ।

मानस-पूजन— लं पृथिव्यात्मने श्रीमहा-गण-पतये गन्धं लेपयामि। हं आकाशात्मने श्रीमहा-गण-पतये पुष्पाणि समर्पयामि। यं वाय्वात्मने श्रीमहा-गण-पतये धूपं घ्रापयामि। रं अग्न्यात्मने श्रीमहा-गण-पतये दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने श्रीमहा-गण-पतये नैवेद्यं निवेदयामि।

श्रीमहा-गण-पति-सहस्र-नामावलिः

ॐ गणेश्वराय नमः
ॐ गण-क्रीडाय नमः
ॐ गण-नाथाय नमः
ॐ गणाधिपाय नमः
ॐ एक-दंष्ट्राय नमः
ॐ वक्र-तुण्डाय नमः
ॐ गज-वक्त्राय नमः
ॐ महोदराय नमः
ॐ लम्बोदराय नमः
ॐ धूम्र-वर्णाय नमः ॥ १० ॥
ॐ विकटाय नमः
ॐ विघ्न-नायकाय नमः
ॐ सु-मुखाय नमः
ॐ दुर्मुखाय नमः
ॐ बुद्धाय नमः
ॐ विघ्न-राजाय नमः
ॐ गजाननाय नमः
ॐ भीमाय नमः
ॐ प्रमोदाय नमः
ॐ आमोदाय नमः ॥ २० ॥
ॐ सुरानन्दाय नमः
ॐ मदोत्कटाय नमः
ॐ हेरम्बाय नमः
ॐ शम्बराय नमः
ॐ शम्भवे नमः
ॐ लम्ब-कर्णाय नमः
ॐ महा-बलाय नमः

ॐ नन्दनाय नमः
ॐ अ-लम्पटाय नमः
ॐ अ-भीरवे नमः ॥ ३० ॥
ॐ मेघ-नादाय नमः
ॐ गणञ्जयाय नमः
ॐ विनायकाय नमः
ॐ विरूपाक्षाय नमः
ॐ धीर-शूराय नमः
ॐ वर-प्रदाय नमः
ॐ महा-गणपतये नमः
ॐ बुद्धि-प्रियाय नमः
ॐ क्षिप्र-प्रसादनाय नमः
ॐ रुद्र-प्रियाय नमः ॥ ४० ॥
ॐ गणाध्यक्षाय नमः
ॐ उमा-पुत्राय नमः
ॐ अघ-नाशनाय नमः
ॐ कुमार-गुरवे नमः
ॐ ईशान-पुत्राय नमः
ॐ मूषक-वाहनाय नमः
ॐ सिद्धि-प्रियाय नमः
ॐ सिद्धि-पतये नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ सिद्धि-विनायकाय नमः
ॐ अ-विघ्नाय नमः
ॐ तुम्बुरवे नमः
ॐ सिंह-वाहनाय नमः
ॐ मोहिनी-प्रियाय नमः

ॐ कटङ्कटाय नमः
ॐ राज-पुत्राय नमः
ॐ शालकाय नमः
ॐ सम्मिताय नमः
ॐ अमिताय नमः
ॐ कूष्माण्ड-साम-सम्भूतये नमः
ॐ दुर्जयाय नमः
ॐ धूर्जयाय नमः
ॐ जयाय नमः
ॐ भू-पतये नमः
ॐ भुवन-पतये नमः
ॐ भूतानां पतये नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ विश्व-कर्त्रे नमः
ॐ विश्व-मुखाय नमः
ॐ विश्व-रूपाय नमः ॥ ७० ॥
ॐ निधये नमः
ॐ घृणये नमः
ॐ कवये नमः
ॐ कवीनामृषभाय नमः
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ ब्रह्मणस्पतये नमः
ॐ ज्येष्ठ-राजाय नमः
ॐ निधि-पतये नमः
ॐ निधि-प्रिय-पति-प्रियाय नमः
ॐ हिरण्मय-पुरान्तः-स्थाय नमः
ॐ सूर्य-मण्डल-मध्यगाय नमः

ॐ कराहति-ध्वस्त-सिन्धु-
सलिलाय नमः
ॐ पूष-दन्त-भिदे नमः
ॐ उमाङ्क-केलि-कुतुकिने नमः
ॐ मुक्तिदाय नमः
ॐ कुल-पालनाय नमः
ॐ किरीटिने नमः
ॐ कुण्डलिने नमः
ॐ हारिणे नमः
ॐ वन-मालिने नमः ॥ ९० ॥
ॐ मनो-मयाय नमः
ॐ वैमुख्य-हत-दैत्य-श्रिये नमः
ॐ पादाहति-जित-क्षितये नमः
ॐ सद्योजात-स्वर्ण-
मुञ्ज-मेखलिने नमः
ॐ दुर्निमित्त-हृते नमः
ॐ दुस्स्वप्न-हृते नमः
ॐ प्र-सहनाय नमः
ॐ गुणिने नमः
ॐ नाद-प्रतिष्ठिताय नमः
ॐ सु-रूपाय नमः ॥ १०० ॥
ॐ सर्व-नेत्राधि-वासाय
नमः
ॐ वीरासनाश्रयाय नमः
ॐ पीताम्बराय नमः
ॐ खण्ड-रदाय नमः
ॐ खण्डेन्दु-कृत-शेखराय नमः
ॐ चित्राङ्क-श्याम-
दशनाय नमः
ॐ भाल-चन्द्राय नमः

ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ योगाधिपाय नमः
ॐ तारकस्थाय नमः ॥ ११० ॥
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ गज-कर्णकाय नमः
ॐ गणाधि-राजाय नमः
ॐ विजय-स्थिराय नमः
ॐ गज-पति-ध्वजिने नमः
ॐ देव-देवाय नमः
ॐ स्मर-प्राण-दीपकाय नमः
ॐ वायु-कीलकाय नमः
ॐ विपश्चिद्-वरदाय नमः
ॐ नादोन्नाद-भिन्न-
बलाहकाय नमः ॥ १२० ॥
ॐ वराह-रदनाय नमः
ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
ॐ व्याघ्राजिनाम्बराय नमः
ॐ इच्छा-शक्ति-धराय नमः
ॐ देव-त्रात्रे नमः
ॐ दैत्य-विमर्दनाय नमः
ॐ शम्भु-वक्त्रोद्भवाय नमः
ॐ शम्भु-कोपघ्ने नमः
ॐ शम्भु-हास्य-भुवे नमः
ॐ शम्भु-तेजसे नमः ॥ १३० ॥
ॐ शिवा-शोक-हारिणे नमः
ॐ गौरी-सुखावहाय नमः
ॐ उमाङ्ग-मलजाय नमः
ॐ गौरी-तेजो-भुवे नमः
ॐ स्वर्धुनी-भवाय नमः
ॐ यज्ञ-कायाय नमः

ॐ महा-नादाय नमः
ॐ गिरि-वर्ष्मणे नमः
ॐ शुभाननाय नमः
ॐ सर्वात्मने नमः ॥ १४० ॥
ॐ सर्व-देवात्मने नमः
ॐ ब्रह्म-मूर्ध्ने नमः
ॐ ककुप्-छुतये नमः
ॐ ब्रह्माण्ड-कुम्भाय नमः
ॐ चिद्-व्योम-भालाय नमः
ॐ सत्य-शिरोरुहाय नमः
ॐ जगज्जन्म-लयोन्मेष-
निमेषाय नमः
ॐ अग्नयर्क-सोम-दृशे नमः
ॐ गिरीन्द्रैक-रदाय नमः
ॐ धर्माधर्मोष्ठाय नमः
ॐ साम-बृंहिताय नमः
ॐ ग्रहर्क्ष-दशनाय नमः
ॐ वाणी-जिह्वाय नमः
ॐ वासव-नासिकाय नमः
ॐ कुलाचलांसाय नमः
ॐ सोमार्क-घण्टाय नमः
ॐ रुद्र-शिरो-धराय नमः
ॐ नदी-नद-भुजाय नमः
ॐ सर्पांगुलीकाय नमः
ॐ तारका-नखाय नमः ॥ १६० ॥
ॐ भ्रू-मध्य-संस्थित-कराय नमः
ॐ ब्रह्म-विद्या-मदोत्कटाय नमः
ॐ व्योम-नाभये नमः
ॐ श्री-हृदयाय नमः
ॐ मेरु-पृष्ठाय नमः

ॐ अर्णवोदराय नमः
ॐ कुक्षिस्थ-यक्ष-गन्धर्व-रक्षः-
किन्नर-मानुषाय नमः
ॐ पृथ्वी-कटये नमः
ॐ सृष्टि-लिङ्गाय नमः
ॐ शैलोरवे नमः ॥ १७० ॥
ॐ दस्र-जानुकाय नमः
ॐ पाताल-जङ्घाय नमः
ॐ मुनि-पदे नमः
ॐ कालाङ्गुष्ठाय नमः
ॐ त्रयी-तनवे नमः
ॐ ज्योतिर्मण्डल-
लाङ्गूलाय नमः
ॐ हृदयालान-निश्चलाय नमः
ॐ हृत्-पद्म-कर्णिका-शालि-
वियत्-केलि-सरोवराय नमः
ॐ सद्-भक्त-ध्यान-निगडाय
नमः
ॐ पूजा-वारी-निवारिताय
नमः ॥ १८० ॥
ॐ प्र-तापिने नमः
ॐ कश्यप-सुताय नमः
ॐ गणपाय नमः
ॐ विष्टपिने नमः
ॐ बलिने नमः
ॐ यशस्विने नमः
ॐ धार्मिकाय नमः
ॐ स्वोजसे नमः
ॐ प्रथमाय नमः
ॐ प्रथमेश्वराय नमः ॥ १९० ॥

ॐ चिन्ता-मणि-द्वीप-
पतये नमः
ॐ कल्प-द्रुम-वनालयाय नमः
ॐ रत्न-मण्डप-मध्यस्थाय नमः
ॐ रत्न-सिंहासनाश्रयाय नमः
ॐ तीव्रा-शिरो-धृत-
पदाय नमः
ॐ ज्वालिनी-मौलि-
लालिताय नमः
ॐ नन्दा-नन्दित-पीठ-
श्रिये नमः
ॐ भोगदा-भूषितासनाय नमः
ॐ स-काम-दायिनी-पीठाय
नमः
ॐ स्फुरदुग्रासनाश्रयाय नमः
ॐ तेजो-वती-शिरो-
रत्नाय नमः
ॐ सत्या-नित्याऽवतंसिताय
नमः
ॐ स-विघ्न-नाशिनी-पीठाय
नमः
ॐ सर्व-शक्त्यम्बुजाश्रयाय नमः
ॐ लिपि-पद्मासनाधाराय नमः
ॐ वह्नि-धाम-त्रयाश्रयाय नमः
ॐ उन्नत-प्रपदाय नमः
ॐ गूढ-गुल्फाय नमः
ॐ संवृत्त-पार्ष्णिकाय नमः
ॐ पीन-जङ्घाय नमः ॥ २१० ॥
ॐ श्लिष्ट-जानवे नमः
ॐ स्थूलोरवे नमः

ॐ प्रोन्नमत्-कटये नमः
ॐ निम्न-नाभये नमः
ॐ स्थूल-कुक्षये नमः
ॐ पीन-वक्षसे नमः
ॐ बृहद्-भुजाय नमः
ॐ पीन-स्कन्धाय नमः
ॐ कम्बु-कण्ठाय नमः
ॐ लम्बोष्ठाय नमः ॥ २२० ॥
ॐ लम्ब-नासिकाय नमः
ॐ भग्न-वाम-रदाय नमः
ॐ तुङ्गाय सव्य-दन्ताय नमः
ॐ महा-हनवे नमः
ॐ ह्रस्व-नेत्र-त्रयाय नमः
ॐ शूर्प-कर्णाय नमः
ॐ निबिड-मस्तकाय नमः
ॐ स्तबकाकार-कुम्भाग्राय नमः
ॐ रत्न-मौलये नमः
ॐ निरंकुशाय नमः ॥ २३० ॥
ॐ सर्प-हार-कटी-सूत्राय नमः
ॐ सर्प-यज्ञोपवीत-वते नमः
ॐ सर्प-कोटीर-कटकाय नमः
ॐ सर्प-ग्रैवेयकाङ्गदाय नमः
ॐ सर्प-कक्षोदराबन्धाय नमः
ॐ सर्प-राजोत्तरीयकाय नमः
ॐ रक्ताय नमः
ॐ रक्ताम्बर-धराय नमः
ॐ रक्त-माल्य-विभूषणाय नमः
ॐ रक्तेक्षणाय नमः ॥ २४० ॥
ॐ रक्त-कराय नमः
ॐ रक्त-ताल्वोष्ठ-पल्लवाय नमः

ॐ श्वेताय नमः
ॐ श्वेताम्बर-धराय नमः
ॐ श्वेत-माल्य-विभूषणाय नमः
ॐ श्वेतात-पत्र-रुचिराय नमः
ॐ श्वेत-चामर-वीजिताय नमः
ॐ सर्वावयव-सम्पूर्ण-सर्व-लक्षण-लक्षिताय नमः
ॐ सर्वाभरण-शोभाढ्याय नमः
ॐ सर्व-शोभा-समन्विताय नमः
ॐ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्याय नमः
ॐ सर्व-कारण-कारणाय नमः
ॐ सर्वदैक-कराय नमः
ॐ शार्ङ्गिणे नमः
ॐ बीजापूरिणे नमः
ॐ गदा-धराय नमः
ॐ इक्षु-चाप-धराय नमः
ॐ शूलिने नमः
ॐ चक्र-पाणये नमः
ॐ सरोज-भृते नमः ॥ २६० ॥
ॐ पाशिने नमः
ॐ धृतोत्पलाय नमः
ॐ शालि-मञ्जरी-भृते नमः
ॐ स्व-दन्त-भृते नमः
ॐ कल्प-वल्ली-धराय नमः
ॐ विश्वाभयदैक-कराय नमः
ॐ वशिने नमः
ॐ अक्ष-माला-धराय नमः
ॐ ज्ञान-मुद्रा-वते नमः
ॐ मुद्गरायुधाय नमः ॥ २७० ॥
ॐ पूर्ण-पात्रिणे नमः

ॐ कम्बु-धराय नमः
ॐ विधृतालि-समुद्गकाय नमः
ॐ मातु-लुङ्ग-धराय नमः
ॐ चूत-कलिका-भृते नमः
ॐ कुठार-वते नमः
ॐ पुष्करस्थ-स्वर्ण-घटी-पूर्ण-रत्नाभि-वर्षकाय नमः
ॐ भारती-सुन्दरी-नाथाय नमः
ॐ विनायक-रति-प्रियाय नमः
ॐ महा-लक्ष्मी-प्रियतमाय नमः
ॐ सिद्ध-लक्ष्मी-मनोरमाय नमः
ॐ रमा-रमेश-पूर्वाङ्गाय नमः
ॐ दक्षिणोमा-महेश्वराय नमः
ॐ मही-वराह-वामाङ्गाय नमः
ॐ रति-कन्दर्प-पश्चिमाय नमः
ॐ आमोद-मोद-जननाय नमः
ॐ स-प्रमोद-प्रमोदनाय नमः
ॐ समेधित-समृद्धि-श्रिये नमः ॥ २९० ॥
ॐ ऋद्धि-सिद्धि प्रवर्तकाय नमः
ॐ दत्त-सौमुख्य-सुमुखाय नमः
ॐ कान्ति-कन्दलिताश्रयाय नमः
ॐ मदना-वत्याश्रिताङ्घ्रये नमः
ॐ कृत्त-दौर्मुख्य-दुर्मुखाय नमः
ॐ विघ्न-सम्पल्लवोपघ्न-सेवाय नमः
ॐ उन्निद्र-मद-द्रवाय नमः
ॐ विघ्न-कृन्निघ्न-चरणाय नमः

ॐ द्राविणी-शक्ति-सत्-कृताय नमः
ॐ तीव्रा-प्रसन्न-नयनाय नमः
ॐ ज्वालिनी-पालितैक-दृशे नमः
ॐ मोहिनी-मोहनाय नमः
ॐ भोग-दायिनी-कान्ति-मण्डिताय नमः
ॐ कामिनी-कान्त-वक्त्र-श्रिये नमः
ॐ अधिष्ठित-वसुन्धराय नमः
ॐ वसुन्धरा-मदोन्नद्ध-महा-शङ्ख-निधि-प्रभवे नमः
ॐ नमद्-वसु-मती-मौलि-महा-पद्म-निधि-प्रभवे नमः
ॐ सर्व-सद्-गुरु-संसेव्याय नमः
ॐ शोचिष्केश-हृदाश्रयाय नमः
ॐ ईशान-मूर्ध्ने नमः
ॐ देवेन्द्र-शिखायै नमः
ॐ पवन-नन्दनाय नमः ॥ ३१० ॥
ॐ अग्र-प्रत्यग्र-नयनाय नमः
ॐ दिव्यास्त्राणां प्रयोग-विदे नमः
ॐ ऐरावतादि-सर्वाशा-वारणावरण-प्रियाय नमः
ॐ वज्राद्यस्त्र-परीवाराय नमः
ॐ गण-चण्ड-समाश्रयाय नमः
ॐ जयाजय-परीवाराय नमः
ॐ विजया-विजयावहाय नमः
ॐ अजितार्चित-पादाब्जाय नमः
ॐ नित्यानित्याऽवतंसिताय नमः

ॐ विलासिनी-कृतोल्लासाय नमः
ॐ शौण्डी-सौन्दर्य-मण्डिताय नमः
ॐ अनन्तानन्त-सुखदाय नमः
ॐ सुमङ्गल-सुमङ्गलाय नमः
ॐ इच्छा-शक्ति-ज्ञान-शक्ति-क्रिया-शक्ति-निषेविताय नमः
ॐ सुभगा-संश्रित-पदाय नमः
ॐ ललिता-ललिताश्रयाय नमः
ॐ कामिनी-कामनाय नमः
ॐ काम-मालिनी-केलि-लालिताय नमः
ॐ सरस्वत्याश्रयाय नमः
ॐ गौरी-नन्दनाय नमः ॥ ३३०
ॐ श्री-निकेतनाय नमः
ॐ गुरु-गुप्त-पदाय नमः
ॐ वाचा-सिद्धाय नमः
ॐ वागीश्वरी-पतये नमः
ॐ नलिनी-कामुकाय नमः
ॐ वामा-रामाय नमः
ॐ ज्येष्ठा-मनोरमाय नमः
ॐ रौद्री-मुद्रित-पादाब्जाय नमः
ॐ हुम्बीजाय नमः
ॐ तुङ्ग-शक्तिकाय नमः
ॐ विश्वादि-जनन-त्राणाय नमः
ॐ स्वाहा-शक्तये नमः
ॐ स-कीलकाय नमः
ॐ अमृताब्धि-कृतावासाय नमः

ॐ मद-घूर्णित-लोचनाय नमः
ॐ उच्छिष्ट-गणाय नमः
ॐ उच्छिष्ट-गणेशाय नमः
ॐ गण-नायकाय नमः
ॐ सार्व-कालिक-संसिद्धये नमः
ॐ नित्य-शैवाय नमः ॥ ३५० ॥
ॐ दिगम्बराय नमः
ॐ अनपायाय नमः
ॐ अनन्त-दृष्टये नमः
ॐ अप्रमेयाय नमः
ॐ अजरामराय नमः
ॐ अनाविलाय नमः
ॐ अ-प्रतिरथाय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ अमृताय नमः
ॐ अक्षराय नमः ॥ ३६० ॥
ॐ अ-प्रतर्क्याय नमः
ॐ अक्षयाय नमः
ॐ अजय्याय नमः
ॐ अनाधाराय नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ अमलाय नमः
ॐ अमोघ-सिद्धये नमः
ॐ अद्वैताय नमः
ॐ अघोराय नमः
ॐ अप्रतिमाननाय नमः ॥ ३७०
ॐ अनाकाराय नमः
ॐ अब्धि-भूम्यग्नि-बलघ्नाय नमः

ॐ अव्यक्त-लक्षणाय नमः
ॐ आधार-पीठाय नमः
ॐ आधाराय नमः
ॐ आधाराधेय-वर्जिताय नमः
ॐ आखु-केतनाय नमः
ॐ आशा-पूरकाय नमः
ॐ आखु-महा-रथाय नमः
ॐ इक्षु-सागर-मध्यस्थाय नमः
ॐ इक्षु-भक्षण-लालसाय नमः
ॐ इक्षु-चापातिरेक-श्रिये नमः
ॐ इक्षु-चाप-निषेविताय नमः
ॐ इन्द्र-गोप-समान-श्रिये नमः
ॐ इन्द्र-नील-सम-द्युतये नमः
ॐ इन्दीवर-दल-श्यामाय नमः
ॐ इन्दु-मण्डल-निर्मलाय नमः
ॐ इध्म-प्रियाय नमः
ॐ इडा-भागाय नमः
ॐ इडा-धाम्ने नमः ॥ ३९० ॥
ॐ इन्दिरा-प्रियाय नमः
ॐ इक्ष्वाकु-विघ्न-विध्वंसिने नमः
ॐ इति-कर्तव्यतेप्सिताय नमः
ॐ ईशान-मौलये नमः
ॐ ईशानाय नमः
ॐ ईशान-सुताय नमः
ॐ ईतिघ्ने नमः
ॐ ईषणा-त्रय-कल्पान्ताय नमः
ॐ ईहा-मात्र-विवर्जिताय नमः
ॐ उपेन्द्राय नमः ॥ ४०० ॥
ॐ उडु-भृन्मौलये नमः

ॐ उण्डेरक-बलि-प्रियाय नमः
ॐ उन्नताननाय नमः
ॐ उत्तुङ्गाय नमः
ॐ उदार-त्रिदशाग्र-गण्ये नमः
ॐ ऊर्जस्वते नमः
ॐ ऊष्मल-मदाय नमः
ॐ ऊहा-पोह-दुरासदाय नमः
ॐ ऋग्-यजुस्साम-सम्भूतये नमः
ॐ ऋद्धि-सिद्धि-प्रवर्तकाय नमः
ॐ ऋजु-चित्तैक-सुलभाय नमः
ॐ ऋण-त्रय-विमोचकाय नमः
ॐ स्व-भक्तानां लुप्त-विघ्नाय नमः
ॐ सुर-द्विषां लुप्त-शक्तये नमः
ॐ विमुखार्चानां लुप्त-श्रिये नमः
ॐ लूता-विस्फोट-नाशनाय नमः
ॐ एकार-पीठ-मध्यस्थाय नमः
ॐ एक-पाद-कृतासनाय नमः
ॐ एजिताखिल-दैत्य-श्रिये नमः
ॐ एधिताखिल-संश्रयाय नमः
ॐ ऐश्वर्य-निधये नमः
ॐ ऐश्वर्याय नमः
ॐ ऐहिकामुष्मिक-प्रदाय नमः
ॐ एरम्मद-समोन्मेषाय नमः
ॐ ऐरावत-निभाननाय नमः
ॐ ओङ्कार-वाच्याय नमः
ॐ ओङ्काराय नमः
ॐ ओजस्वते नमः

ॐ ओषधि-पतये नमः
ॐ औदार्य-निधये नमः ॥ ४३०
ॐ औद्धत्य-धुर्याय नमः
ॐ औन्नत्य-निस्वनाय नमः
ॐ सुर-नागानामङ्कुशाय नमः
ॐ सुर-विद्विषामङ्कुशाय नमः
ॐ अः-समस्त-विसर्गान्त-पदेषु परिकीर्तिताय नमः
ॐ कमण्डलु-धराय नमः
ॐ कल्पाय नमः
ॐ कपर्दिने नमः
ॐ कलभाननाय नमः
ॐ कर्म-साक्षिणे नमः ॥ ४४० ॥
ॐ कर्म-कर्त्रे नमः
ॐ कर्माकर्म-फल-प्रदाय नमः
ॐ कदम्ब-गोलकाकाराय नमः
ॐ कूष्माण्ड-गण-नायकाय नमः
ॐ कारुण्य-देहाय नमः
ॐ कपिलाय नमः
ॐ कथकाय नमः
ॐ कटि-सूत्र-भृते नमः
ॐ खर्वाय नमः
ॐ खड्ग-प्रियाय नमः ॥ ४५० ॥
ॐ खड्ग-खान्तान्तस्थाय नमः
ॐ ख-निर्मलाय नमः
ॐ खल्वाट-शृङ्ग-निलयाय नमः
ॐ खट्वाङ्गिने नमः
ॐ ख-दुरासदाय नमः
ॐ गुणाढ्याय नमः
ॐ गहनाय नमः

ॐ ग-स्थाय नमः
ॐ गद्य-पद्य-सुधार्णवाय नमः
ॐ गद्य-गान-प्रियाय नमः
ॐ गर्जाय नमः
ॐ गीत-गीर्वाण-पूर्वजाय नमः
ॐ गुह्याचार-रताय नमः
ॐ गुह्याय नमः
ॐ गुह्यागम-निरूपिताय नमः
ॐ गुहाशयाय नमः
ॐ गुहाब्धि-स्थाय नमः
ॐ गुरु-गम्याय नमः
ॐ गुरोर्गुरवे नमः
ॐ घण्टा-घर्घरिका-मालिने नमः ॥ ४७० ॥
ॐ घट-कुम्भाय नमः
ॐ घटोदराय नमः
ॐ चण्डाय नमः
ॐ चण्डेश्वर-सुहृदे नमः
ॐ चण्डीशाय नमः
ॐ चण्ड-विक्रमाय नमः
ॐ चराचर-पतये नमः
ॐ चिन्ता-मणि-चर्वण-लालसाय नमः
ॐ छन्दसे नमः
ॐ छन्दो-वपुषे नमः ॥ ४८० ॥
ॐ छन्दो-दुर्लक्ष्याय नमः
ॐ छन्द-विग्रहाय नमः
ॐ जगद्-योनये नमः
ॐ जगत्-साक्षिणे नमः
ॐ जगदीशाय नमः

ॐ जगन्मयाय नमः
ॐ जपाय नमः
ॐ जप-पराय नमः
ॐ जप्याय नमः
ॐ जिह्वा-सिंहासन-प्रभवे नमः
ॐ झलज्झल्लोल्लसद्-दान-
झङ्कारि-भ्रमराकुलाय नमः
ॐ टङ्कार-स्फार-संरावाय नमः
ॐ टङ्कारि-मणि-नूपुराय नमः
ॐ ठ-द्वयी-पल्लवान्तस्थ-सर्व-
मन्त्रैक-सिद्धिदाय नमः
ॐ डिण्डि-मुण्डाय नमः
ॐ डाकिनीशाय नमः
ॐ डामराय नमः
ॐ डिण्डिम-प्रियाय नमः
ॐ ढक्का-निनाद-मुदिताय
नमः
ॐ ढौकाय नमः ॥ ५०० ॥
ॐ ढुण्ढि-विनायकाय नमः
ॐ तत्वानां परमाय तत्त्वाय नमः
ॐ तत्वं-पद-निरूपिताय नमः
ॐ तारकान्तर-संस्थानाय नमः
ॐ तारकाय नमः
ॐ तारकान्तकाय नमः
ॐ स्थाणवे नमः
ॐ स्थाणु-प्रियाय नमः
ॐ स्थात्रे नमः
ॐ स्थावराय जङ्गमाय जगते
नमः॥ ५१० ॥
ॐ दक्ष-यज्ञ-प्रमथनाय नमः

ॐ दात्रे नमः
ॐ दानव-मोहनाय नमः
ॐ दया-वते नमः
ॐ दिव्य-विभवाय नमः
ॐ दण्ड-भृते नमः
ॐ दण्ड-नायकाय नमः
ॐ दन्त-प्रभिन्नाभ्र-मालाय नमः
ॐ दैत्य-वारण-दारणाय नमः
ॐ दंष्ट्रा-लग्न-द्विप-घटाय नमः
ॐ देवार्थ-नृ-गजाकृतये नमः
ॐ धन-धान्य-पतये-नमः
ॐ धन्याय नमः
ॐ धनदाय नमः
ॐ धरणी-धराय नमः
ॐ ध्यानैक-प्रकटाय नमः
ॐ ध्येयाय नमः
ॐ ध्यानाय नमः
ॐ ध्यान-परायणाय नमः
ॐ नन्द्याय नमः ॥ ५३० ॥
ॐ नन्दि-प्रियाय नमः
ॐ नादाय नमः
ॐ नाद-मध्य-प्रतिष्ठिताय नमः
ॐ निष्कलाय नमः
ॐ निर्मलाय नमः
ॐ नित्याय नमः
ॐ नित्यानित्याय नमः
ॐ निरामयाय नमः
ॐ परस्मै व्योम्ने नमः
ॐ परस्मै धाम्ने नमः ॥ ५४० ॥
ॐ परमात्मने नमः

ॐ परस्मै पदाय नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ पशु-पतये नमः
ॐ पशु-पाश-विमोचकाय नमः
ॐ पूर्णानन्दाय नमः
ॐ परानन्दाय नमः
ॐ पुराण-पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ पद्म-प्रसन्न-नयनाय नमः
ॐ प्रणताज्ञान-मोचनाय नमः
ॐ प्रमाण-प्रत्ययातीताय नमः
ॐ प्रणतार्ति-निवारणाय नमः
ॐ फल-हस्ताय नमः
ॐ फणि-पतये नमः
ॐ फेत्काराय नमः
ॐ फाणित-प्रियाय नमः
ॐ बाणार्चिताङ्घ्रि-युगलाय
नमः
ॐ बाल-केलि-कुतूहलिने नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ ब्रह्मार्चित-पदाय नमः ॥ ५६०
ॐ ब्रह्म-चारिणे नमः
ॐ बृहस्पतये नमः
ॐ बृहत्तमाय नमः
ॐ ब्रह्म-पराय नमः
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ ब्रह्म-वित्-प्रियाय नमः
ॐ बृहन्नादाग्र्य-चीत्काराय नमः
ॐ ब्रह्माण्डावलि-मेखलाय नमः
ॐ भ्रू-क्षेप-दत्त-लक्ष्मी-काय
नमः

ॐ भर्गाय नमः ॥ ५७० ॥
ॐ भद्राय नमः
ॐ भयापहाय नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ भक्ति-सुलभाय नमः
ॐ भूतिदाय नमः
ॐ भूति-भूषणाय नमः
ॐ भव्याय नमः
ॐ भूतालयाय नमः
ॐ भोग-दात्रे नमः
ॐ भ्रू-मध्य-गोचराय नमः
ॐ मन्त्राय नमः
ॐ मन्त्र-पतये नमः
ॐ मन्त्रिणे नमः
ॐ मद-मत्त-मनोरमाय नमः
ॐ मेखला-वते नमः
ॐ मन्द-गतये नमः
ॐ मति-मत्-कमलेक्षणाय नमः
ॐ महा-बलाय नमः
ॐ महा-वीर्याय नमः
ॐ महा-प्राणाय नमः ॥ ५९० ॥
ॐ महा-मनसे नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ यज्ञ-पतये नमः
ॐ यज्ञ-गोप्त्रे नमः
ॐ यज्ञ-फल-प्रदाय नमः
ॐ यशस्कराय नमः
ॐ योग-गम्याय नमः
ॐ याज्ञिकाय नमः
ॐ याजक-प्रियाय नमः

ॐ रसाय नमः ॥ ६०० ॥
ॐ रस-प्रियाय नमः
ॐ रस्याय नमः
ॐ रञ्जकाय नमः
ॐ रावणार्चिताय नमः
ॐ रक्षो-रक्षा-कराय नमः
ॐ रत्न-गर्भाय नमः
ॐ राज्य-सुख-प्रदाय नमः
ॐ लक्ष्याय नमः
ॐ लक्ष्य-प्रदाय नमः
ॐ लक्ष्याय नमः ॥ ६१० ॥
ॐ लयस्थाय नमः
ॐ लड्डुक-प्रियाय नमः
ॐ लान-प्रियाय नमः
ॐ लास्य-पराय नमः
ॐ लाभ-कृते नमः
ॐ लोक-विश्रुताय नमः
ॐ वरेण्याय नमः
ॐ वह्नि-वदनाय नमः
ॐ वन्द्याय नमः
ॐ वेदान्त-गोचराय नमः
ॐ वि-कर्त्रे नमः
ॐ विश्वतश्चक्षुषे नमः
ॐ विधात्रे नमः
ॐ विश्वतो-मुखाय नमः
ॐ वाम-देवाय नमः
ॐ विश्व-नेत्रे नमः
ॐ वज्रि-वज्र-निवारणाय नमः
ॐ विश्व-बन्धन-विष्कम्भा-
धाराय नमः

ॐ विश्वेश्वर-प्रभवे नमः
ॐ शब्द-ब्रह्मणे नमः ॥ ६३० ॥
ॐ शम-प्राप्याय नमः
ॐ शम्भु-शक्ति-गणेश्वराय नमः
ॐ शास्त्रे नमः
ॐ शिखाग्र-निलयाय नमः
ॐ शरण्याय नमः
ॐ शिखरीश्वराय नमः
ॐ षड्-ऋतु-कुसुम-
स्रग्विणे नमः
ॐ षडाधाराय नमः
ॐ षडक्षराय नमः
ॐ संसार-वैद्याय नमः ॥ ६४० ॥
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्व-भेषज-भेषजाय नमः
ॐ सृष्टि-स्थिति-लय-
क्रीडाय नमः
ॐ सुर-कुञ्जर-भेदनाय नमः
ॐ सिन्दूरित-महा-
कुम्भाय नमः
ॐ सदसद्-व्यक्ति-दायकाय
नमः
ॐ साक्षिणे नमः
ॐ समुद्र-मन्थनाय नमः
ॐ स्व-संवेद्याय नमः
ॐ स्व-दक्षिणाय नमः ॥ ६५० ॥
ॐ स्वतन्त्राय नमः
ॐ सत्य-सङ्कल्पाय नमः
ॐ साम-गान-रताय नमः
ॐ सुखिने नमः

ॐ हंसाय नमः
ॐ हस्ति-पिशाचीशाय नमः
ॐ हवनाय नमः
ॐ हव्य-कव्य-भुजे नमः
ॐ हव्याय नमः
ॐ हुत-प्रियाय नमः ॥ ६६० ॥
ॐ हर्षाय नमः
ॐ हृल्लेखा-मन्त्र-मध्यगाय नमः
ॐ क्षेत्राधिपाय नमः
ॐ क्षमा-भर्त्रे नमः
ॐ क्षमा-पर-परायणाय नमः
ॐ क्षिप्र-क्षेम-कराय नमः
ॐ क्षेमानन्दाय नमः
ॐ क्षोणी-सुर-द्रुमाय नमः
ॐ धर्म-प्रदाय नमः
ॐ अर्थदाय नमः ॥ ६७० ॥
ॐ काम-दात्रे नमः
ॐ सौभाग्य-वर्धनाय नमः
ॐ विद्या-प्रदाय नमः
ॐ विभवदाय नमः
ॐ भुक्ति-मुक्ति-फल-प्रदाय नमः
ॐ आभिरूप्य-कराय नमः
ॐ वीर-श्री-प्रदाय नमः
ॐ विजय-प्रदाय नमः
ॐ सर्व-वश्य-कराय नमः
ॐ गर्भ-दोषघ्ने नमः ॥ ६८० ॥
ॐ पुत्र-पौत्रदाय नमः
ॐ मेधादाय नमः
ॐ कीर्तिदाय नमः

ॐ शोक-हारिणे नमः
ॐ दौर्भाग्य-नाशनाय नमः
ॐ प्रति-वादि-मुख-स्तम्भाय नमः
ॐ रुष्ट-चित्त-प्रसादनाय नमः
ॐ पराभिचार-शमनाय नमः
ॐ दुःख-भञ्जन-कारकाय नमः
ॐ लवाय नमः ॥ ६९० ॥
ॐ त्रुटये नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ निमेषाय नमः
ॐ तत्पराय नमः
ॐ क्षणाय नमः
ॐ घट्यै नमः
ॐ मुहूर्ताय नमः
ॐ प्रहराय नमः
ॐ दिवा-नक्ताय नमः ॥ ७०० ॥
ॐ अहर्निशाय नमः
ॐ पक्षाय नमः
ॐ मासाय नमः
ॐ अयनाय नमः
ॐ वर्षाय नमः
ॐ युगाय नमः
ॐ कल्पाय नमः
ॐ महा-लयाय नमः
ॐ राशये नमः
ॐ तारायै नमः ॥ ७१० ॥
ॐ तिथये नमः
ॐ योगाय नमः

ॐ वाराय नमः
ॐ करणाय नमः
ॐ अंशकाय नमः
ॐ लग्नाय नमः
ॐ होरायै नमः
ॐ काल-चक्राय नमः
ॐ मेरवे नमः
ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः ॥ ७२० ॥
ॐ ध्रुवाय नमः
ॐ राहवे नमः
ॐ मन्दाय नमः
ॐ कवये नमः
ॐ जीवाय नमः
ॐ बुधाय नमः
ॐ भौमाय नमः
ॐ शशिने नमः
ॐ रवये नमः
ॐ कालाय नमः ॥ ७३० ॥
ॐ सृष्टये नमः
ॐ स्थितये नमः
ॐ विश्वस्मै स्थावराय जङ्गमाय नमः
ॐ भुवे नमः
ॐ अद्भ्यो नमः
ॐ अग्नये नमः
ॐ मरुते नमः
ॐ व्योम्ने नमः
ॐ अहङ्कृतये नमः
ॐ प्रकृतये नमः ॥ ७४० ॥
ॐ पुंसे नमः

ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ शिवाय नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ ईशाय नमः
ॐ शक्तये नमः
ॐ सदा-शिवाय नमः
ॐ त्रिदशेभ्यो नमः
ॐ पितृभ्यो नमः ॥ ७५० ॥
ॐ सिद्धेभ्यो नमः
ॐ यक्षेभ्यो नमः
ॐ रक्षोभ्यो नमः
ॐ किन्नरेभ्यो नमः
ॐ साध्येभ्यो नमः
ॐ विद्याधरेभ्यो नमः
ॐ भूतेभ्यो नमः
ॐ मनुष्येभ्यो नमः
ॐ पशुभ्यो नमः
ॐ खगेभ्यो नमः ॥ ७६० ॥
ॐ समुद्रेभ्यो नमः
ॐ सरिद्भ्यो नमः
ॐ शैलेभ्यो नमः
ॐ भूताय नमः
ॐ भव्याय नमः
ॐ भवोद्भवाय नमः
ॐ साङ्ख्याय नमः
ॐ पातञ्जलाय नमः
ॐ योगाय नमः
ॐ पुराणेभ्यो नमः ॥ ७७० ॥
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ स्मृत्यै नमः
ॐ वेदाङ्गेभ्यो नमः
ॐ सदाचाराय नमः
ॐ मीमांसायै नमः
ॐ न्याय-विस्तराय नमः
ॐ आयुर्वेदाय नमः
ॐ धनुर्वेदाय नमः
ॐ गान्धर्वाय नमः
ॐ काव्य-नाटकाय नमः
ॐ वैखानसाय नमः
ॐ भागवताय नमः
ॐ सात्वताय नमः
ॐ पाञ्च-रात्रकाय नमः
ॐ शैवाय नमः
ॐ पाशुपताय नमः
ॐ काला-मुखाय नमः
ॐ भैरव-शासनाय नमः
ॐ शाक्ताय नमः
ॐ वैनायकाय नमः ॥ ७९० ॥
ॐ सौराय नमः
ॐ जैनाय नमः
ॐ आर्हत-संहितायै नमः
ॐ सते नमः
ॐ असते नमः
ॐ व्यक्ताय नमः
ॐ अव्यक्ताय नमः
ॐ स-चेतनाय नमः
ॐ अ-चेतनाय नमः
ॐ बन्धाय नमः ॥ ८०० ॥
ॐ मोक्षाय नमः
ॐ सुखाय नमः
ॐ भोगाय नमः
ॐ अ-योगाय नमः
ॐ सत्याय नमः
ॐ अणवे नमः
ॐ महते नमः
ॐ स्वस्ति नमः
ॐ हुं नमः
ॐ फट् नमः ॥ ८१० ॥
ॐ स्वधा नमः
ॐ स्वाहा नमः
ॐ श्रौषट् नमः
ॐ वौषट् नमः
ॐ वषट् नमः
ॐ नमो नमः
ॐ ज्ञानाय नमः
ॐ विज्ञानाय नमः
ॐ आनन्दाय नमः
ॐ बोधाय नमः ॥ ८२० ॥
ॐ संविदे नमः
ॐ शमाय नमः
ॐ यमाय नमः
ॐ एकस्मै नमः
ॐ एकाक्षराधाराय नमः
ॐ एकाक्षर-परायणाय नमः
ॐ एकाग्र-धिये नमः
ॐ एक-वीराय नमः
ॐ एकानेक-स्वरूप-धृते नमः
ॐ द्वि-रूपाय नमः ॥ ८३० ॥
ॐ द्वि-भुजाय नमः

ॐ द्व्यक्षाय नमः
ॐ द्विरदाय नमः
ॐ द्वीप-रक्षकाय नमः
ॐ द्वै-मातुराय नमः
ॐ द्वि-वदनाय नमः
ॐ द्वन्द्वातीताय नमः
ॐ द्वयातिगाय नमः
ॐ त्रि-धाम्ने नमः
ॐ त्रि-कराय नमः ॥ ८४० ॥
ॐ त्रेता-त्रिवर्ग-फल-दायकाय नमः
ॐ त्रिगुणात्मने नमः
ॐ त्रिलोकादये नमः
ॐ त्रिशक्तीशाय नमः
ॐ त्रिलोचनाय नमः
ॐ चतुर्बाहवे नमः
ॐ चतुर्दन्ताय नमः
ॐ चतुरात्मने नमः
ॐ चतुर्मुखाय नमः
ॐ चतुर्विधोपाय-मयाय नमः
ॐ चतुर्वर्णाश्रमाश्रयाय नमः
ॐ चतुर्विध-वचो-वृत्ति-परिवृत्ति-प्रवर्तकाय नमः
ॐ चतुर्थी-पूजन-प्रीताय नमः
ॐ चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः
ॐ पञ्चाक्षरात्मने नमः
ॐ पञ्चात्मने नमः
ॐ पञ्चास्याय नमः
ॐ पञ्च-कृत्य-कृते नमः

ॐ पञ्चाधाराय नमः
ॐ पञ्च-वर्णाय नमः ॥ ८६० ॥
ॐ पञ्चाक्षर-परायणाय नमः
ॐ पञ्च-तालाय नमः
ॐ पञ्च-कराय नमः
ॐ पञ्च-प्रणव-भाविताय नमः
ॐ पञ्च-ब्रह्म-मय-स्फूर्तये नमः
ॐ पञ्चावरण-वारिताय नमः
ॐ पञ्च-भक्ष्य-प्रियाय नमः
ॐ पञ्च-बाणाय नमः
ॐ पञ्च-शिवात्मकाय नमः
ॐ षट्-कोण-पीठाय नमः
ॐ षट्-चक्र-धाम्ने नमः
ॐ षड्-ग्रन्थि-भेदकाय नमः
ॐ षडध्व-ध्वान्त-विध्वंसिने नमः
ॐ षडङ्गुल-महा-हृदाय नमः
ॐ षण्मुखाय नमः
ॐ षण्मुख-भ्रात्रे नमः
ॐ षट्-शक्ति-परिवारिताय नमः
ॐ षड्-वैरि-वर्ग-विध्वंसिने नमः
ॐ षडूर्मि-भय-भञ्जनाय नमः
ॐ षट्-तर्क-दूराय नमः ॥ ८८० ॥
ॐ षट्-कर्म-निरताय नमः
ॐ षड्-रसाश्रयाय नमः
ॐ सप्त-पाताल-चरणाय नमः
ॐ सप्त-द्वीपोरु-मण्डलाय नमः
ॐ सप्त-स्वर्लोक-मुकुटाय नमः

ॐ सप्त-सप्ति-वर-प्रदाय नमः
ॐ सप्ताङ्ग-राज्य-सुखदाय नमः
ॐ सप्तर्षि-गण-मण्डिताय नमः
ॐ सप्तच्छन्दो-निधये नमः
ॐ सप्त-होत्रे नमः ॥ ८९० ॥
ॐ सप्त-स्वराश्रयाय नमः
ॐ सप्ताब्धि-केलि-कासाराय नमः
ॐ सप्त-मातृ-निषेविताय नमः
ॐ सप्तच्छन्दो-मोद-मदाय नमः
ॐ सप्तच्छन्दो-मख-प्रभवे नमः
ॐ अष्ट-मूर्ति-ध्येय-मूर्तये नमः
ॐ अष्ट-प्रकृति-कारणाय नमः
ॐ अष्टाङ्ग-योग-फल-भुवे नमः
ॐ अष्ट-पत्राम्बुजासनाय नमः
ॐ अष्ट-शक्ति-समृद्ध-श्रिये नमः
ॐ अष्टैश्वर्य-प्रदायकाय नमः
ॐ अष्ट-पीठोप-पीठ-श्रिये नमः
ॐ अष्ट-मातृ-समावृताय नमः
ॐ अष्ट-भैरव-सेव्याय नमः
ॐ अष्ट-वसु-वन्द्याय नमः
ॐ अष्ट-मूर्ति-भृते नमः
ॐ अष्ट-चक्र-स्फुरन्मूर्तये नमः
ॐ अष्ट-द्रव्य-हविः-प्रियाय नमः
ॐ नव-नागासनाध्यासिने नमः
ॐ नव-निध्यनु-शासित्रे नमः
ॐ नव-द्वार-पुराधाराय नमः
ॐ नवाधार-निकेतनाय नमः
ॐ नव-नारायण-स्तुत्याय नमः
ॐ नव-दुर्गा-निषेविताय नमः

ॐ नव-नाथ-महा-नाथाय नमः
ॐ नव-नाग-विभूषणाय नमः
ॐ नव-रत्न-विचित्राङ्गाय नमः
ॐ नव-शक्ति-शिरो-धृताय नमः
ॐ दशात्मकाय नमः
ॐ दश-भुजाय नमः ॥ ९२० ॥
ॐ दश-दिक्-पति-वन्दिताय नमः
ॐ दशाध्यायाय नमः
ॐ दश-प्राणाय नमः
ॐ दशेन्द्रिय-नियामकाय नमः
ॐ दशाक्षर-महा-मन्त्राय नमः
ॐ दशाशा-व्यापि-विग्रहाय नमः
ॐ एकादशादिभि रुद्रैः स्तुताय नमः
ॐ एकादशाक्षराय नमः
ॐ द्वादशोद्दण्ड-दोर्दण्डाय नमः
ॐ द्वादशान्त-निकेतनाय नमः ॥ ९३० ॥
ॐ त्रयोदशाभिधाऽभिन्न-विश्वदेवाधि-दैवताय नमः
ॐ चतुर्दशेन्द्र-वरदाय नमः
ॐ चतुर्दश-मनु-प्रभवे नमः
ॐ चतुर्दशादि-विद्याढ्याय नमः
ॐ चतुर्दश-जगत्-प्रभवे नमः
ॐ साम-पञ्च-दशाय नमः
ॐ पञ्च-दशी-शीतांशु-निर्मलाय नमः
ॐ षोडशाधार-निलयाय नमः
ॐ षोडश-स्वर-मातृकाय नमः
ॐ षोडशान्त-पदावासाय नमः ॥ ९४० ॥
ॐ षोडशेन्दु-कलात्मकाय नमः
ॐ कलायै सप्त-दश्यै नमः
ॐ सप्त-दशाय नमः
ॐ सप्त-दशाक्षराय नमः
ॐ अष्टादश-द्वीप-पतये नमः
ॐ अष्टादश-पुराण-कृते नमः
ॐ अष्टादशौषधी-सृष्टये नमः
ॐ अष्टादश-विधि-स्मृताय नमः
ॐ अष्टादश-लिपि-व्यष्टि-समष्टि-ज्ञान-कोविदाय नमः
ॐ एक-विंशाय पुंसे नमः ॥ ९५० ॥
ॐ एक-विंशत्यङ्गुलि-पल्लवाय नमः
ॐ चतुर्विंशति-तत्त्वात्मने नमः
ॐ पञ्च-विंशाख्य-पुरुषाय नमः
ॐ सप्त-विंशति-तारेशाय नमः
ॐ सप्त-विंशति-योग-कृते नमः
ॐ द्वा-त्रिंशद्-भैरवाधीशाय नमः
ॐ चतुस्त्रिंशन्महा-ह्रदाय नमः
ॐ षट्-त्रिंशत्-तत्त्व-सम्भूतये नमः
ॐ अष्ट-त्रिंशत्-कला-तनवे नमः
ॐ नमदेकोन-पञ्चाशन्मरुद्-वर्ग-निरर्गलाय नमः ॥ ९६०
ॐ पञ्चाशदक्षर-श्रेण्यै नमः
ॐ पञ्चाशद्-रुद्र-विग्रहाय नमः
ॐ पञ्चाशद्-विष्णु-शक्तीशाय नमः
ॐ पञ्चाशन्मातृका-लयाय नमः
ॐ द्वि-पञ्चाशद्-वपुश्श्रेण्यै नमः
ॐ त्रि-षष्टयक्षर-संश्रयाय नमः
ॐ चतुष्षष्टयर्ण-निर्णेत्रे नमः
ॐ चतुष्षष्टि-कला-निधये नमः
ॐ चतुष्षष्टि-महा-सिद्ध-योगिनी-वृन्द-वन्दिताय नमः
ॐ अष्ट-षष्टि-महा-तीर्थ-क्षेत्र-भैरव-भावनाय नमः ॥ ९७०
ॐ चतुर्णवति-मन्त्रात्मने नमः
ॐ षण्णवत्यधिक-प्रभवे नमः
ॐ शतानन्दाय नमः
ॐ शत-धृतये नमः
ॐ शत-पत्रायतेक्षणाय नमः
ॐ शतानीकाय नमः
ॐ शत-मखाय नमः
ॐ शत-धार-वरायुधाय नमः
ॐ सहस्र-पत्र-निलयाय नमः
ॐ सहस्र-फण-भूषणाय नमः
ॐ सहस्र-शीर्ष्णे पुरुषाय नमः
ॐ सहस्राक्षाय नमः
ॐ सहस्र-पदे नमः
ॐ सहस्र-नाम-संस्तुत्याय नमः
ॐ सहस्राक्ष-बलापहाय नमः
ॐ दश-साहस्र-फण-भृत्-फणि-राज-कृतासनाय नमः
ॐ अष्टाशीति-सहस्राद्य-महर्षि-स्तोत्र-यन्त्रिताय नमः
ॐ लक्षाधीश-प्रियाधाराय नमः
ॐ लक्षाधार-मनो-मयाय नमः
ॐ चतुर्लक्ष-जप-प्रीताय नमः
ॐ चतुर्लक्ष-प्रकाशिताय नमः
ॐ चतुरशीति-लक्षाणां जीवानां देह-संस्थिताय नमः

ॐ कोटि-सूर्य-प्रतीकाशाय नमः
ॐ कोटि-चन्द्रांशु-निर्मलाय नमः
ॐ शिवा-भवाध्युष्ट-कोटि-विनायक-धुरन्धराय नमः
ॐ सप्त-कोटि-महा-मन्त्र-मन्त्रितावयव-द्युतये नमः
ॐ त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-सुर-श्रेणी-प्रणत-पादुकाय नमः
ॐ अनन्त-नाम्ने नमः
ॐ अनन्त-श्रिये नमः
ॐ अनन्तानन्त-सौख्यदाय नमः ॥ १००० ॥

विशेष— उक्त सहस्र-नामों से '**भगवान् श्रीमहा-गण-पति**' का '**जपार्चन**' कर अन्त में ऋष्यादि-कराङ्ग-न्यास, ध्यान, मानस-पूजन पुनः कर **पुष्पाञ्जलि** अर्पित करनी चाहिए।

'**हवन**' करने के लिए उक्त सहस्र-नाम-मन्त्रों के अन्त में '**स्वाहा**' जोड़कर आहुतियाँ देनी चाहिए।

'**पूजन-तर्पण**' करने के लिए भगवान् श्रीमहा-गण-पति के '**यन्त्र-राज**' में उक्त सहस्र-नामों के अन्त में '**पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः**' जोड़कर गन्धाक्षत, पुष्प (वीर-साधक '**कारण**' के साथ) से पूजन-तर्पण कर सकते हैं।

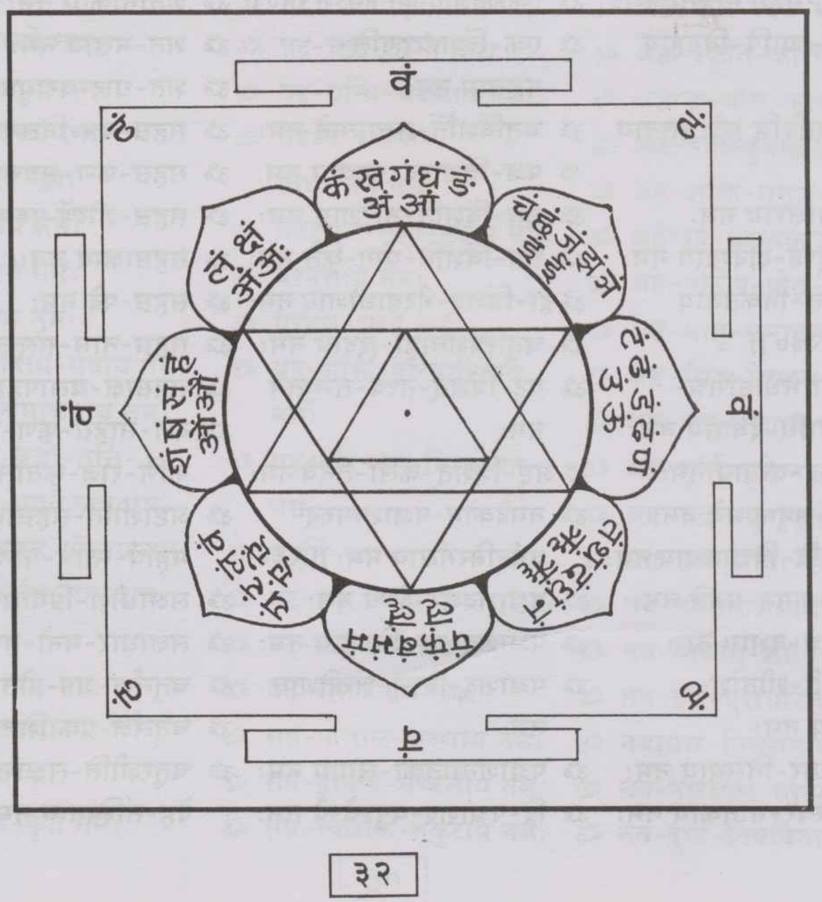

महा-लक्ष्मी ध्यानावली

['मन्त्रात्मक सप्तशती' से]

(१) कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,

हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।

बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

हिमालय के समान विशाल एवं उज्ज्वल चार हाथी अपनी सूँड़ों में उठाए हुए अमृत-पूर्ण स्वर्ण-कलशों से अमृत-धारा द्वारा स्वर्ण-समान देह-कान्तिवाली भगवती श्री का अभिषेक कर रहे हैं। भगवती भी अपने दाएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में वर-मुद्रा और बाँएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में अभय-मुद्रा धारण किए हैं। उनके मस्तक पर उज्ज्वल रत्न-मुकुट है। पट्ट-वस्त्र धारण किए वे अरविन्द के ऊपर विराजमाना हैं। उनकी मैं वन्दना करता हूँ। (**सप्तशती-मन्त्र १/५** — वैभव-प्राप्ति)

(२) जयतु जयतु देवी, देव-सङ्घाभि-पूज्या, जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्य-रूपा।

जयतु जयतु सत्या सर्व-भूतान्तरस्था, कर-पद-हृदयस्था लुब्ध-चित्ता भजेऽहम्।।

देव-समूह की पूजनीया देवी की जय हो, जय हो। भद्रा, भार्गवी, भाग्य-रूपा की जय हो, जय हो। सत्या, सभी प्राणियों के अन्तःस्थल में संस्थिता की जय हो, जय हो। हाथों, पैरों और हृदय में संस्थिता चित्त-मोहिनी की मैं वन्दना करता हूँ। (**सप्तशती-मन्त्र** १/६ — घोर सङ्कटों से रक्षा)

(३) अक्ष-स्रक्-परशू गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूल पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,

सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

कमल के आसन पर विराजमाना, महिष-मर्दिनी, महा-लक्ष्मी की मैं उपासना करता हूँ, जो मूँगे की जैसी कान्तिवाली हैं और अपने हाथों में १. अक्ष-माला, २. परशु, ३. गदा, ४. बाण, ५. वज्र, ६. पद्म, ७. धनुष, ८. कुण्डिका, ९. दण्ड, १०. शक्ति, ११. खड्ग, १२. ढाल, १३. शङ्ख, १४. घण्टा, १५. मद्य-पात्र, १६. शूल, १७. पाश और १८. सुदर्शन चक्र धारण किए हैं। (**सप्तशती-मन्त्र** १/११ — सर्व-सिद्धियों की प्राप्ति)

(४) पीताम्बरां पीत-माल्यां, पीताभरण-भूषिताम्।

पीत-कञ्ज-पद-द्वन्द्वां, कमलां चिन्तयेऽनिशम्।।

पीले वस्त्र, पीली माला और पीले आभूषणों से शोभायमाना और पीले दो कमलों पर दोनों पैर रखे हुई भगवती कमला का मैं दिन-रात ध्यान करता हूँ।(**सप्तशती-मन्त्र १/१४** — सभी का वशीकरण)

★ ★ ★

त्रैलोक्य-मङ्गल लक्ष्मी-स्तोत्र

* 'कुल - वाणी - रत्न' श्री आशुतोषकुमार मिश्र, ए.एस. लेजर प्वाइण्ट, २४ ए.डी.ए. कटरा, प्रयागराज

नमः कल्याणदे देवि! नमोऽस्तु हरि-वल्लभे! नमो भक्त-प्रिये देवि! लक्ष्मी-देवि! नमोऽस्तु ते॥१

नमो माया-गृहीताङ्गि! नमोऽस्तु हरि-वल्लभे! सर्वेश्वरि! नमस्तुभ्यं, लक्ष्मी-देवि! नमोऽस्तु ते॥२

महा-माये विष्णु-धर्म-पत्नी-रूपे हरि-प्रिये! वाञ्छा-दात्रि सुरेशानि ! लक्ष्मी-देवि!नमोऽस्तु ते॥३

उद्यद्-भानु-सहस्राभे, नयन-त्रय-भूषिते ! रत्नाधारे सुरेशानि ! लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥४

विचित्र-वसने देवि! भव-दुःख-विनाशिनि! कुच-भार-नते देवि! लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥५

साधकाभीष्टदे देवि! अन्न-दान-रतेऽनघे! विष्ण्वानन्द - प्रदे मातर्लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥६

षट्-कोण-पद्म-मध्यस्थे! षडङ्ग-युवती-मये! ब्रह्माण्यादि - स्वरूपे च, लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥७

देवि त्वं चन्द्र-वदने! सर्व-साम्राज्य-दायिनि! सर्वानन्द-करे देवि! लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥८

॥ फल-श्रुति ॥

पूजा-काले पठेद् यस्तु, स्तोत्रमेतत् समाहितः। तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः॥१

प्रातः-काले पठेद् यस्तु, मन्त्र-पूजा-पुरस्सरम्। तस्य चान्न-समृद्धिः स्याद्, वर्द्धमानो दिने दिने॥२

यस्मै कस्मै न दातव्यं, न प्रकाश्यं कदाचन। प्रकाशात् कार्य-हानिः स्यात्, तस्माद् यत्नेन गोपयेत्॥३

त्रैलोक्य-मङ्गलं नाम, स्तोत्रमेतत् प्रकीर्तितम्। ब्रह्म - विद्या-स्वरूपं च, महैश्वर्य्य-प्रदायकम्॥४

विशेष - जो मनुष्य नित्य-पूजन के समय उक्त स्तोत्र का पाठ करता है, उसके पास श्रीलक्ष्मी जी सदा वास करती हैं। इस स्तोत्र का पाठ गुप्त रूप से करना चाहिए। लक्ष्मी देवी के मन्त्र का जप कर, लक्ष्मी देवी को आठ बार पुष्पाञ्जलि देकर उक्त स्तोत्र का पाठ करने से विशेष फल प्राप्त होता है। उक्त स्तोत्र का १०८ बार पाठ करने से स्तोत्र का एक पुरश्चरण होता है। इस प्रकार कई **'पुरश्चरण'** करने से **'लक्ष्मी'** - वैभव की प्राप्ति होती है।

जो मनुष्य उक्त स्तोत्र को भोज-पत्र पर लिखकर सोने की ताबीज में कण्ठ अथवा दाहिनी भुजा में धारण करता है, उसे सभी प्रकार का ऐश्वर्य प्राप्त होता है। जो स्त्री बाँई भुजा में धारण करती है, वह पुत्र-वती होती है।

जो मनुष्य एक मास तक दिन में हविष्यान्न भोजन कर रात्रि में भक्ति-पूर्वक उक्त स्तोत्र का पाठ करता है, वह सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करता है।

★ ★ ★

।। श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः ।।

श्रीमहा-लक्ष्मी स्तोत्रम्

।। श्रीअगस्त्य उवाच ।।

जय पद्म-पलाशाक्षि!, जय त्वं श्री-पति-प्रिये! जय मातर्महा-लक्ष्मि!, संसारार्णव-तारिणि!।।१

महा-लक्ष्मि! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि! हरि-प्रिये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दया-निधे!।।२

पद्मालये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं च सर्वदे! सर्व-भूत-हितार्थाय, वसु-वृष्टिं सदा कुरु।।३

जगन्मातर्नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दया-निधे! दया-वति! नमस्तुभ्यं, विश्वेश्वरि! नमोऽस्तु ते।।४

नमः क्षीरार्णव-सुते!, नमस्त्रैलोक्य-धारिणि! वसु-वृष्टे! नमस्तुभ्यं, रक्ष मां शरणागतम्।।५

रक्ष त्वं देव-देवेशि! देव-देवस्य वल्लभे! दारिद्र्यात् त्राहि मां लक्ष्मि!, कृपां कुरु ममोपरि।।६

नमस्त्रैलोक्य-जननि!, नमस्त्रैलोक्य-पावनि! ब्रह्मादयो नमन्ति त्वां, जगदानन्द-दायिनि!।।७

विष्णु-प्रिये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं जगद्धिते ! आर्ति-हन्त्रि! नमस्तुभ्यं, समृद्धिं कुरु मे सदा।।८

अब्ज-वासे ! नमस्तुभ्यं, चपलायै नमो नमः। चञ्चलायै नमस्तुभ्यं, ललितायै नमो नमः।।९

नमः प्रद्युम्न-जननि!, मातस्तुभ्यं नमो नमः। परिपालय मां मातर्देवि ! त्वं शरणागतम्।।१०

शरण्ये! त्वां प्रपन्नोऽस्मि, कमले! कमलालये! त्राहि त्राहि महा - लक्ष्मि! परित्राण-परायणे!।।११

पाण्डित्यं शोभते नैव, न शोभन्ते गुणा नरे। शीलत्वं नैव शोभेत, महा-लक्ष्मि! त्वया विना।।१२

तावद् विराजते रूपं, तावच्छीलं विराजते। तावद् गुणा नराणां च, यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति।।१३

लक्ष्मि! त्वयाऽलंकृत-मानवा ये, पापैर्विमुक्ता नृप-लोक-मान्याः।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति, दुःशीलिनः शील - वतां वरिष्ठाः।।१४

लक्ष्मीर्भूषयते रूपं, लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्। लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां, सर्वाल्लक्ष्मीर्विशिष्यते।।१५

लक्ष्मि! त्वद्-गुण-कीर्तनेन सकला भूर्यात्यलं जिह्मताम्,
रुद्राद्या रवि - चन्द्र - देव - पतयो वक्तुं च नैव क्षमाः।
अस्माभिस्तव रूप - लक्षण - गुणान् वक्तुं कथं शक्यते,
मातर्मां परि-पाहि विश्व-जनके! कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्।।१६

दीनार्ति - भीतं भव-ताप-पीडितं, धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम्।
कृपा-निधित्वान्मम लक्ष्मि!सत्वरं, धन-प्रदानाद्धन-नायकं कुरु।।१७

मां विलोक्य स-दये हरि-प्रिये! निर्धनं तव समीपमागतम्।

देहि मे झटिति लक्ष्मि! कराग्रं, वस्त्र-काञ्चन-वरान्नमद्भुतम्॥१८॥

त्वमेव जननी लक्ष्मि! पिता लक्ष्मि! त्वमेव च। भ्राता त्वं च सखा लक्ष्मि!, विद्या लक्ष्मि! त्वमेव च॥१९

त्राहि त्राहि महा-लक्ष्मि!, त्राहि त्राहि सुरेश्वरि! त्राहि त्राहि जगन्मातर्दारिद्र्यात् त्राहि वेगतः॥२०

नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि!, नमस्तुभ्यं नमो नमः। धर्माधारे! नमस्तुभ्यं, नमः सम्पत्ति-दायिनि!॥२१

दारिद्र्यार्णव - मग्नोऽहं, निमग्नोऽहं रसातले। मज्जन्तं मां करे धृत्वा, तूद्धर त्वं रमे! द्रुतम्॥२२

किं लक्ष्मि! बहुनोक्तेन, जल्पितेन पुनः पुनः। अन्यन्मे शरणं नास्ति, सत्यं सत्यं हरि-प्रिये!॥२३

॥फल-श्रुति॥

एतच्छ्रुत्वाऽगस्ति-वाक्यं, हृष्यमाणा हरि-प्रिया। उवाच मधुरां वाणीं, तुष्टाऽहं तव सर्वदा॥१॥

॥श्रीलक्ष्मी उवाच॥

यत्-त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं, यः पठिष्यति मानवः। शृणोति च महा-भागस्तस्याहं वश-वर्तिनी॥२॥

नित्यं पठति यो भक्त्या, त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति। ऋणं च नश्यते तीव्रं, वियोगं नैव पश्यति॥३॥

यः पठेत् प्रातरुत्थाय, श्रद्धा-भक्ति-समन्वितः। गृहे तस्य सदा तुष्टा, नित्यं श्री- पतिना सह॥४॥

सुख-सौभाग्य-सम्पन्नो, मनस्वी बुद्धि-मान् भवेत्। पुत्र-वान् गुण-वान् श्रेष्ठो, भोग-भोगा च मानवः॥५॥

इदं स्तोत्रं महा-पुण्यं, लक्ष्म्याः प्रीति-करं वरम्। विष्णु-प्रसाद-जननं, चतुर्वर्ग-फल-प्रदम्॥६॥

राज-द्वारे जयश्चैव, शत्रोश्चैव पराजयः। भूत-प्रेत-पिशाचानां, व्याघ्राणां न भयं तथा॥७॥

न शस्त्रानल-तोयौघाद् भयं तस्य प्रजायते। दुर्वृत्तानां च पापानां, बहु-हानि-करं परम्॥८॥

मन्दुराकरि-शालासु, गवां गोष्ठे समाहितः। पठेत् तद्-दोष-शान्त्यर्थे, महा-पातक-नाशनम्॥९॥

सर्व-सौख्य-करं नृणामायुरारोग्यदं तथा। अगस्ति-मुनिना प्रोक्तं, प्रजानां हित-काम्यया॥१०॥

॥श्रीअगस्त्य-विरचितं श्रीमहा-लक्ष्मी-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

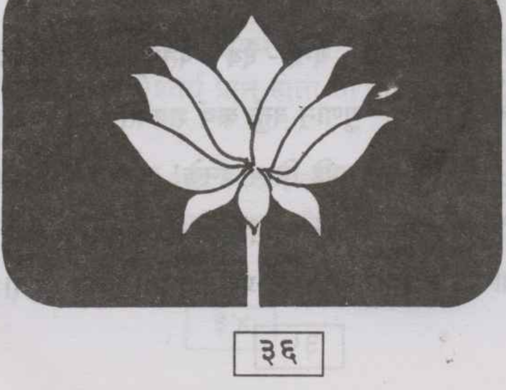

श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः

श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नाम-जप-प्रयोग

सङ्कल्प— ॐ तत्सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-परार्द्धे, श्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त-देशे, पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक (...) संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो), अहं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीत्यर्थं सहस्र-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नाम-मन्त्रस्य श्रीमहा-विष्णुः भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, **'श्रीं'**-बीजम्, **'ह्रीं'**-शक्तिः, **'ह्रैं'**-कीलकम्, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीमहा-विष्णु-भगवद्-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदये, 'श्रीं'-बीजाय नमः गुह्ये, 'ह्रीं'-शक्तये नमः पादयोः, 'ह्रैं'-कीलकाय नमः नाभौ, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास— श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, श्रैं अनामिकाभ्यां हुं, श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास— श्रां हृदयाय नमः, श्रीं शिरसे स्वाहा, श्रूं शिखायै वषट्, श्रैं कवचाय हुं, श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान—

पद्मानने पद्म-करे, सर्व-लोकैक-पूजिते! सान्निध्यं कुरु मे चित्ते, विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिते! ॥ १॥
भगवद्दक्षिणे पार्श्वे, श्रीदेवीं सहसोत्थिताम्। ईश्वरीं सर्व-भूतानां, जननीं सर्व-देहिनाम् ॥ २॥
चारु-स्मितां चारु-दन्तीं, चारु-नेत्रानन-भ्रुवम्। सु-कपोलां सु-कर्णाग्र-न्यस्त-मौक्तिक-कुण्डलाम्॥ ३॥
सु-केशां चारु-बिम्बोष्ठीं, रक्त-तुङ्ग-घन-स्तनीम्। अलकाग्रैरलि-निभैरलंकृत-मुखाम्बुजाम् ॥ ४॥
लसत्कनक-सङ्काश-पीन-सुन्दर-कन्धराम्। निष्क-कण्ठीं स्तनालम्बिमुक्ता-हार-विराजिताम् ॥ ५॥
नील-कुन्तल-मध्यस्थां, माणिक्य-मुकुटोज्ज्वलाम्। शुक्ल-माल्याम्बर-धरां, तप्त-हाटक-वर्णिनीम्॥ ६॥
अनन्य-सुलभैस्तैस्तैर्गुणैः साम्य-युतां निजैः। अनुरूपांनवद्याङ्गीं, हरेर्नित्यानपायिनीम् ॥ ७॥

मानस-पूजन— ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ शं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नामावलि

ॐ श्रियै नमः
ॐ वासुदेव-महिष्यै नमः
ॐ पुं-प्रधानेश्वरेश्वर्यै नमः
ॐ अचिन्त्यानन्त-विभवायै नमः
ॐ भावाभाव-विभाविन्यै नमः
ॐ अहं-भावात्मिकायै नमः
ॐ पद्मायै नमः
ॐ शान्तानन्त-जितात्मिकायै नमः
ॐ ब्रह्म-भावं गतायै नमः
ॐ त्यक्त-भीतायै नमः ॥ १० ॥
ॐ सर्व-जगन्मय्यै नमः
ॐ षाड्-गुण्य-पूर्णायै नमः
ॐ त्रय्यन्त-रूपायै नमः
ॐ आत्मानप-गामिन्यै नमः
ॐ एक-योग्यायै नमः
ॐ अशून्य-भावाकृत्यै नमः
ॐ तेजः-प्रभाविन्यै नमः
ॐ भाव्याभावक-भावायै नमः
ॐ आत्म-भाव्यायै नमः
ॐ काम-दुघे नमः ॥ २० ॥
ॐ आत्म-भुवे नमः
ॐ भाव्याभाव-मय्यै नमः
ॐ दिव्यायै नमः
ॐ भेद्य-भेदक-भावगायै नमः
ॐ जगत्-कुटुम्बिन्यै नमः
ॐ अखिलाधारायै नमः
ॐ काम-विजृम्भिण्यै नमः
ॐ पञ्च-कृत्य-कर्यै नमः
ॐ पञ्च-शक्ति-मय्यै नमः
ॐ आत्म-वल्लभायै नमः ॥ ३० ॥
ॐ भावाभावानुगायै नमः
ॐ सर्व-सम्मतायै नमः
ॐ आत्मोप-गूहिन्यै नमः
ॐ अपृथक्-चारिण्यै नमः
ॐ सौम्यायै नमः
ॐ सौम्य-रूपायै नमः
ॐ अव्यवस्थितायै नमः
ॐ आद्यन्त-रहितायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ भव-भाव्य-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ महा-विभूत्यै नमः
ॐ समतां गतायै नमः
ॐ ज्योतिर्गणेश्वर्यै नमः
ॐ सर्व-कार्य-कर्यै नमः
ॐ धर्म-स्वभावायै नमः
ॐ आत्माग्रतःस्थितायै नमः
ॐ आज्ञा-सम-विभक्ताङ्ग्यै नमः
ॐ ज्ञानानन्द-क्रिया-मय्यै नमः
ॐ स्वातन्त्र्य-रूपायै नमः
ॐ देवोरः-स्थितायै नमः ॥ ५० ॥
ॐ तद्धर्म-धर्मिण्यै नमः
ॐ सर्व-भूतेश्वर्यै नमः
ॐ सर्व-भूत-मात्रे नमः
ॐ आत्म-मोहिन्यै नमः
ॐ सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै नमः
ॐ सर्व-व्यापिन्यै नमः
ॐ प्राप्त-योगिन्यै नमः
ॐ विमुक्ति-दायिन्यै नमः
ॐ भक्त-गम्यायै नमः
ॐ संसार-तारिण्यै नमः ॥ ६० ॥
ॐ धर्मार्थ-वादिन्यै नमः
ॐ व्योम-निलयायै नमः
ॐ व्योम-विग्रहायै नमः
ॐ पञ्च-व्योम-पद्यै नमः
ॐ रक्षो-व्यावृत्यै नमः
ॐ प्राप्य-पूरिण्यै नमः
ॐ आनन्द-रूपायै नमः
ॐ सर्वाप्ति-शालिन्यै नमः
ॐ शक्ति-नायिकायै नमः
ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः ॥ ७० ॥
ॐ हैरण्य-प्राकारायै नमः
ॐ हेम-मालिन्यै नमः
ॐ प्रस्फुरत्तायै नमः
ॐ भद्र-होमायै नमः
ॐ वेशिन्यै नमः
ॐ रजत-स्रजायै नमः
ॐ स्वाज्ञा-कार्य-भरायै नमः
ॐ नित्य-सुरभ्यै नमः
ॐ व्योम-चारिण्यै नमः
ॐ योग-क्षेम-वहायै नमः ॥ ८० ॥
ॐ सर्व-सुलभायै नमः
ॐ इच्छा-क्रियात्मिकायै नमः
ॐ महा-समूहायै नमः
ॐ निखिल-प्ररोहायै नमः

ॐ वेद-गोचरायै नमः
ॐ विस्मयाधायिन्यै नमः
ॐ ब्रह्म-संहितायै नमः
ॐ सु-गुणोत्तरायै नमः
ॐ प्रज्ञा-परिमितायै नमः
ॐ आत्मानुरूपायै नमः ॥ ९० ॥
ॐ सत्योपायार्जितायै नमः
ॐ मनो-ज्ञेयायै नमः
ॐ ज्ञान-गम्यायै नमः
ॐ नित्य-मुक्तायै नमः
ॐ आत्म-सेविन्यै नमः
ॐ कर्तृ-शक्त्यै नमः
ॐ सु-गहनायै नमः
ॐ भोक्तृ-शक्त्यै नमः
ॐ गुण-प्रियायै नमः
ॐ ज्ञान-शक्त्यै नमः ॥ १०० ॥
ॐ अनौपम्यायै नमः
ॐ पर-शक्त्यै नमः
ॐ निरामयायै नमः
ॐ अकलङ्कायै नमः
ॐ महा-शक्त्यै नमः
ॐ निराधारायै नमः
ॐ विकासिन्यै नमः
ॐ महा-मायायै नमः
ॐ महा-नन्दायै नमः
ॐ ब्रह्म-नीत्यै नमः ॥ ११० ॥
ॐ निराश्रयायै नमः
ॐ एक-स्वरूपायै नमः
ॐ त्रिविधायै नमः
ॐ संख्यातीतायै नमः
ॐ निरञ्जनायै नमः
ॐ आत्म-सत्तायै नमः

ॐ नित्य-शुचये नमः
ॐ निर्विकल्पायै नमः
ॐ सुखोचितायै नमः
ॐ नित्य-शान्तायै नमः ॥ १२० ॥
ॐ निस्तरङ्गायै नमः
ॐ निर्भिन्नायै नमः
ॐ सर्व-भेदिन्यै नमः
ॐ असङ्कीर्णायै नमः
ॐ अविधेयात्मने नमः
ॐ निषेद्धयायै नमः
ॐ सर्व-पावन्यै नमः
ॐ निष्कामनायै नमः
ॐ सर्व-रसायै नमः
ॐ अभेद्यायै नमः ॥ १३० ॥
ॐ सर्वार्थ-साधिन्यै नमः
ॐ अनिर्देश्यायै नमः
ॐ अपरिमितायै नमः
ॐ निर्विकारायै नमः
ॐ त्रि-लक्षणायै नमः
ॐ अभयङ्कर्यै नमः
ॐ स्त्री-स्वरूपायै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ सदसदाकृत्यै नमः
ॐ अप्रतर्क्यायै नमः ॥ १४० ॥
ॐ अप्रतिहतायै नमः
ॐ नियन्त्र्यै नमः
ॐ यन्त्र-वाहिन्यै नमः
ॐ हार्द-मूर्त्यै नमः
ॐ महा-मूर्त्यै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ विश्व-गोपिन्यै नमः
ॐ वर्धमानायै नमः

ॐ अनवद्याङ्ग्यै नमः
ॐ निरवद्यायै नमः ॥ १५० ॥
ॐ त्रि-वर्गदायै नमः
ॐ अप्रमेयायै नमः
ॐ अमृत-दुघायै नमः
ॐ कूटस्थायै नमः
ॐ कुल-नन्दिन्यै नमः
ॐ अविगीतायै नमः
ॐ तन्त्र-सिद्धायै नमः
ॐ योग-सिद्धायै नमः
ॐ अमरेश्वर्यै नमः
ॐ विश्व-सूत्यै नमः ॥ १६० ॥
ॐ तर्पयन्त्यै नमः
ॐ नित्य-तृप्तायै नमः
ॐ महौषध्यै नमः
ॐ शब्दात्ययायै नमः
ॐ शब्द-सहायै नमः
ॐ कृतज्ञायै नमः
ॐ कृत-लक्षणायै नमः
ॐ त्रिवर्तिन्यै नमः
ॐ त्रिलोकस्थायै नमः
ॐ भूर्भुवःस्वरयोनिजायै नमः
ॐ अग्राह्यायै नमः
ॐ अग्राहकायै नमः
ॐ अनन्ताह्वयायै नमः
ॐ सर्वाति-शायिन्यै नमः
ॐ व्योम-पद्मायै नमः
ॐ कृत-धुरायै नमः
ॐ पूर्ण-कामायै नमः
ॐ महेश्वर्यै नमः
ॐ सु-वाच्यायै नमः
ॐ वाचिकायै नमः ॥ १८० ॥

ॐ सत्य-कथनायै नमः
ॐ सर्व-पावन्यै नमः
ॐ लक्ष्यमाणायै नमः
ॐ लक्षयन्त्यै नमः
ॐ जगज्ज्येष्ठायै नमः
ॐ शुभावहायै नमः
ॐ जगत्-प्रतिष्ठायै नमः
ॐ भुवन-भर्त्र्यै नमः
ॐ गूढ-प्रभाविन्यै नमः
ॐ क्रिया-योगात्मिकायै नमः ॥
ॐ मूर्तायै नमः
ॐ हृदब्जस्थायै नमः
ॐ महा-क्रमायै नमः
ॐ परम-दिवे नमः
ॐ प्रथमजायै नमः
ॐ परमाप्तायै नमः
ॐ जगन्निधये नमः
ॐ आत्मानपायिन्यै नमः
ॐ तुल्य-स्वरूपायै नमः
ॐ सम-लक्षणायै नमः ॥ २०० ॥
ॐ तुल्य-वृत्तायै नमः
ॐ सम-वयसे नमः
ॐ मोद-मानायै नमः
ॐ खग-ध्वजायै नमः
ॐ तुल्य-चेष्टायै नमः
ॐ तुल्य-शीलायै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ काम-रूपिण्यै नमः
ॐ समग्र-लक्षणायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः ॥ २१० ॥
ॐ तुल्य-भूत्यै नमः
ॐ सनातनायै नमः

ॐ महर्द्धये नमः
ॐ सत्य-सङ्कल्पायै नमः
ॐ भूमिजायै नमः
ॐ परमेश्वर्यै नमः
ॐ जगन्मात्रे नमः
ॐ सूत्र-वत्यै नमः
ॐ भूत-धात्र्यै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः ॥ २२० ॥
ॐ महाऽभिलाषायै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ प्रधानायै नमः
ॐ सर्व-भासिन्यै नमः
ॐ नाना-वपुषे नमः
ॐ बहु-विधायै नमः
ॐ सर्वज्ञायै नमः
ॐ पुण्य-कीर्तनायै नमः
ॐ भूताश्रयायै नमः
ॐ हृषीकेशायै नमः ॥ २३० ॥
ॐ अशोकायै नमः
ॐ स्वाङ्गि-वाहिकायै नमः
ॐ ब्रह्मात्मिकायै नमः
ॐ पुण्य-जन्यै नमः
ॐ सत्य-कामायै नमः
ॐ समाधि-भुवे नमः
ॐ हिरण्य-गर्भायै नमः
ॐ गम्भीरायै नमः
ॐ गो-धूल्यै नमः
ॐ कमलासनायै नमः ॥ २४० ॥
ॐ जित-क्रोधायै नमः
ॐ कुमुदिन्यै नमः
ॐ वैजयन्त्यै नमः
ॐ मनोजवायै नमः

ॐ धन-लक्ष्म्यै नमः
ॐ स्वस्ति-कर्यै नमः
ॐ राज्य-लक्ष्म्यै नमः
ॐ महा-सत्यै नमः
ॐ जय-लक्ष्म्यै नमः
ॐ महा-गोष्ठ्यै नमः ॥ २५० ॥
ॐ मघोन्यै नमः
ॐ माधव-प्रियायै नमः
ॐ पद्म-गर्भायै नमः
ॐ वेद-वत्यै नमः
ॐ विविक्तायै नमः
ॐ परमेष्ठिन्यै नमः
ॐ सुवर्ण-बिन्दवे नमः
ॐ महत्यै नमः
ॐ महा-योगि-प्रियायै नमः
ॐ अनघायै नमः ॥ २६० ॥
ॐ पद्मेस्थितायै नमः
ॐ वेद-मय्यै नमः
ॐ कुमुदायै नमः
ॐ जय-वाहिन्यै नमः
ॐ संहृत्यै नमः
ॐ निर्मितायै नमः
ॐ ज्योतिषे नमः
ॐ नियत्यै नमः
ॐ विविधोत्सवायै नमः
ॐ रुद्र-वन्द्यायै नमः ॥ २७० ॥
ॐ सिन्धु-मत्यै नमः
ॐ वेद-मात्रे नमः
ॐ मधु-व्रतायै नमः
ॐ विश्वम्भरायै नमः
ॐ हैमवत्यै नमः
ॐ समुद्रायै नमः

ॐ इच्छा-विहारिण्यै नमः
ॐ अनुकूलायै नमः
ॐ यज्ञ-वत्यै नमः
ॐ शत-कोटयै नमः ॥ २८० ॥
ॐ सु-पेशलायै नमः
ॐ धर्मोदयायै नमः
ॐ धर्म-सेवायै नमः
ॐ सु-कुमार्यै नमः
ॐ सभा-वत्यै नमः
ॐ भीमायै नमः
ॐ ब्रह्म-स्तुतायै नमः
ॐ मध्य-प्रभायै नमः
ॐ देवर्षि-वन्दितायै नमः
ॐ देव-भोग्यायै नमः ॥ २९० ॥
ॐ महा-भागायै नमः
ॐ प्रतिज्ञायै नमः
ॐ पूर्ण-शेवध्यै नमः
ॐ सु-वर्णायै नमः
ॐ रुचिर-प्रख्यायै नमः
ॐ भोगिन्यै नमः
ॐ भोग-दायिन्यै नमः
ॐ वसु-प्रणायै नमः
ॐ उत्तम-वध्वै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः ॥ ३०० ॥
ॐ कमलोद्भवायै नमः
ॐ विद्वत्-प्रियायै नमः
ॐ पद्म-चिह्नायै नमः
ॐ वरिष्ठायै नमः
ॐ कमलेक्षणायै नमः
ॐ पद्म-प्रियायै नमः
ॐ सु-प्रसन्नायै नमः
ॐ प्रमोदायै नमः

ॐ प्रिय-पार्श्वगायै नमः
ॐ विश्व-भूषायै नमः ॥ ३१० ॥
ॐ कान्ति-मत्यै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ वीणा-रवोत्सुकायै नमः
ॐ रोचिष्कर्यै नमः
ॐ स्व-प्रकाशायै नमः
ॐ शोभमानायै नमः
ॐ विहङ्गमायै नमः
ॐ देवाङ्कस्थायै नमः
ॐ परिणत्यै नमः
ॐ काम-वत्सायै नमः ॥ ३२० ॥
ॐ महा-मत्यै नमः
ॐ इल्वलायै नमः
ॐ उत्पल-नाभायै नमः
ॐ आधि-शमन्यै नमः
ॐ वर-वर्णिन्यै नमः
ॐ स्व-निष्ठायै नमः
ॐ पद्म-निलयायै नमः
ॐ सद्-गत्यै नमः
ॐ पद्म-गन्धिन्यै नमः
ॐ पद्म-वर्णायै नमः ॥ ३३० ॥
ॐ काम-योन्यै नमः
ॐ चण्डिकायै नमः
ॐ चारु-कोपनायै नमः
ॐ रति-स्नुषायै नमः
ॐ पद्म-धरायै नमः
ॐ पूज्यायै नमः
ॐ त्रैलोक्य-मोहिन्यै नमः
ॐ नित्य-कन्यायै नमः
ॐ बिन्दु-मालिन्यै नमः
ॐ अक्षयायै नमः ॥ ३४० ॥

ॐ सर्व-गन्धिन्यै नमः
ॐ गन्धात्मिकायै नमः
ॐ सु-रसिकायै नमः
ॐ दीप्त-मूर्त्यै नमः
ॐ सु-मध्यमायै नमः
ॐ पृथु-श्रोण्यै नमः
ॐ सौम्य-मुख्यै नमः
ॐ सुभगायै नमः
ॐ विष्टर-श्रुत्यै नमः
ॐ स्मिताननायै नमः ॥ ३५० ॥
ॐ चारु-गत्यै नमः
ॐ निम्न-नाभ्यै नमः
ॐ महा-स्तन्यै नमः
ॐ स्निग्ध-वेण्यै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ सु-कान्तायै नमः
ॐ वाम-लोचनायै नमः
ॐ पल्लवाङ्घ्र्यै नमः
ॐ पद्म-मनसे नमः
ॐ पद्म-बोधायै नमः ॥ ३६० ॥
ॐ महाऽप्सरसे नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ चारु-हासायै नमः
ॐ शुभ-दृष्ट्यै नमः
ॐ ककुद्मिन्यै नमः
ॐ कम्बु-ग्रीवायै नमः
ॐ सु-जघनायै नमः
ॐ रक्त-पाण्यै नमः
ॐ मनोरमायै नमः
ॐ पद्मिन्यै नमः ॥ ३७० ॥
ॐ मन्द-गमनायै नमः
ॐ चतुर्दंष्ट्रायै नमः

ॐ चतुर्भुजायै नमः
ॐ शुभ-रेखायै नमः
ॐ विलास-भ्रुवे नमः
ॐ शुक-वाण्यै नमः
ॐ कला-वत्यै नमः
ॐ ऋतु-नासायै नमः
ॐ कल-रवायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः ॥ ३८० ॥
ॐ तलोदर्यै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः
ॐ बिम्बाधरायै नमः
ॐ पूर्व-भाषिण्यै नमः
ॐ श्रीसमाह्वयायै नमः
ॐ इक्षु-चापायै नमः
ॐ सुम-शरायै नमः
ॐ दिव्य-भूषायै नमः
ॐ मनोहरायै नमः
ॐ वासव्यै नमः ॥ ३९० ॥
ॐ पाण्डरच्छत्रायै नमः
ॐ करभोरवे नमः
ॐ तिलोत्तमायै नमः
ॐ सीमन्तिन्यै नमः
ॐ प्राण-शक्त्यै नमः
ॐ विभीषिण्यै नमः
ॐ असु-धारिण्यै नमः
ॐ भद्रायै नमः
ॐ जयावहायै नमः
ॐ चन्द्र-वदनायै नमः ॥ ४०० ॥
ॐ कुटिलालकायै नमः
ॐ चित्राम्बरायै नमः
ॐ चित्र-गन्धायै नमः
ॐ रत्न-मौलि-समुज्ज्वलायै नमः

ॐ दिव्यायुधायै नमः
ॐ दिव्य-माल्यायै नमः
ॐ विशाखायै नमः
ॐ चित्र-वाहनायै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ सिन्धु-तनयायै नमः ॥ ४१० ॥
ॐ निःश्रेण्यै नमः
ॐ सु-महासिन्यै नमः
ॐ साम-प्रियायै नमः
ॐ नव-मृग्यै नमः
ॐ सर्व-सेव्यायै नमः
ॐ वराङ्गनायै नमः
ॐ गन्ध-द्वारायै नमः
ॐ दुराधर्षायै नमः
ॐ नित्य-पुष्टायै नमः
ॐ करीषिण्यै नमः ॥ ४२० ॥
ॐ देव-जुष्टायै नमः
ॐ दिव्य-वर्णायै नमः
ॐ दिव्य-गन्धायै नमः
ॐ स्व-कर्दमायै नमः
ॐ अनन्त-रूपायै नमः
ॐ अनन्तस्थायै नमः
ॐ सर्वदाऽनन्त-सङ्गमायै नमः
ॐ यज्ञाशन्यै नमः
ॐ महा-वृष्ट्यै नमः
ॐ सर्व-पूज्यायै नमः ॥ ४३० ॥
ॐ वषट्-क्रियायै नमः
ॐ योग-प्रियायै नमः
ॐ वियन्नाभ्यै नमः
ॐ अनन्त-श्रियै नमः
ॐ अतीन्द्रियायै नमः
ॐ योगि-सेव्यायै नमः

ॐ सत्य-रतायै नमः
ॐ योग-मायायै नमः
ॐ पुरातन्यै नमः
ॐ सर्वेश्वर्यै नमः ॥ ४४० ॥
ॐ सु-तरुण्यै नमः
ॐ शरण्यायै नमः
ॐ धर्म-देवतायै नमः
ॐ सुतरायै नमः
ॐ संवृत-ज्योतिषे नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ योग-सिद्धिदायै नमः
ॐ सृष्टि-शक्त्यै नमः
ॐ द्योतमान-भूतायै नमः
ॐ मङ्गल-देवतायै नमः ॥ ४५० ॥
ॐ संहार-शक्त्यै नमः
ॐ प्रबलायै नमः
ॐ निरुपाधये नमः
ॐ परा-वरायै नमः
ॐ उत्तारिण्यै नमः
ॐ तारयन्त्यै नमः
ॐ शाश्वत्यै नमः
ॐ समितिं-जयायै नमः
ॐ महा-श्रियै नमः
ॐ अजहत्-कीर्त्यै नमः ॥ ४६० ॥
ॐ योग-श्रियै नमः
ॐ सिद्धि-साधन्यै नमः
ॐ पुण्य-श्रियै नमः
ॐ पुण्य-निलयायै नमः
ॐ ब्रह्म-श्रियै नमः
ॐ ब्राह्मण-प्रियायै नमः
ॐ राज-श्रियै नमः
ॐ राज-कलितायै नमः

ॐ फल-श्रियै नमः
ॐ स्वर्ग-दायिन्यै नमः ॥ ४७० ॥
ॐ देव-श्रियै नमः
ॐ अद्भुत-कथायै नमः
ॐ वेद-श्रियै नमः
ॐ श्रुति-मार्गिण्यै नमः
ॐ तमोपहायै नमः
ॐ अव्यय-निधये नमः
ॐ लक्ष्मणायै नमः
ॐ हृदयङ्गमायै नमः
ॐ मृत-सञ्जीविन्यै नमः
ॐ शुभ्रायै नमः ॥ ४८० ॥
ॐ चन्द्रिकायै नमः
ॐ सर्वतोमुख्यै नमः
ॐ सर्वोत्तमायै नमः
ॐ मित्र-विन्दायै नमः
ॐ मैथिल्यै नमः
ॐ प्रिय-दर्शनायै नमः
ॐ सत्यभामायै नमः
ॐ वेद-वेद्यायै नमः
ॐ सीतायै नमः
ॐ प्रणत-पोषिण्यै नमः ॥ ४९० ॥
ॐ मूल-प्रकृत्यै नमः
ॐ ईशानायै नमः
ॐ शिवदायै नमः
ॐ दीप्त-दीपिन्यै नमः
ॐ अभिप्रियायै नमः
ॐ स्वैर-वृत्त्यै नमः
ॐ रुक्मिण्यै नमः
ॐ सर्व-साक्षिण्यै नमः
ॐ गान्धारिण्यै नमः
ॐ पर-गत्यै नमः ॥ ५०० ॥

ॐ तत्त्व-गर्भायै नमः
ॐ भवाभवायै नमः
ॐ अन्तर्वर्त्यै नमः
ॐ महा-मुद्रायै नमः
ॐ विष्णु-दुर्गायै नमः
ॐ महा-बलायै नमः
ॐ मदयन्त्यै नमः
ॐ लोक-धारिण्यै नमः
ॐ अदृश्यायै नमः
ॐ सर्व-निष्कृत्यै नमः ॥ ५१० ॥
ॐ देव-सेनायै नमः
ॐ आत्म-फलदायै नमः
ॐ वसुधायै नमः
ॐ मुख्य-मातृकायै नमः
ॐ क्षीर-धारायै नमः
ॐ घृत-मय्यै नमः
ॐ जुह्वत्यै नमः
ॐ यज्ञ-दक्षिणायै नमः
ॐ योग-निद्रायै नमः
ॐ योग-रतायै नमः ॥ ५२० ॥
ॐ ब्रह्मचर्यायै नमः
ॐ दुरत्ययायै नमः
ॐ सिद्ध-पिच्छायै नमः
ॐ महा-दुर्गायै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ खग-वाहिन्यै नमः
ॐ जगत्-प्रियायै नमः
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ सु-वर्णायै नमः
ॐ क्रूर-तापिन्यै नमः ॥ ५३० ॥
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ काल-रात्र्यै नमः

ॐ निशि-दृष्टायै नमः
ॐ करालिकायै नमः
ॐ त्रि-शूलिन्यै नमः
ॐ खड्ग-धरायै नमः
ॐ महा-काल्यै नमः
ॐ इन्द्र-मालिन्यै नमः
ॐ एक-वीरायै नमः
ॐ भद्र-काल्यै नमः ॥ ५४० ॥
ॐ सौनन्द्यै नमः
ॐ उल्लसद्-गदायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ जगत्-पूरिण्यै नमः
ॐ उर्वरायै नमः
ॐ द्रुहिण-प्रस्वै नमः
ॐ यज्ञ-कामायै नमः
ॐ लेलिहानायै नमः
ॐ तीर्थ-कर्यै नमः
ॐ उग्र-विक्रमायै नमः ॥ ५५० ॥
ॐ गरुत्मदुदयायै नमः
ॐ अत्युग्रायै नमः
ॐ वाराह्यै नमः
ॐ मातृ-भाषिण्यै नमः
ॐ अश्व-क्रान्तायै नमः
ॐ रथ-क्रान्तायै नमः
ॐ विष्णु-क्रान्तायै नमः
ॐ उरु-चारिण्यै नमः
ॐ वैरोचिन्यै नमः
ॐ नारसिंह्यै नमः ॥ ५६० ॥
ॐ जीमूतायै नमः
ॐ शुभदेक्षणायै नमः
ॐ दीक्षा-विधायै नमः
ॐ विश्व-शक्त्यै नमः

ॐ निज-शक्त्यै नमः
ॐ सुदर्शिन्यै नमः
ॐ प्रतीत्यै नमः
ॐ जगत्यै नमः
ॐ वन्य-धारिण्यै नमः
ॐ कलि-नाशिन्यै नमः ॥ ५७० ॥
ॐ अयोध्यायै नमः
ॐ अच्छिन्न-सन्तानायै नमः
ॐ महा-रत्नायै नमः
ॐ सुखावहायै नमः
ॐ राज-वर्त्यै नमः
ॐ अर्क-प्रतिभायै नमः
ॐ विनयित्र्यै नमः
ॐ महाऽशनायै नमः
ॐ अमृत-स्यन्दिन्यै नमः
ॐ सीमायै नमः ॥ ५८० ॥
ॐ यज्ञ-गर्भायै नमः
ॐ समीक्षणायै नमः
ॐ आकूत्यै नमः
ॐ ऋग्-यजुः-साम-घोषायै नमः
ॐ आराम-वधूत्सुकायै नमः
ॐ सोमपायै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ नित्य-कल्याण्यै नमः
ॐ कमलार्चितायै नमः
ॐ योग-रूढ्यै नमः ॥ ५९० ॥
ॐ स्वार्थ-जुष्टायै नमः
ॐ वह्नि-वर्णायै नमः
ॐ जितासुरायै नमः
ॐ यज्ञ-विद्यायै नमः
ॐ गुह्य-विद्यायै नमः
ॐ अध्यात्म-विद्यायै नमः

ॐ कृतागमायै नमः
ॐ आप्यायिन्यै नमः
ॐ कलातीतायै नमः
ॐ सु-मित्रायै नमः ॥ ६०० ॥
ॐ पर-भक्तिदायै नमः
ॐ काङ्क्षमाणायै नमः
ॐ महा-मायायै नमः
ॐ कोल-कामायै नमः
ॐ अमरावत्यै नमः
ॐ सु-वीर्यायै नमः
ॐ दुःस्वप्न-हरायै नमः
ॐ देवक्यै नमः
ॐ वसु-देवतायै नमः
ॐ सौदामिन्यै नमः ॥ ६१० ॥
ॐ मेघ-रथायै नमः
ॐ ऋद्धिदायै नमः
ॐ दैत्य-मर्दिन्यै नमः
ॐ श्रेयस्कर्यै नमः
ॐ चित्र-लीलायै नमः
ॐ एकायन्यै नमः
ॐ रत्न-पादुकायै नमः
ॐ मनस्यमानायै नमः
ॐ तुलस्यै नमः
ॐ रोग-नाशिन्यै नमः ॥ ६२० ॥
ॐ उरु-प्रथायै नमः
ॐ तेजस्विन्यै नमः
ॐ सुखोज्ज्वालायै नमः
ॐ मन्द-रेखायै नमः
ॐ अमृताशिन्यै नमः
ॐ ब्रह्मिष्ठायै नमः
ॐ वह्नि-शमन्यै नमः
ॐ जुषमाणायै नमः

ॐ गुणात्ययायै नमः
ॐ कादम्बर्यै नमः ॥ ६३० ॥
ॐ ब्रह्म-रतायै नमः
ॐ विधात्र्यै नमः
ॐ उज्ज्वल-हस्तिकायै नमः
ॐ अक्षोभ्यायै नमः
ॐ सर्वतो-भद्रायै नमः
ॐ वयस्यायै नमः
ॐ स्वस्ति-दक्षिणायै नमः
ॐ सहस्रास्यायै नमः
ॐ ज्ञान-मात्रे नमः
ॐ वैश्वानर्यै नमः ॥ ६४० ॥
ॐ अक्ष-वर्तिन्यै नमः
ॐ प्रत्यग्-वरायै नमः
ॐ वारण-वत्यै नमः
ॐ अनसूयायै नमः
ॐ दुरासदायै नमः
ॐ अरुन्धत्यै नमः
ॐ कुण्डलिन्यै नमः
ॐ भव्यायै नमः
ॐ दुर्गति-नाशिन्यै नमः
ॐ मृत्युञ्जयायै नमः ॥ ६५० ॥
ॐ त्रास-हरायै नमः
ॐ निर्भयायै नमः
ॐ शत्रु-सूदिन्यै नमः
ॐ एकाक्षरायै नमः
ॐ सु-पुरन्ध्र्यै नमः
ॐ सुर-पक्षायै नमः
ॐ वरातुलायै नमः
ॐ सकृद्-विभासायै नमः
ॐ प्रद्युम्नायै नमः
ॐ हरि-भद्रायै नमः ॥ ६६० ॥

ॐ धुरन्धरायै नमः
ॐ बिल्व-प्रियायै नमः
ॐ अवन्यै नमः
ॐ चक्र-हृदयायै नमः
ॐ कम्बु-तीर्थगायै नमः
ॐ सर्व-मन्त्रात्मिकायै नमः
ॐ विद्युते नमः
ॐ यशोदायै नमः
ॐ सर्व-रञ्जिन्यै नमः
ॐ ध्वजच्छत्राश्रयायै नमः ॥ ६७० ॥
ॐ भूम्यै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ सद्-गुणोज्ज्वलायै नमः
ॐ सुषेणायै नमः
ॐ लोक-विदितायै नमः
ॐ काम-सुवे नमः
ॐ जगदादि-भुवे नमः
ॐ वेदान्त-योन्यै नमः
ॐ जिज्ञासायै नमः
ॐ मनीषायै नमः ॥ ६८० ॥
ॐ सम-दर्शिन्यै नमः
ॐ सहस्र-शक्त्यै नमः
ॐ आवृत्त्यै नमः
ॐ सु-स्थिरायै नमः
ॐ श्रेयसां निधये नमः
ॐ रोहिण्यै नमः
ॐ रेवत्यै नमः
ॐ चन्द्र-सोदर्यै नमः
ॐ भद्र-मोदिन्यै नमः
ॐ आर्यायै नमः ॥ ६९० ॥
ॐ गव्य-प्रियायै नमः
ॐ विश्व-भाविन्यै नमः

ॐ सु-विभाविन्यै नमः
ॐ सु-प्रदृश्यायै नमः
ॐ काम-चारिण्यै नमः
ॐ अप्रमत्तायै नमः
ॐ ललन्तिकायै नमः
ॐ मोक्ष-लक्ष्म्यै नमः
ॐ जगद्योन्यै नमः
ॐ व्योम-लक्ष्म्यै नमः ॥ ७०० ॥
ॐ सु-दुर्लभायै नमः
ॐ भास्कर्यै नमः
ॐ पुण्य-गेहस्थायै नमः
ॐ मनोज्ञायै नमः
ॐ विभव-प्रदायै नमः
ॐ लोक-स्वामिन्यै नमः
ॐ अच्युतार्थायै नमः
ॐ पुष्कलायै नमः
ॐ जगदाकृत्यै नमः
ॐ विचित्र-हारिण्यै नमः ॥ ७१० ॥
ॐ कान्तायै नमः
ॐ पावन्यै नमः
ॐ भूत-भाविन्यै नमः
ॐ प्राणिन्यै नमः
ॐ प्राणदायै नमः
ॐ विदुष्यै नमः
ॐ विश्व-ब्रह्माण्ड-वासिन्यै नमः
ॐ सम्पूर्णायै नमः
ॐ परमोत्साहायै नमः
ॐ श्रीमत्यै नमः ॥ ७२० ॥
ॐ श्री-पत्यै नमः
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ श्रयन्त्यै नमः
ॐ श्रयमाणायै नमः

ॐ क्षमायै नमः
ॐ विश्व-रूपायै नमः
ॐ प्रसादिन्यै नमः
ॐ हर्षिण्यै नमः
ॐ प्रथमायै नमः
ॐ सर्वायै नमः ॥ ७३० ॥
ॐ विशालायै नमः
ॐ काम-वर्षिण्यै नमः
ॐ सु-प्रतीकायै नमः
ॐ पृश्नि-मत्यै नमः
ॐ निवृत्त्यै नमः
ॐ विविधायै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ सु-यज्ञायै नमः
ॐ मधुरायै नमः
ॐ श्रीदायै नमः ॥ ७४० ॥
ॐ देव-रात्यै नमः
ॐ महा-मनसे नमः
ॐ स्थूलायै नमः
ॐ सर्वाकृत्यै नमः
ॐ सूक्ष्मायै नमः
ॐ निम्न-गव्यायै नमः
ॐ तमोनुदायै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ वागीश्वर्यै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः ॥ ७५० ॥
ॐ सर्वायै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ स्वरु-शोषिण्यै नमः
ॐ शक्त्यात्मिकायै नमः
ॐ शब्द-शक्त्यै नमः
ॐ विशिष्टायै नमः

ॐ वायु-मत्यै नमः
ॐ अमायै नमः
ॐ आन्वीक्षिक्यै नमः
ॐ त्रयी-वार्तायै नमः ॥ ७६० ॥
ॐ दण्ड-नीत्यै नमः
ॐ नियामिकायै नमः
ॐ व्याल्यै नमः
ॐ सङ्कर्षण्यै नमः
ॐ द्योतायै नमः
ॐ महा-देव्यै नमः
ॐ अपराजितायै नमः
ॐ कपिलायै नमः
ॐ पिङ्गलायै नमः
ॐ स्वस्थायै नमः ॥ ७७० ॥
ॐ बलाक्यै नमः
ॐ घोष-नन्दिन्यै नमः
ॐ अजितायै नमः
ॐ कर्षण्यै नमः
ॐ क्षान्त्यै नमः
ॐ गरुडायै नमः
ॐ गरुडासनायै नमः
ॐ ह्लादिन्यै नमः
ॐ अनुग्रहायै नमः
ॐ नित्यायै नमः ॥ ७८० ॥
ॐ ब्रह्म-विद्यायै नमः
ॐ हिरण्मय्यै नमः
ॐ मह्यै नमः
ॐ शुद्ध-विधायै नमः
ॐ पृथ्व्यै नमः
ॐ शतानन्दायै नमः
ॐ अंशु-मालिन्यै नमः
ॐ यज्ञाश्रयायै नमः

ॐ ख्याति-परायै नमः
ॐ स्तव्यायै नमः ॥ ७९० ॥
ॐ घृष्ट्यै नमः
ॐ त्रि-कालगायै नमः
ॐ सम्बोधिन्यै नमः
ॐ शब्द-पूर्णायै नमः
ॐ विजयायै नमः
ॐ अंशु-मत्यै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ स्तुति-प्रियायै नमः
ॐ ख्यात्यै नमः ॥ ८०० ॥
ॐ जीवयन्त्यै नमः
ॐ पुनर्वसवे नमः
ॐ दीक्षायै नमः
ॐ भक्तार्तिहायै नमः
ॐ रक्षायै नमः
ॐ परीक्षायै नमः
ॐ यज्ञ-सम्भवायै नमः
ॐ आर्द्रायै नमः
ॐ पुष्करिण्यै नमः
ॐ पुण्यायै नमः ॥ ८१० ॥
ॐ गण्यायै नमः
ॐ दारिद्र्य-भञ्जिन्यै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ मान्यायै नमः
ॐ पद्म-नेम्यै नमः
ॐ भार्गव्यै नमः
ॐ वंश-वर्धिन्यै नमः
ॐ तीक्ष्ण-प्रवृत्त्यै नमः
ॐ सत्-कीर्त्यै नमः
ॐ निधि-सेव्यायै नमः ॥ ८२० ॥

ॐ अघ-नाशिन्यै नमः
ॐ संज्ञायै नमः
ॐ निःसंशयायै नमः
ॐ पूर्वायै नमः
ॐ वन-मालायै नमः
ॐ वसुन्धरायै नमः
ॐ पृथ्व्यै नमः
ॐ महोत्कटायै नमः
ॐ अहल्यायै नमः
ॐ मण्डलायै नमः ॥ ८३० ॥
ॐ आश्रित-मानदायै नमः
ॐ सर्वस्यै नमः
ॐ नित्योदितायै नमः
ॐ उदारायै नमः
ॐ जृम्भमाणायै नमः
ॐ महोदयायै नमः
ॐ चन्द्र-कान्तोदितायै नमः
ॐ सूर्यायै नमः
ॐ चतुरश्रायै नमः
ॐ मनोजवायै नमः ॥ ८४० ॥
ॐ बालायै नमः
ॐ कुमार्यै नमः
ॐ युवत्यै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ भक्त-वत्सलायै नमः
ॐ मेदिन्यै नमः
ॐ उपनिषन्मिश्रायै नमः
ॐ सुम-वीरवे नमः
ॐ धनेश्वर्यै नमः
ॐ दुर्मर्षण्यै नमः ॥ ८५० ॥
ॐ सु-चरितायै नमः
ॐ बोधायै नमः

ॐ शोभायै नमः
ॐ सु-वर्चलायै नमः
ॐ यमुनायै नमः
ॐ अक्षौहिण्यै नमः
ॐ गङ्गायै नमः
ॐ मन्दाकिन्यै नमः
ॐ अमलाशयायै नमः
ॐ गोदायै नमः ॥ ८६० ॥
ॐ गोदावर्यै नमः
ॐ चन्द्र-भागायै नमः
ॐ कावेर्यै नमः
ॐ उदन्वत्यै नमः
ॐ सिनी-वाल्यै नमः
ॐ कुह्वै नमः
ॐ राकायै नमः
ॐ वारणायै नमः
ॐ सिन्धु-मत्यै नमः
ॐ अमायै नमः ॥ ८७० ॥
ॐ पूर्तये नमः
ॐ मायात्मिकायै नमः
ॐ स्फूर्तये नमः
ॐ व्याख्यायै नमः
ॐ सूत्रायै नमः
ॐ प्रजा-वत्यै नमः
ॐ वृद्धयै नमः
ॐ स्थित्यै नमः
ॐ ध्रुवायै नमः
ॐ बुद्धयै नमः ॥ ८८० ॥
ॐ त्रिगुणायै नमः
ॐ गुण-गह्वरायै नमः
ॐ अमोघायै नमः
ॐ शान्तिदायै नमः
ॐ सत्यायै नमः

ॐ ज्ञानदायै नमः
ॐ उत्कर्षिण्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ भामिन्यै नमः ॥ ८९० ॥
ॐ लोलायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ काम-दुघे नमः
ॐ विध्यै नमः
ॐ प्रज्ञायै नमः
ॐ रामायै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः
ॐ सुभद्रायै नमः
ॐ सर्व-मङ्गलायै नमः ॥ ९०० ॥
ॐ नन्दायै नमः
ॐ भद्रायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ रिक्तायै नमः
ॐ तिथि-पूर्णायै नमः
ॐ ऋतम्भरायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ कामेश्वर्यै नमः
ॐ निष्ठायै नमः
ॐ काम्यायै नमः ॥ ९१० ॥
ॐ रम्यायै नमः
ॐ धरायै नमः
ॐ स्मृत्यै नमः
ॐ शङ्खिन्यै नमः
ॐ चक्रिण्यै नमः
ॐ श्यामायै नमः
ॐ सामायै नमः
ॐ गोत्रायै नमः

ॐ रमायै नमः
ॐ द्युत्यै नमः ॥ ९२० ॥
ॐ शान्तिदायै नमः
ॐ स्तुत्यै नमः
ॐ सिद्धयै नमः
ॐ विराजायै नमः
ॐ अत्युज्ज्वलायै नमः
ॐ अव्ययायै नमः
ॐ वाण्यै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ इन्दिरायै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥ ९३० ॥
ॐ मेधायै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ अप्रमायै नमः
ॐ द्युतये नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ रति-रुषायै नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ धृत्यै नमः ॥ ९४० ॥
ॐ सभायै नमः
ॐ शिष्टायै नमः
ॐ इष्टायै नमः
ॐ शुच्यै नमः
ॐ धात्र्यै नमः
ॐ सु-धारायै नमः
ॐ अक्षोण्यजायै नमः
ॐ अमृतायै नमः
ॐ रमण्यै नमः
ॐ एकायै नमः ॥ ९५० ॥
ॐ शारदाम्बायै नमः

ॐ स-मेधायै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ शुभाक्षरायै नमः
ॐ रत्नावल्यै नमः
ॐ भारत्यै नमः
ॐ ईडायै नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ धियै नमः
ॐ केवलायै नमः ॥९६०॥
ॐ आत्मदायै नमः
ॐ यस्यै नमः
ॐ तस्यै नमः
ॐ शुद्धयै नमः
ॐ सोस्मितायै नमः
ॐ कस्यै नमः
ॐ नीलायै नमः
ॐ राधायै नमः
ॐ अमृतोद्भवायै नमः
ॐ विभूत्यै नमः ॥९७०॥

ॐ निष्कलायै नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ रक्षायै नमः
ॐ सु-विमलायै नमः
ॐ क्षमायै नमः
ॐ प्राप्त्यै नमः
ॐ वासन्तिका-लेखायै नमः
ॐ भूरि-बीजायै नमः
ॐ महाऽङ्गदायै नमः
ॐ वर-धुर्यायै नमः ॥९८०॥
ॐ स्वधायै नमः
ॐ ह्रियै नमः
ॐ भुवे नमः
ॐ कामिन्यै नमः
ॐ शोक-नाशिन्यै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ प्रीत्यै नमः
ॐ असहनायै नमः
ॐ नर्मदायै नमः

ॐ गोकुलाश्रयायै नमः ॥९९०॥
ॐ अर्क-प्रभायै नमः
ॐ रसेभायै नमः
ॐ श्री-निलयायै नमः
ॐ इन्दु-प्रभायै नमः
ॐ अद्भुतायै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ कृशानु-प्रभायै नमः
ॐ वज्र-लम्भनायै नमः
ॐ सर्व-भूमिदायै नमः
ॐ भोग-प्रियायै नमः ॥१०००॥
ॐ भोग-वत्यै नमः
ॐ भोगीन्द्र-शयनासनायै नमः
ॐ अश्व-पूर्वायै नमः
ॐ रथ-मध्यायै नमः
ॐ हस्ति-नाद-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ सर्व-लक्षण-लक्षण्यायै नमः
ॐ सर्व-लोक-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यायै नमः
ॐ दृष्टादृष्ट-फल-प्रदायै नमः ॥१००९॥

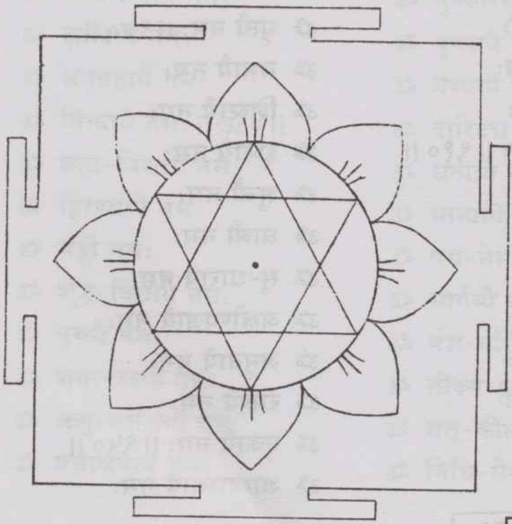

पूजन-तर्पण और हवन

उक्त नाम-मन्त्रों के अन्त में **'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः'** जोड़कर **'यन्त्र-राज'** में गन्धाक्षत, कुंकुम, पुष्प से **'पूजन-तर्पण'** करना चाहिए।

'नाम-मन्त्रों' के अन्त में **'स्वाहा'** जोड़कर **'हवन'** करना चाहिए।

सविधि

श्रीकाली-सहस्र-नाम-साधना

किसी भी देवता की उपासना में उसके **'सहस्र-नाम'** का अपना विशेष महत्त्व होता है। प्रायः लोग अपने इष्ट-देवता के **'सहस्र-नाम-स्तोत्र'** का पाठ ही करते हैं, किन्तु विशेष फल की प्राप्ति चाहनेवाले भक्त-जन **'सहस्र-नाम'** के द्वारा विशेष साधना करते हैं और अभीष्ट को पाने में सफल भी होते हैं।

ऐसी साधना में भगवती के सहस्र-नामों में से प्रत्येक नाम का **'चतुर्थ्यन्त'-रूप** लेना पड़ता है। संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति सम्प्रदान कारक की बोधक है। किसी शब्द के अन्त में इस चतुर्थी विभक्ति के लगने से उस शब्द के अर्थ में **'के लिए'** का भाव जुड़ जाता है। उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत **'श्रीकाली-सहस्र-नाम'** का पहला नाम **'श्मशान-कालिका'** है। इसमें चतुर्थी विभक्ति लगाने से इस नाम का रूप बनता है— **'श्मशान-कालिकायै'**, जिसका भावार्थ होगा **'श्मशान-कालिका के लिए'**। इसी प्रकार चतुर्थ्यन्त नाम-रूप के अन्त में **'नमः'**, **'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः'** और **'नमः स्वाहा'** जोड़ने से प्रत्येक नाम के प्रति क्रमशः **नमन, पूजन-तर्पण और होम** की क्रिया सम्पन्न करने के वाक्य बन जाते हैं। अतः यह **'नामावलि'** सभी श्रद्धालु जनों के लिए अति उपयोगी है। इसके द्वारा **जप, पूजन-तर्पण, हवन** कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। **—सम्पादक**

सङ्कल्प— ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वराह-कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्त-देशे पुण्य-क्षेत्रे कलियुगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-सम्वत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रो अमुक-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) अहं श्रीकालिका-प्रीत्यर्थं श्रीकालिका-सहस्र-नाम-मन्त्रैः यजनं करिष्ये।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीकालिका-सहस्र-नाम-माला-मन्त्रस्य महाकाल भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीदक्षिण-कालिका देवता, कं वीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, श्रीकालिका-प्रीत्यर्थं श्रीकालिका-सहस्र-नाम-जपे विनियोगः।

(विशेष : सहस्र-नामावली के नाम-मन्त्रों के **'जप'** मात्र का अनुष्ठान करते समय उक्त विनियोग करना चाहिए। यदि नाम-मन्त्रों के द्वारा **'पूजन'** करना हो, तो **'जपे विनियोगः'** के स्थान पर **'पूजने विनियोगः'** पढ़े और यदि पूजन के साथ **'तर्पण'** भी करना हो, तो **'पूजने तर्पणे च विनियोगः'** पढ़ें। नाम-मन्त्रों से होम करना हो, तो **'होमे विनियोगः'** पढ़ें।))

ऋष्यादि-न्यास— श्रीमहा-काल-भैरव-ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीदक्षिण-कालिका-देवतायै नमः हृदये, कं बीजाय नमः गुह्ये, ईं शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नमः नाभौ, श्रीकालिका-प्रीत्यर्थं नाम-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

(विशेष : ऊपर नाम-मन्त्र द्वारा **'पूजन'** करते समय **'नाम-जपे विनियोगाय नमः'** के स्थान पर **'नाम-पूजने विनियोगाय नमः'** और **'पूजन-तर्पण'** दोनों करते समय **'नाम-पूजने तर्पणे च विनियोगाय नमः'** पढ़ें तथा **'हवन' करना हो, तो 'नाम-होमे विनियोगाय नमः'** पढ़ें।)।

कर-न्यास— क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, क्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, क्रैं अनामिकाभ्यां हुं, क्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, क्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास— क्रां हृदयाय नमः, क्रीं शिरसे स्वाहा, क्रूं शिखायै वषट्, क्रैं कवचाय हुं, क्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, क्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान— **सद्यश्छिन्न-शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीम्।**
घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलिम्॥
सृक्कासृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालंकृतिम्।
श्यामाङ्गीं कृत-मेखलां शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम्॥

मानस-पूजन— लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं निवेदयामि।

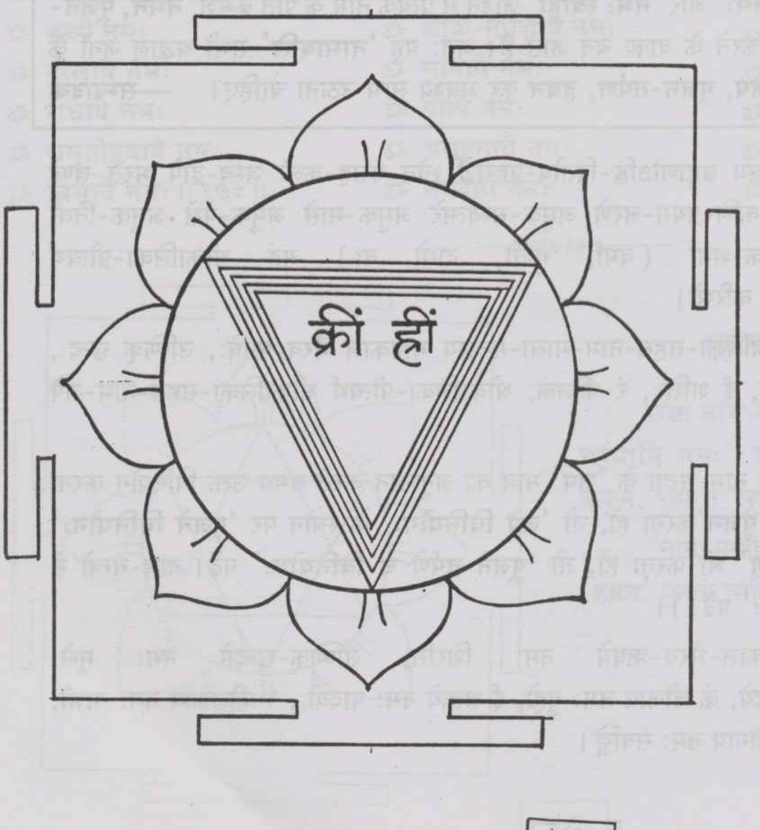

पूजन-तर्पण और हवन

'नाम-मन्त्रों' के अन्त में **'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः'** जोड़कर भगवती काली के **'यन्त्र-राज'** में गन्धाक्षत, कुंकुम, रक्त-पुष्प से **'पूजन-तर्पण'** करना चाहिए।

'नाम-मन्त्रों' के अन्त में **'स्वाहा'** जोड़कर **'हवन'** करना चाहिए।

'एकाक्षर-बीज'-सम्पुटित

श्रीकाली-सहस्र-नामावलि

ॐ क्रीं श्रीश्मशान-कालिकायै नमः
ॐ क्रीं काल्यै नमः
ॐ क्रीं भद्र-काल्यै नमः
ॐ क्रीं कपालिन्यै नमः
ॐ क्रीं गुह्य-काल्यै नमः
ॐ क्रीं महा-काल्यै नमः
ॐ क्रीं कुरु-कुल्लायै नमः
ॐ क्रीं विरोधिन्यै नमः
ॐ क्रीं कालिकायै नमः
ॐ क्रीं काल-राव्यै नमः ।। १०
ॐ क्रीं महा-काल-नितम्बिन्यै नमः
ॐ क्रीं काल-भैरव-भार्यायै नमः
ॐ क्रीं कुल-वर्त्म-प्रकाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं कामदा-कामिन्यै नमः
ॐ क्रीं कन्यायै नमः
ॐ क्रीं कमनीय-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं कस्तूरी-रस-लिप्तांग्यै नमः
ॐ क्रीं कुञ्जरेश्वर-गामिन्यै नमः
ॐ क्रीं ककार-वर्ण-सर्वांग्यै नमः
ॐ क्रीं कामिनी-काम-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं कामार्त्तायै नमः
ॐ क्रीं काम-रूपायै नमः
ॐ क्रीं काम-धेन्वै नमः
ॐ क्रीं कलावती-कान्तायै नमः
ॐ क्रीं काम-स्वरूपायै नमः

ॐ क्रीं कामाख्या-कुल-कामिन्यै नमः
ॐ क्रीं कुलीनायै नमः
ॐ क्रीं कुलवत्यम्बायै नमः
ॐ क्रीं दुर्गायै नमः
ॐ क्रीं दुर्गति-नाशिन्यै नमः ।। ३०
ॐ क्रीं कौमार्यै नमः
ॐ क्रीं कुलजायै नमः
ॐ क्रीं कृष्णायै नमः
ॐ क्रीं कृष्ण-देहायै नमः
ॐ क्रीं कृशोदर्यै नमः
ॐ क्रीं कृशांग्यै नमः
ॐ क्रीं कुलिशाङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं क्रीङ्कार्यै नमः
ॐ क्रीं कमलायै नमः
ॐ क्रीं कलायै नमः ।। ४०
ॐ क्रीं करालास्यायै नमः
ॐ क्रीं कराल्यै नमः
ॐ क्रीं कुल-कान्तापराजितायै नमः
ॐ क्रीं उग्रायै नमः
ॐ क्रीं उग्र-प्रभायै नमः
ॐ क्रीं दीप्तायै नमः
ॐ क्रीं विप्र-चित्तायै नमः
ॐ क्रीं महा-बलायै नमः
ॐ क्रीं नीलायै नमः
ॐ क्रीं घनायै नमः ।। ५०

ॐ क्रीं मेघ-नादायै नमः
ॐ क्रीं मात्रायै नमः
ॐ क्रीं मुद्रायै नमः
ॐ क्रीं मिताऽमितायै नमः
ॐ क्रीं ब्राह्म्यै नमः
ॐ क्रीं नारायण्यै नमः
ॐ क्रीं भद्रायै नमः
ॐ क्रीं सुभद्रायै नमः
ॐ क्रीं भक्त-वत्सलायै नमः
ॐ क्रीं माहेश्वर्यै नमः ।। ६०
ॐ क्रीं चामुण्डायै नमः
ॐ क्रीं वाराह्यै नमः
ॐ क्रीं नारसिंहिकायै नमः
ॐ क्रीं वज्राङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं वज्र-कङ्कालायै नमः
ॐ क्रीं नृ-मुण्ड-स्रग्विण्यै नमः
ॐ क्रीं शिवायै नमः
ॐ क्रीं मालिन्यै नमः
ॐ क्रीं नर-मुण्डाली-गलद्-रक्त-विभूषणायै नमः
ॐ क्रीं रक्त-चन्दन-सिक्ताङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं सिन्दूरारुण-मस्तकायै नमः
ॐ क्रीं घोर-रूपायै नमः
ॐ क्रीं घोर-दंष्ट्रायै नमः
ॐ क्रीं घोरायै नमः

ॐ क्रीं घोर-तरायै नमः
ॐ क्रीं शुभायै नमः
ॐ क्रीं महा-दंष्ट्रायै नमः
ॐ क्रीं महा-मायायै नमः
ॐ क्रीं सु-दन्त्यै नमः
ॐ क्रीं युग-दन्तुरायै नमः ॥ ८०
ॐ क्रीं सुलोचनायै नमः
ॐ क्रीं विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ क्रीं विशालाक्ष्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिलोचनायै नमः
ॐ क्रीं शारदेन्दु-प्रसन्नास्यायै नमः
ॐ क्रीं स्फुरत्-स्मेराम्बुजेक्षणायै नमः
ॐ क्रीं अट्टहासायै नमः
ॐ क्रीं प्रफुल्लास्यायै नमः
ॐ क्रीं स्मेर-वक्त्रायै नमः
ॐ क्रीं सुभाषिण्यै नमः ॥ ९०
ॐ क्रीं प्रफुल्ल-पद्म-वदनायै नमः
ॐ क्रीं स्मितास्यायै नमः
ॐ क्रीं प्रिय-भाषिण्यै नमः
ॐ क्रीं कोटराक्ष्यै नमः
ॐ क्रीं कुल-श्रेष्ठायै नमः
ॐ क्रीं महत्यै नमः
ॐ क्रीं बहु-भाषिण्यै नमः
ॐ क्रीं सुमत्यै नमः
ॐ क्रीं कुमत्यै नमः
ॐ क्रीं चण्डायै नमः ॥ १००
ॐ क्रीं चण्ड-मुण्डाति-वेगिन्यै नमः
ॐ क्रीं प्रचण्डायै नमः
ॐ क्रीं चण्डिकायै नमः
ॐ क्रीं चण्ड्यै नमः
ॐ क्रीं चर्चिकायै नमः
ॐ क्रीं चण्ड-वेगिन्यै नमः

ॐ क्रीं सुकेश्यै नमः
ॐ क्रीं मुक्त-केश्यै नमः
ॐ क्रीं दीर्घ-केश्यै नमः
ॐ क्रीं महा-कचायै नमः ॥ ११०
ॐ क्रीं प्रेत-देह-कर्ण-पूरायै नमः
ॐ क्रीं प्रेत-पाणि-सुमेखलायै नमः
ॐ क्रीं प्रेतासनायै नमः
ॐ क्रीं प्रिय-प्रेतायै नमः
ॐ क्रीं प्रेत-भूमि-कृतालयायै नमः
ॐ क्रीं श्मशान-वासिन्यै नमः
ॐ क्रीं पुण्यायै नमः
ॐ क्रीं पुण्यदायै नमः
ॐ क्रीं कुल-पण्डितायै नमः
ॐ क्रीं पुण्यालयायै नमः ॥ १२०
ॐ क्रीं पुण्य-देहायै नमः
ॐ क्रीं पुण्य-श्लोकायै नमः
ॐ क्रीं पावन्यै नमः
ॐ क्रीं पूतायै नमः
ॐ क्रीं पवित्रायै नमः
ॐ क्रीं परमायै नमः
ॐ क्रीं परायै नमः
ॐ क्रीं पुण्य-विभूषणायै नमः
ॐ क्रीं पुण्य-नाम्न्यै नमः
ॐ क्रीं भीति-हरायै नमः ॥ १३०
ॐ क्रीं वरदायै नमः
ॐ क्रीं खड्ग-पाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं नृ-मुण्ड-हस्तायै नमः
ॐ क्रीं शान्तायै नमः
ॐ क्रीं छिन्न-मस्तायै नमः
ॐ क्रीं सु-नासिकायै नमः
ॐ क्रीं दक्षिणायै नमः
ॐ क्रीं श्यामलायै नमः

ॐ क्रीं श्यामायै नमः
ॐ क्रीं शान्तायै नमः ॥ १४०
ॐ क्रीं पीनोन्नत-स्तन्यै नमः
ॐ क्रीं दिगम्बर्यै नमः
ॐ क्रीं घोर-रावायै नमः
ॐ क्रीं सृक्कान्त-रक्त-वाहिन्यै नमः
ॐ क्रीं घोर-रावायै नमः
ॐ क्रीं शिवा-सङ्गा-निःसङ्गायै नमः
ॐ क्रीं मदनातुरायै नमः
ॐ क्रीं मत्तायै नमः
ॐ क्रीं प्रमत्तायै नमः
ॐ क्रीं मदनायै नमः ॥ १५०
ॐ क्रीं सुधा-सिन्धु-निवासिन्यै नमः
ॐ क्रीं अति-मत्तायै नमः
ॐ क्रीं महा-मत्तायै नमः
ॐ क्रीं सर्वाकर्षण-कारिण्यै नमः
ॐ क्रीं गीत-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं वाद्य-रतायै नमः
ॐ क्रीं प्रेत-नृत्य-परायणायै नमः
ॐ क्रीं चतुर्भुजायै नमः
ॐ क्रीं दश-भुजायै नमः
ॐ क्रीं अष्टादश-भुजायै नमः ॥ १६०
ॐ क्रीं कात्यायन्यै नमः
ॐ क्रीं जगन्मात्रे नमः
ॐ क्रीं जगती-परमेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं जगद्-बन्धुर्जगद्-धात्र्यै नमः
ॐ क्रीं जगदानन्द-कारिण्यै नमः
ॐ क्रीं जगज्जीव-वत्यै नमः
ॐ क्रीं हैम-वत्यै नमः
ॐ क्रीं मायायै नमः
ॐ क्रीं महा-लयायै नमः
ॐ क्रीं नाग-यज्ञोपवीताङ्ग्यै नमः

ॐ क्रीं नागिन्यै नमः
ॐ क्रीं नाग-शायिन्यै नमः
ॐ क्रीं नाग-कन्यायै नमः
ॐ क्रीं देव-कन्यायै नमः
ॐ क्रीं गान्धार्यै नमः
ॐ क्रीं किन्नर्यै नमः
ॐ क्रीं ऐश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं मोह-रात्र्यै नमः
ॐ क्रीं महा-रात्र्यै नमः
ॐ क्रीं दारुणाभायै नमः ॥ १८०
ॐ क्रीं सुरासुर्यै नमः
ॐ क्रीं विद्याधर्यै नमः
ॐ क्रीं वसु-मत्यै नमः
ॐ क्रीं यक्षिण्यै नमः
ॐ क्रीं योगिन्यै नमः
ॐ क्रीं जरायै नमः
ॐ क्रीं राक्षस्यै नमः
ॐ क्रीं डाकिन्यै नमः
ॐ क्रीं वेद-मय्यै नमः
ॐ क्रीं वेद-विभूषणायै नमः ॥ १९०
ॐ क्रीं श्रुति-स्मृति-महा-विद्यायै नमः
ॐ क्रीं गुह्य-विद्यायै नमः
ॐ क्रीं पुरातन्यै नमः
ॐ क्रीं चिन्ताऽचिन्तायै नमः
ॐ क्रीं स्वधायै नमः
ॐ क्रीं स्वाहायै नमः
ॐ क्रीं निद्रायै नमः
ॐ क्रीं तन्द्रायै नमः
ॐ क्रीं पार्वत्यै नमः
ॐ क्रीं अपर्णायै नमः ॥ २००
ॐ क्रीं निश्चलायै नमः
ॐ क्रीं लोलायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-विद्या-तपस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं गङ्गायै नमः
ॐ क्रीं काश्यै नमः
ॐ क्रीं शच्यै नमः
ॐ क्रीं सीतायै नमः
ॐ क्रीं सत्यै नमः
ॐ क्रीं सत्य-परायणायै नमः
ॐ क्रीं नीत्यै नमः ॥ २१०
ॐ क्रीं सुनीत्यै नमः
ॐ क्रीं सुरुच्यै नमः
ॐ क्रीं तुष्टयै नमः
ॐ क्रीं पुष्टयै नमः
ॐ क्रीं धृत्यै नमः
ॐ क्रीं क्षमायै नमः
ॐ क्रीं वाण्यै नमः
ॐ क्रीं बुद्धयै नमः
ॐ क्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः
ॐ क्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ २२०
ॐ क्रीं नील-सरस्वत्यै नमः
ॐ क्रीं स्रोतस्वत्यै नमः
ॐ क्रीं स्रोत-वत्यै नमः
ॐ क्रीं मातङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं विजयायै नमः
ॐ क्रीं जयायै नमः
ॐ क्रीं नद्यै नमः
ॐ क्रीं सिन्धवे नमः
ॐ क्रीं सर्व-मय्यै नमः
ॐ क्रीं तारायै नमः ॥ २३०
ॐ क्रीं शून्य-निवासिन्यै नमः
ॐ क्रीं शुद्धायै नमः
ॐ क्रीं तरङ्गिण्यै नमः
ॐ क्रीं मेधायै नमः
ॐ क्रीं लाकिन्यै नमः
ॐ क्रीं बहु-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं सदानन्द-मय्यै नमः
ॐ क्रीं सत्यायै नमः
ॐ क्रीं सर्वानन्द-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं सुनन्दायै नमः ॥ २४०
ॐ क्रीं नन्दिन्यै नमः
ॐ क्रीं स्तुत्यायै नमः
ॐ क्रीं स्तवनीयायै नमः
ॐ क्रीं स्वभाविन्यै नमः
ॐ क्रीं रङ्किण्यै नमः
ॐ क्रीं टङ्किण्यै नमः
ॐ क्रीं चित्रायै नमः
ॐ क्रीं विचित्रायै नमः
ॐ क्रीं चित्र-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं पद्मायै नमः ॥ २५०
ॐ क्रीं पद्मालयायै नमः
ॐ क्रीं पद्म-मुख्यै नमः
ॐ क्रीं पद्म-विभूषणायै नमः
ॐ क्रीं शाकिन्यै नमः
ॐ क्रीं हाकिन्यै नमः
ॐ क्रीं क्षान्तायै नमः
ॐ क्रीं राकिण्यै नमः
ॐ क्रीं रुधिर-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं भ्रान्त्यै नमः
ॐ क्रीं भवान्यै नमः ॥ २६०
ॐ क्रीं रुद्राण्यै नमः
ॐ क्रीं मृडान्यै नमः
ॐ क्रीं शत्रु-मर्दिन्यै नमः
ॐ क्रीं उपेन्द्राण्यै नमः
ॐ क्रीं महेशान्यै नमः
ॐ क्रीं ज्योत्स्नायै नमः

ॐ क्रीं इन्द्र-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं सूर्यात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं रुद्र-पत्न्यै नमः
ॐ क्रीं रौद्र्यै नमः ॥ २७०
ॐ क्रीं स्त्रियै नमः
ॐ क्रीं प्रकृत्यै नमः
ॐ क्रीं पुंसे नमः
ॐ क्रीं शक्त्यै नमः
ॐ क्रीं सूक्त्यै नमः
ॐ क्रीं मति-मत्यै नमः
ॐ क्रीं भुक्त्यै नमः
ॐ क्रीं मुक्त्यै नमः
ॐ क्रीं पतिव्रतायै नमः
ॐ क्रीं सर्वेश्वर्यै नमः ॥ २८०
ॐ क्रीं सर्व-मात्रे नमः
ॐ क्रीं सर्वाण्यै नमः
ॐ क्रीं हर-वल्लभायै नमः
ॐ क्रीं सर्वज्ञायै नमः
ॐ क्रीं सिद्धिदायै नमः
ॐ क्रीं सिद्धायै नमः
ॐ क्रीं भाव्यायै नमः
ॐ क्रीं भव्यायै नमः
ॐ क्रीं भयापहायै नमः
ॐ क्रीं कर्त्र्यै नमः ॥ २९०
ॐ क्रीं हर्त्र्यै नमः
ॐ क्रीं पालयित्र्यै नमः
ॐ क्रीं शर्वर्यै नमः
ॐ क्रीं तामस्यै नमः
ॐ क्रीं दयायै नमः
ॐ क्रीं तमिस्रायै नमः
ॐ क्रीं यामिनीस्थायै नमः
ॐ क्रीं स्थिरायै नमः

ॐ क्रीं धीरायै नमः
ॐ क्रीं तपस्विन्यै नमः ॥ ३००
ॐ क्रीं चार्वङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं चञ्चलायै नमः
ॐ क्रीं लोल-जिह्वायै नमः
ॐ क्रीं चारु-चरित्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं त्रपायै नमः
ॐ क्रीं त्रपा-वत्यै नमः
ॐ क्रीं लज्जायै नमः
ॐ क्रीं निर्लज्जायै नमः
ॐ क्रीं ह्रियै नमः
ॐ क्रीं रजो-वत्यै नमः ॥ ३१०
ॐ क्रीं सत्त्व-वत्यै नमः
ॐ क्रीं धर्म-निष्ठायै नमः
ॐ क्रीं श्रेष्ठायै नमः
ॐ क्रीं निष्ठुर-वादिन्यै नमः
ॐ क्रीं गरिष्ठायै नमः
ॐ क्रीं दुष्ट-संहर्त्र्यै नमः
ॐ क्रीं विशिष्टायै नमः
ॐ क्रीं श्रेयस्यै नमः
ॐ क्रीं घृणायै नमः
ॐ क्रीं भीमायै नमः ॥ ३२०
ॐ क्रीं भयानकायै नमः
ॐ क्रीं भीम-नादिन्यै नमः
ॐ क्रीं भियै नमः
ॐ क्रीं प्रभा-वत्यै नमः
ॐ क्रीं वागीश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं श्रियै नमः
ॐ क्रीं यमुनायै नमः
ॐ क्रीं यज्ञ-कर्त्र्यै नमः
ॐ क्रीं यजुः-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं ऋक्-सामाथर्व-निलयायै नमः

ॐ क्रीं रागिण्यै नमः
ॐ क्रीं शोभन-स्वरायै नमः
ॐ क्रीं कल-कण्ठ्यै नमः
ॐ क्रीं कम्बु-कण्ठ्यै नमः
ॐ क्रीं वेणु-वीणा-परायणायै नमः
ॐ क्रीं वशिन्यै नमः
ॐ क्रीं वैष्णव्यै नमः
ॐ क्रीं स्वच्छायै नमः
ॐ क्रीं धात्र्यै नमः
ॐ क्रीं त्रि-जगदीश्वर्यै नमः ॥ ३४०
ॐ क्रीं मधु-मत्यै नमः
ॐ क्रीं कुण्डलिन्यै नमः
ॐ क्रीं ऋद्ध्यै नमः
ॐ क्रीं सिद्ध्यै नमः
ॐ क्रीं शुचि-स्मितायै नमः
ॐ क्रीं रम्भायै नमः
ॐ क्रीं उर्वश्यै नमः
ॐ क्रीं रत्यै नमः
ॐ क्रीं रामायै नमः
ॐ क्रीं रोहिण्यै नमः ॥ ३५०
ॐ क्रीं रेवत्यै नमः
ॐ क्रीं रमायै नमः
ॐ क्रीं शङ्खिन्यै नमः
ॐ क्रीं चक्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं कृष्णायै नमः
ॐ क्रीं गदिन्यै नमः
ॐ क्रीं पद्मिन्यै नमः
ॐ क्रीं शूलिन्यै नमः
ॐ क्रीं परिघास्त्रायै नमः
ॐ क्रीं पाशिन्यै नमः ॥ ३६०
ॐ क्रीं शार्ङ्ग-पाणिन्यै नमः
ॐ क्रीं पिनाक-धारिण्यै नमः

ॐ क्रीं धूम्रायै नमः
ॐ क्रीं सुरभ्यै नमः
ॐ क्रीं वन-मालिन्यै नमः
ॐ क्रीं वह्निण्यै नमः
ॐ क्रीं समर-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं वेगिन्यै नमः
ॐ क्रीं रण-पण्डितायै नमः
ॐ क्रीं जटिन्यै नमः ॥ ३७०
ॐ क्रीं बिम्बिन्यै नमः
ॐ क्रीं नीलायै नमः
ॐ क्रीं लावण्याम्बुधि-चन्द्रिकायै नमः
ॐ क्रीं बलि-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं सदा-पूज्यायै नमः
ॐ क्रीं पूर्णायै नमः
ॐ क्रीं दैत्येन्द्र-मन्थिन्यै नमः
ॐ क्रीं महिषासुर-संहन्त्र्यै नमः
ॐ क्रीं वासिन्यै नमः
ॐ क्रीं रक्त-दन्तिकायै नमः ॥ ३८०
ॐ क्रीं रक्तपायै नमः
ॐ क्रीं रुधिराक्ताङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं रक्त-खर्पर-हस्तिन्यै नमः
ॐ क्रीं रक्त-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं मांस-रुचिरासवासक्त-
मानसायै नमः
ॐ क्रीं गलच्छोणित-मुण्डालि-
कण्ठ-माला-विभूषणायै नमः
ॐ क्रीं शवासनायै नमः
ॐ क्रीं चितान्तः-स्थायै नमः
ॐ क्रीं माहेश्यै नमः
ॐ क्रीं वृष-वाहिन्यै नमः ॥ ३९०
ॐ क्रीं व्याघ्र-त्वगाम्बरायै नमः
ॐ क्रीं चीर-चेलिन्यै नमः

ॐ क्रीं सिंह-वाहिन्यै नमः
ॐ क्रीं वाम-देव्यै नमः
ॐ क्रीं महा-देव्यै नमः
ॐ क्रीं गौर्यै नमः
ॐ क्रीं सर्वज्ञ-भाविन्यै नमः
ॐ क्रीं बालिकायै नमः
ॐ क्रीं तरुण्यै नमः
ॐ क्रीं वृद्धायै नमः ॥ ४००
ॐ क्रीं वृद्ध-मात्रे नमः
ॐ क्रीं जरातुरायै नमः
ॐ क्रीं सु-भ्रुवे नमः
ॐ क्रीं विलासिन्यै नमः
ॐ क्रीं ब्रह्म-वादिन्यै नमः
ॐ क्रीं ब्राह्मण्यै नमः
ॐ क्रीं मह्यै नमः
ॐ क्रीं स्वप्नावत्यै नमः
ॐ क्रीं चित्र-लेखायै नमः
ॐ क्रीं लोपा-मुद्रायै नमः ॥ ४१०
ॐ क्रीं सुरेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं अमोघायै नमः
ॐ क्रीं अरुन्धत्यै नमः
ॐ क्रीं तीक्ष्णायै नमः
ॐ क्रीं भोग-वत्यनुवादिन्यै नमः
ॐ क्रीं मन्दाकिन्यै नमः
ॐ क्रीं मन्द-हासायै नमः
ॐ क्रीं ज्वाला-मुख्यसुरान्तकायै नमः
ॐ क्रीं मानदायै नमः
ॐ क्रीं मानिन्यै नमः ॥ ४२०
ॐ क्रीं मान्यायै नमः
ॐ क्रीं माननीयायै नमः
ॐ क्रीं मदोद्धतायै नमः
ॐ क्रीं मदिरायै नमः

ॐ क्रीं मदिरोन्मादायै नमः
ॐ क्रीं मेध्यायै नमः
ॐ क्रीं नव्यायै नमः
ॐ क्रीं प्रसादिन्यै नमः
ॐ क्रीं सु-मध्यानन्त-गुणिन्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-लोकोत्तमोत्तमायै नमः
ॐ क्रीं जयदायै नमः
ॐ क्रीं जित्वरायै नमः
ॐ क्रीं जेत्र्यै नमः
ॐ क्रीं जय-श्री-जय-शालिन्यै नमः
ॐ क्रीं सुखदायै नमः
ॐ क्रीं शुभदायै नमः
ॐ क्रीं सत्यायै नमः
ॐ क्रीं सभा-संक्षोभ-कारिण्यै नमः
ॐ क्रीं शिव-दूत्यै नमः
ॐ क्रीं भूति-मत्यै नमः ॥ ४४०
ॐ क्रीं विभूत्यै नमः
ॐ क्रीं भीषणाननायै नमः
ॐ क्रीं कौमार्यै नमः
ॐ क्रीं कुलजायै नमः
ॐ क्रीं कुन्त्यै नमः
ॐ क्रीं कुल-स्त्रियै नमः
ॐ क्रीं कुल-पालिकायै नमः
ॐ क्रीं कीर्तिर्यशस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं भूषायै नमः
ॐ क्रीं भूष्यायै नमः ॥ ४५०
ॐ क्रीं भूत-पति-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं सगुणायै नमः
ॐ क्रीं निर्गुणायै नमः
ॐ क्रीं धृष्टायै नमः
ॐ क्रीं निष्ठायै नमः
ॐ क्रीं काष्ठायै नमः

ॐ क्रीं प्रतिष्ठितायै नमः
ॐ क्रीं धनिष्ठायै नमः
ॐ क्रीं धनदायै नमः
ॐ क्रीं धन्यायै नमः ॥ ४६०
ॐ क्रीं वसुधायै नमः
ॐ क्रीं स्व-प्रकाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं उर्व्यै नमः
ॐ क्रीं गुर्व्यै नमः
ॐ क्रीं गुरु-श्रेष्ठायै नमः
ॐ क्रीं सगुणायै नमः
ॐ क्रीं त्रिगुणात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं महा-कुलीनायै नमः
ॐ क्रीं निष्कामायै नमः
ॐ क्रीं सकामायै नमः ॥ ४७०
ॐ क्रीं काम-जीवनायै नमः
ॐ क्रीं काम-देव-कलायै नमः
ॐ क्रीं रामाभिरामायै नमः
ॐ क्रीं शिव-नर्तक्यै नमः
ॐ क्रीं चिन्ता-मणि-कल्प-लतायै नमः
ॐ क्रीं जाग्रत्यै नमः
ॐ क्रीं दीन-वत्सलायै नमः
ॐ क्रीं कार्तिक्यै नमः
ॐ क्रीं कीर्तिकायै नमः
ॐ क्रीं कृत्यायै नमः ॥ ४८०
ॐ क्रीं अयोध्यायै नमः
ॐ क्रीं विषमायै नमः
ॐ क्रीं समायै नमः
ॐ क्रीं सुमन्त्रायै नमः
ॐ क्रीं मन्त्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं घूर्णायै नमः
ॐ क्रीं ह्लादिन्यै नमः
ॐ क्रीं क्लेश-नाशिन्यै नमः

ॐ क्रीं त्रैलोक्य-जनन्यै नमः
ॐ क्रीं हृष्टायै नमः ॥ ४९०
ॐ क्रीं निर्मांसायै नमः
ॐ क्रीं मनो-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं तड़ाग-निम्न-जठरायै नमः
ॐ क्रीं शुष्क-मांसास्थि-मालिन्यै नमः
ॐ क्रीं अवन्त्यै नमः
ॐ क्रीं मथुरायै नमः
ॐ क्रीं मायायै नमः
ॐ क्रीं त्रैलोक्य-पावनीश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं व्यक्ताव्यक्तानेक-मूर्त्यै नमः
ॐ क्रीं शर्वर्यै नमः ॥ ५००
ॐ क्रीं भीम-नादिन्यै नमः
ॐ क्रीं क्षेमङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं शङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-सम्मोह-कारिण्यै नमः
ॐ क्रीं ऊर्ध्व-तेजस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं क्लिन्नायै नमः
ॐ क्रीं महा-तेजस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं अद्वैतायै नमः
ॐ क्रीं भोगिन्यै नमः
ॐ क्रीं पूज्यायै नमः ॥ ५१०
ॐ क्रीं युवत्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-मङ्गलायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं भोग्यायै नमः
ॐ क्रीं धरण्यै नमः
ॐ क्रीं पिशिताशनायै नमः
ॐ क्रीं भयङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं पाप-हरायै नमः
ॐ क्रीं निष्कलङ्कायै नमः
ॐ क्रीं वशङ्कर्यै नमः ॥ ५२०

ॐ क्रीं आशायै नमः
ॐ क्रीं तृष्णायै नमः
ॐ क्रीं चन्द्र-कलायै नमः
ॐ क्रीं निद्रायै नमः
ॐ क्रीं वायु-वेगिन्यै नमः
ॐ क्रीं सहस्र-सूर्य-सङ्काशायै नमः
ॐ क्रीं चन्द्र-कोटि-सम-प्रभायै नमः
ॐ क्रीं वह्नि-मण्डल-संस्थायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-तत्त्व-प्रतिष्ठितायै नमः
ॐ क्रीं सर्वाचार-वत्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-देव-कन्याधिदेवतायै नमः
ॐ क्रीं दक्ष-कन्यायै नमः
ॐ क्रीं दक्ष-यज्ञ-नाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं दुर्ग-तारिण्यै नमः
ॐ क्रीं इज्यायै नमः
ॐ क्रीं पूज्यायै नमः
ॐ क्रीं विभी-भूत्यै नमः
ॐ क्रीं सत्कीर्तिर्ब्रह्म-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं रम्भोरुश्चतुरायै नमः
ॐ क्रीं राकायै नमः ॥ ५४०
ॐ क्रीं जयन्त्यै नमः
ॐ क्रीं करुणायै नमः
ॐ क्रीं कुहुर्मनस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं देव-मातायै नमः
ॐ क्रीं यशस्यायै नमः
ॐ क्रीं ब्रह्म-चारिण्यै नमः
ॐ क्रीं ऋद्धिदायै नमः
ॐ क्रीं वृद्धिदायै नमः
ॐ क्रीं वृद्धिः सर्वाद्यायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-दायिन्यै नमः ॥ ५५०
ॐ क्रीं आधार-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं ध्येयायै नमः

ॐ क्रीं मूलाधार-निवासिन्यै नमः
ॐ क्रीं आज्ञायै नमः
ॐ क्रीं प्रज्ञा-पूर्ण-मनाचन्द्र-
मुख्यानुकूलिन्यै नमः
ॐ क्रीं वावदूकायै नमः
ॐ क्रीं निम्न-नाभ्यै नमः
ॐ क्रीं सत्यायै नमः
ॐ क्रीं सन्ध्यायै नमः
ॐ क्रीं दृढ-व्रतायै नमः ॥ ५६०
ॐ क्रीं आन्वीक्षिक्यै नमः
ॐ क्रीं दण्ड-नीतिस्त्रय्यै नमः
ॐ क्रीं त्रि-दिव-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं ज्वलिन्यै नमः
ॐ क्रीं ज्वालिन्यै नमः
ॐ क्रीं शैल-तनयायै नमः
ॐ क्रीं विन्ध्य-वासिन्यै नमः
ॐ क्रीं अमेयायै नमः
ॐ क्रीं खेचर्यै नमः
ॐ क्रीं धैर्यायै नमः ॥ ५७०
ॐ क्रीं तुरीयायै नमः
ॐ क्रीं विमलातुरायै नमः
ॐ क्रीं प्रगल्भायै नमः
ॐ क्रीं वारुणीच्छायायै नमः
ॐ क्रीं शशिन्यै नमः
ॐ क्रीं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः
ॐ क्रीं भुक्त्यै नमः
ॐ क्रीं सिद्ध्यै नमः
ॐ क्रीं सदा-प्राप्त्यै नमः
ॐ क्रीं प्राकाम्यायै नमः ॥ ५८०
ॐ क्रीं महिमायै नमः
ॐ क्रीं अणिमायै नमः
ॐ क्रीं इच्छा-सिद्धिर्विसिद्धायै नमः

ॐ क्रीं वशित्वोर्ध्व-निवासिन्यै नमः
ॐ क्रीं लघिमायै नमः
ॐ क्रीं गायत्र्यै नमः
ॐ क्रीं सावित्र्यै नमः
ॐ क्रीं भुवनेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं मनोहरायै नमः
ॐ क्रीं चितायै नमः ॥ ५९०
ॐ क्रीं दिव्यायै नमः
ॐ क्रीं देव्युदारायै नमः
ॐ क्रीं मनोरमायै नमः
ॐ क्रीं पिङ्गलायै नमः
ॐ क्रीं कपिलायै नमः
ॐ क्रीं जिह्वा-रसज्ञायै नमः
ॐ क्रीं रसिकायै नमः
ॐ क्रीं रसायै नमः
ॐ क्रीं सुषुम्नायै नमः
ॐ क्रीं इडायै नमः ॥ ६००
ॐ क्रीं भोग-वत्यै नमः
ॐ क्रीं गान्धार्यै नमः
ॐ क्रीं नरकान्तकायै नमः
ॐ क्रीं पाञ्चाल्यै नमः
ॐ क्रीं रुक्मिण्यै नमः
ॐ क्रीं राधाऽऽराध्यायै नमः
ॐ क्रीं भीमाधि-राधिकायै नमः
ॐ क्रीं अमृतायै नमः
ॐ क्रीं तुलस्यै नमः
ॐ क्रीं वृन्दायै नमः ॥ ६१०
ॐ क्रीं कैटभ्यै नमः
ॐ क्रीं कपटेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं उग्र-चण्डेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं वीरायै नमः
ॐ क्रीं जनन्यै नमः

ॐ क्रीं वीर-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं उग्र-तारायै नमः
ॐ क्रीं यशोदाख्यायै नमः
ॐ क्रीं देवक्यै नमः
ॐ क्रीं देव-मानितायै नमः ॥ ६२०
ॐ क्रीं निरञ्जनायै ननमः
ॐ क्रीं चित्र-देव्यै नमः
ॐ क्रीं क्रोधिन्यै नमः
ॐ क्रीं कुल-दीपिकायै नमः
ॐ क्रीं कुल-वागीश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं वाण्यै नमः
ॐ क्रीं मातृकायै नमः
ॐ क्रीं द्राविण्यै नमः
ॐ क्रीं द्रवायै नमः
ॐ क्रीं योगेश्वर्यै नमः ॥ ६३०
ॐ क्रीं महा-मार्यै नमः
ॐ क्रीं भ्रामर्यै नमः
ॐ क्रीं विन्दु-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं दूत्यै नमः
ॐ क्रीं प्राणेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं गुप्तायै नमः
ॐ क्रीं बहुलायै नमः
ॐ क्रीं चामरी-प्रभायै नमः
ॐ क्रीं कुब्जिकायै नमः
ॐ क्रीं ज्ञानिन्यै नमः ॥ ६४०
ॐ क्रीं ज्येष्ठायै नमः
ॐ क्रीं भुशुण्ड्यै नमः
ॐ क्रीं प्रकटा-तिथ्यै नमः
ॐ क्रीं द्रविण्यै नमः
ॐ क्रीं गोपिन्यै नमः
ॐ क्रीं मायायै नमः
ॐ क्रीं काम-वीजेश्वर्यै नमः

ॐ क्रीं क्रियायै नमः
ॐ क्रीं शाम्भव्यै नमः
ॐ क्रीं केकरायै नमः ॥ ६५०
ॐ क्रीं मेनायै नमः
ॐ क्रीं मूषलास्त्रायै नमः
ॐ क्रीं तिलोत्तमायै नमः
ॐ क्रीं अमेय-विक्रमायै नमः
ॐ क्रीं क्रूरायै नमः
ॐ क्रीं सम्पत्-शालायै नमः
ॐ क्रीं त्रि-लोचनायै नमः
ॐ क्रीं सुस्थ्यै नमः
ॐ क्रीं हव्य-वहायै नमः
ॐ क्रीं प्रीतिरुष्मायै नमः ॥ ६६०
ॐ क्रीं धूम्रार्चिरङ्गदायै नमः
ॐ क्रीं तपिन्यै नमः
ॐ क्रीं तापिन्यै नमः
ॐ क्रीं विश्वायै नमः
ॐ क्रीं भोगदायै नमः
ॐ क्रीं धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं धरायै नमः
ॐ क्रीं त्रिखण्डायै नमः
ॐ क्रीं बोधिन्यै नमः
ॐ क्रीं वश्यायै नमः ॥ ६७०
ॐ क्रीं सकलायै नमः
ॐ क्रीं शब्द-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं वीज-रूपायै नमः
ॐ क्रीं महा-मुद्रायै नमः
ॐ क्रीं योगिन्यै नमः
ॐ क्रीं योनि-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं अनङ्ग-कुसुमानङ्ग-मेखलानङ्ग-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं वज्रेश्वर्यै नमः

ॐ क्रीं जयिन्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं षडङ्ग-युवत्यै नमः
ॐ क्रीं योग-युक्तायै नमः
ॐ क्रीं ज्वालांशु-मालिन्यै नमः
ॐ क्रीं दुराशयायै नमः
ॐ क्रीं दुराधारायै नमः
ॐ क्रीं दुर्जयायै नमः
ॐ क्रीं दुर्ग-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं दुरन्तायै नमः
ॐ क्रीं दुष्कृति-हरायै नमः
ॐ क्रीं दुर्ध्येयायै नमः ॥ ६९०
ॐ क्रीं दुरतिक्रमायै नमः
ॐ क्रीं हंसेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिकोणस्थायै नमः
ॐ क्रीं शाकम्भर्यनु-कम्पिन्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिकोण-निलयायै नमः
ॐ क्रीं नित्यायै नमः
ॐ क्रीं परमामृत-रञ्जितायै नमः
ॐ क्रीं महा-विद्येश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं श्वेतायै नमः
ॐ क्रीं भेरुण्डायै नमः ॥ ७००
ॐ क्रीं कुल-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं त्वरितायै नमः
ॐ क्रीं भक्त-संसक्तायै नमः
ॐ क्रीं भक्ति-वश्यायै नमः
ॐ क्रीं सनातन्यै नमः
ॐ क्रीं भक्तानन्द-मय्यै नमः
ॐ क्रीं भक्ति-भाविकायै नमः
ॐ क्रीं भक्त-शङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-सौन्दर्य-निलयायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-सौभाग्य-शालिन्यै नमः

ॐ क्रीं सर्व-सौभाग्य-भवनायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-सौख्य-निरूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-पूजन-रतायै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-व्रत-चारिण्यै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-भक्ति-सुखिन्यै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-रूप-धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-पूजक-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-प्रीतिदा-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-सेवका-सङ्गायै नमः
ॐ क्रीं कुमारी-सेवकालयायै नमः
ॐ क्रीं आनन्द-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं बालायै नमः
ॐ क्रीं भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं वटुक-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं श्मशान-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं काल-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं पुर-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं महा-भैरव-पत्न्यै नमः
ॐ क्रीं परमानन्द-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं सुधानन्द-भैरव्यै नमः ॥ ७३०
ॐ क्रीं उन्मादानन्द-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं मुक्तानन्द-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं तरुण-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं ज्ञानानन्द-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं अमृतानन्द-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं महा-भयङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं तीव्रायै नमः
ॐ क्रीं तीव्र-वेगायै नमः
ॐ क्रीं तपस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिपुरायै नमः ॥ ७४०
ॐ क्रीं परमेशान्यै नमः
ॐ क्रीं सुन्दर्यै नमः

ॐ क्रीं पुर-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिपुरेश्यै नमः
ॐ क्रीं पञ्चदश्यै नमः
ॐ क्रीं पञ्चम्यै नमः
ॐ क्रीं पुर-वासिन्यै नमः
ॐ क्रीं महा-सप्तदश्यै नमः
ॐ क्रीं षोडश्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिपुरेश्वर्यै नमः ॥ ७५०
ॐ क्रीं महांकुश-स्वरूपायै नमः
ॐ क्रीं महा-चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं नव-चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिपुर-मालिन्यै नमः
ॐ क्रीं राज-राजेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं धीरायै नमः
ॐ क्रीं महा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं सिन्दूर-पूर-रुचिरायै नमः
ॐ क्रीं श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ॥ ७६०
ॐ क्रीं सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं रक्तायै नमः
ॐ क्रीं रक्त-वस्त्रोत्तरीयिण्यै नमः
ॐ क्रीं जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त-चन्दन-धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त-चन्दन-रूप-धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं चामरी-बाल-कुटिल-निर्मल-श्याम-केशिन्यै नमः
ॐ क्रीं वज्र-मौक्तिक-रत्नाढ्य-किरीट-मुकुटोज्ज्वलायै नमः
ॐ क्रीं रत्न-कुण्डल-संसक्त-स्फुरद्-गण्ड-मनोरमायै नमः

ॐ क्रीं कुंजरेश्वर-कुम्भोत्थ-मुक्ता-रंजित-नासिकायै नमः
ॐ क्रीं मुक्ता-विद्रुम-माणिक्य-हाराढ्य-स्तन-मण्डलायै नमः
ॐ क्रीं सूर्य-कान्तेन्दु-कान्ताढ्य-स्पर्शाश्म-कण्ठ-भूषणायै नमः
ॐ क्रीं बीज-पूर-स्फुरद्-बीज-दन्त-पंक्तिरनुत्तमायै नमः
ॐ क्रीं काम-कोदण्डका-भुग्न-भ्रू-कटाक्ष-प्रवर्षिण्यै नमः
ॐ क्रीं मातङ्ग-कुम्भ-वक्षोजा-लसत्-कोक-नदेक्षणायै नमः
ॐ क्रीं मनोज्ञ-शष्कुली-कर्णायै नमः
ॐ क्रीं हंसी-गति-विडम्बिन्यै नमः
ॐ क्रीं पद्म-रागाङ्गद-ज्योति-र्दोश्चतुष्क-प्रकाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं नाना-मणि-परिस्फूर्ज-च्छुद्ध-कांचन-कङ्कणायै नमः
ॐ क्रीं नागेन्द्र-दन्त-निर्माण-वलयाङ्कित-पाणिन्यै नमः
ॐ क्रीं अंगुरीयक-चित्राङ्ग्यै नमः
ॐ क्रीं विचित्र-क्षुद्र-घण्टिकायै नमः
ॐ क्रीं पट्टाम्बर-परीधानायै नमः
ॐ क्रीं कल-मञ्जीर-शिञ्जिन्यै नमः
ॐ क्रीं कर्पूरागरु-कस्तूरी-कुंकुम-द्रव-लेपितायै नमः
ॐ क्रीं विचित्र-रत्न-पृथिवी-कल्प-शाखि-तल-स्थितायै नमः
ॐ क्रीं रत्न-द्वीप-स्फुरद्-रक्त-सिंहासन-विलासिन्यै नमः
ॐ क्रीं षट्-चक्र-भेदन-कर्यै नमः
ॐ क्रीं परमानन्द-रूपिण्यै नमः

ॐ क्रीं सहस्र-दल-पद्मान्तश्चन्द्र-मण्डल-वर्तिन्यै नमः
ॐ क्रीं ब्रह्म-रूप-शिव-क्रोड-नाना-सुख-विलासिन्यै नमः
ॐ क्रीं हर-विष्णु-विरिञ्चीन्द्र-ग्रह-नायक-सेवितायै नमः
ॐ क्रीं शिवायै नमः
ॐ क्रीं शैवायै नमः
ॐ क्रीं रुद्राण्यै नमः
ॐ क्रीं शिव-वादिन्यै नमः
ॐ क्रीं मातङ्गिन्यै नमः
ॐ क्रीं श्रीमत्यै नमः
ॐ क्रीं आनन्द-मेखलायै नमः
ॐ क्रीं डाकिन्यै नमः
ॐ क्रीं योगिन्यै नमः ॥ ८००
ॐ क्रीं उपयोगिन्यै नमः
ॐ क्रीं माहेश्वर्यै नमः
ॐ क्रीं वैष्णव्यै नमः
ॐ क्रीं भ्रामर्यै नमः
ॐ क्रीं शिव-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं अलम्बुषायै नमः
ॐ क्रीं वेग-वत्यै नमः
ॐ क्रीं क्रोध-रूपायै नमः
ॐ क्रीं सुमेखलायै नमः
ॐ क्रीं गान्धार्यै नमः ॥ ८१०
ॐ क्रीं हस्ति-जिह्वायै नमः
ॐ क्रीं इडायै नमः
ॐ क्रीं शुभङ्कर्यै नमः
ॐ क्रीं पिङ्गलायै नमः
ॐ क्रीं ब्रह्म-सूत्र्यै नमः
ॐ क्रीं सुषुम्नायै नमः
ॐ क्रीं गन्धिन्यै नमः

ॐ क्रीं आत्म-योन्यै नमः
ॐ क्रीं ब्रह्म-योन्यै नमः
ॐ क्रीं जगद्-योन्यै नमः ॥ ८२०
ॐ क्रीं अयोनिजायै नमः
ॐ क्रीं भग-रूपायै नमः
ॐ क्रीं भग-स्थात्र्यै नमः
ॐ क्रीं भगिन्यै नमः
ॐ क्रीं भग-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं भगात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं भगाधार-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं भग-मालिन्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्गाख्यायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्गेश्यै नमः ॥ ८३०
ॐ क्रीं त्रिपुरा-भैरव्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-गीत्यै नमः
ॐ क्रीं सुगीत्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्गस्थायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-रूप-धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-मानायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-भवायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-लिङ्गायै नमः
ॐ क्रीं पार्वत्यै नमः
ॐ क्रीं भग-वत्यै नमः ॥ ८४०
ॐ क्रीं कौशिक्यै नमः
ॐ क्रीं प्रेमायै नमः
ॐ क्रीं प्रियम्बदायै नमः
ॐ क्रीं गृध्र-रूपायै नमः
ॐ क्रीं शिवा-रूपायै नमः
ॐ क्रीं चक्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं चक्र-रूप-धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्गाभिधायिन्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-निवासिन्यै नमः

ॐ क्रीं लिङ्गस्थायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्गन्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-गीतिर्महा-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं भग-गीतिर्महा-सुखायै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-नाम-सदानन्दायै नमः
ॐ क्रीं भग-नाम-सदा-रत्यै नमः
ॐ क्रीं लिङ्ग-माला-कण्ठ-
भूषायै नमः
ॐ क्रीं भग-माला-विभूषणायै नमः
ॐ क्रीं भग-लिङ्गामृत-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं भग-लिङ्गामृतात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं भग-लिङ्गार्चन-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं भग-लिङ्ग-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं भग-लिङ्ग-स्वरूपायै नमः
ॐ क्रीं भग-लिङ्ग-सुखावहायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमार्चितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-प्राणायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमोत्थितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-स्नातायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-तर्पितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-घटितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-धारिण्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-तिलकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-चर्चितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-निरतायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-ग्रहायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-यज्ञांगायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-निचितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-प्रियायै नमः

ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमादान-
लालसोन्मत्त-मानसायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमानन्द-
लहरी-स्निग्ध-देहिन्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमाधारायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमा-कलायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-निलयायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-वासिन्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-स्निग्धायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-कारिण्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-पाणिकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-ध्यानायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-प्रभायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-ज्ञानायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-भोगिन्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमोल्लासायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-वर्षिण्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमोत्साहायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमोन्मादायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमाराध्यायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुमोद्भवायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-कुसुम-व्यग्रायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पुष्प-पूर्णितायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पूजक-प्रज्ञायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-होतृ-मातृकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-दातृ-रक्षित्र्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-रक्त-तारिकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पूजक-ग्रस्तायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-पूजक-प्रियायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-वन्दकाधारायै नमः

ॐ क्रीं स्वयम्भू-निन्दकान्तकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-प्रद-सर्वस्वायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-प्रद-पुत्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-प्रद-सस्मेरायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भू-प्रद-शरीरिण्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-कालोद्भव-प्रीतायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-कालोद्भवात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-कालोद्भवोद्भावायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-कालोद्भवोद्भवायै नमः
ॐ क्रीं कुण्ड-पुष्प-सदा-प्रीत्यै नमः
ॐ क्रीं गोल-पुष्प-सदा-रत्यै नमः
ॐ क्रीं कुण्ड-गोलोद्भव-प्राणायै नमः
ॐ क्रीं कुण्ड-गोलोद्भवात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं स्वयम्भुवे नमः
ॐ क्रीं शिवायै नमः
ॐ क्रीं धात्र्यै नमः
ॐ क्रीं पावन्यै नमः ॥ ९३०
ॐ क्रीं लोक-पावन्यै नमः
ॐ क्रीं कीर्त्यै नमः
ॐ क्रीं यशस्विन्यै नमः
ॐ क्रीं मेधायै नमः
ॐ क्रीं विमेधायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं अश्विनी-कृत्तिका-पुष्या-तैजस्कायै नमः
ॐ क्रीं चन्द्र-मण्डलायै नमः
ॐ क्रीं सूक्ष्मायै नमः
ॐ क्रीं असूक्ष्मायै नमः ॥ ९४०
ॐ क्रीं वलाकायै नमः
ॐ क्रीं वरदायै नमः
ॐ क्रीं भय-नाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं वरदाऽभयदायै नमः
ॐ क्रीं मुक्ति-बन्ध-विनाशिन्यै नमः

ॐ क्रीं कामुकायै नमः
ॐ क्रीं कामदायै नमः
ॐ क्रीं कान्तायै नमः
ॐ क्रीं कामाख्यायै नमः
ॐ क्रीं कुल-सुन्दर्यै नमः ॥ ९५०
ॐ क्रीं दुःखदायै नमः
ॐ क्रीं सुखदायै नमः
ॐ क्रीं मोक्षायै नमः
ॐ क्रीं मोक्षदार्थ-प्रकाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं दुष्टायै नमः
ॐ क्रीं दुष्ट-मत्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-कार्य-विनाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्राधारायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-रूपायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-सिन्धु-निवासिन्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्रालयायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-भोगायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-पूजा-सदा-रत्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-पूज्यायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-होम-सन्तुष्टायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-वत्सलायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-मूर्त्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-देहायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-पूजक-पुत्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्रस्थायै नमः ॥ ९७०
ॐ क्रीं शुक्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-संस्पृहायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-सुन्दर्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-स्नातायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-कर्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-सेव्यायै नमः
ॐ क्रीं अति-शुक्रिण्यै नमः
ॐ क्रीं महा-शुक्रायै नमः

ॐ क्रीं शुक्र-भवायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-वृष्टि-विधायिन्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्राभिधेयायै नमः
ॐ क्रीं शुक्रार्हायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-वन्दक-वन्दितायै नमः
ॐ क्रीं शुक्रानन्द-कर्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-सदानन्दाभिधायिकायै नमः
ॐ क्रीं शुक्रोत्सवायै नमः
ॐ क्रीं सदा-शुक्र-पूर्णायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-मनोरमायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-पूजक-सर्वस्वायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-निन्दक-नाशिन्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्रात्मिकायै नमः
ॐ क्रीं शुक्र-सम्पत्यै नमः
ॐ क्रीं शुक्राकर्षण-कारिण्यै नमः
ॐ क्रीं शारदायै नमः
ॐ क्रीं साधक-प्राणायै नमः
ॐ क्रीं साधकासक्त-मानसायै नमः
ॐ क्रीं साधकोत्तम-सर्वस्वायै नमः
ॐ क्रीं साधकाभक्त-रक्तपायै नमः
ॐ क्रीं साधकानन्द-सन्तोषायै नमः
ॐ क्रीं साधकानन्द-कारिण्यै नमः ॥ १०००
ॐ क्रीं आत्म-विद्यायै नमः
ॐ क्रीं ब्रह्म-विद्यायै नमः
ॐ क्रीं पर-ब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ क्रीं त्रिकूटस्थायै नमः
ॐ क्रीं पञ्च-कूटायै नमः
ॐ क्रीं सर्व-कूट-शरीरिण्यै नमः
ॐ क्रीं सर्व-वर्ण-मय्यै नमः
ॐ क्रीं वर्ण-जप-माला-विधायिन्यै नमः ॥ १००८ ॥

नारद एवं सनत्कुमार-सम्वाद-स्वरूपा
मन्त्रात्मिका, महा-गोप्या, महा-सारस्वत-ज्ञान-प्रदा

श्रीसरस्वती-सहस्र-नामावलि

॥ ध्यान ॥

श्रीमच्चन्दन-चर्चितोज्ज्वल-वपुः शुक्लाम्बरा मल्लिका-
माला-लालित-कुन्तला प्रविलसन्मुक्तावली-शोभना ।
सर्व-ज्ञान-निधान-पुस्तक-धरा रुद्राक्ष-मालाङ्किता,
वाग्-देवी वदनाम्बुजे वसतु मे त्रैलोक्य-माता शुभा ॥

ॐ वाचे नमः
ॐ वाण्यै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ वन्द्यायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः
ॐ वर-प्रदायै नमः
ॐ वृत्त्यै नमः
ॐ वागीश्वर्यै नमः
ॐ वार्त्तायै नमः
ॐ वरायै नमः ॥ १०
ॐ वागीश-वल्लभायै नमः
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः
ॐ विश्व-वन्द्यायै नमः
ॐ विश्वेश-प्रिय-कारिण्यै नमः
ॐ वाग्-वादिन्यै नमः
ॐ वाग्-देव्यै नमः
ॐ वृद्धिदायै नमः
ॐ वृद्धि-कारिण्यै नमः
ॐ वृद्ध्यै नमः
ॐ वृद्धायै नमः ॥ २०
ॐ विषघ्न्यै नमः
ॐ वृष्ट्यै नमः
ॐ वृष्टि-प्रदायिन्यै नमः
ॐ विश्वाराध्यायै नमः
ॐ विश्व-मात्रे नमः
ॐ विश्व-धात्र्यै नमः
ॐ विनायकायै नमः
ॐ विश्व-शक्त्यै नमः
ॐ विश्व-सारायै नमः
ॐ विश्वायै नमः ॥ ३०
ॐ विश्व-विभावर्यै नमः
ॐ वेदान्त-वेदिन्यै नमः
ॐ वेद्यायै नमः
ॐ वित्तायै नमः
ॐ वेद-त्रयात्मिकायै नमः
ॐ वेदज्ञायै नमः
ॐ वेद-जनन्यै नमः
ॐ विश्वायै नमः
ॐ विश्व-विभावर्यै नमः
ॐ वरेण्यायै नमः ॥ ४०
ॐ वाङ्मय्यै नमः
ॐ वृद्धायै नमः
ॐ विशिष्ट-प्रिय-कारिण्यै नमः
ॐ विश्वतो वदनायै नमः
ॐ व्यासायै नमः
ॐ व्यापिन्यै नमः
ॐ व्यापकात्मिकायै नमः
ॐ व्यालघ्न्यै नमः
ॐ व्याल-भूषांग्यै नमः
ॐ विरजायै नमः ॥ ५०
ॐ वेद-नायिकायै नमः

ॐ वेद-वेदान्त-सम्वेद्यायै नमः
ॐ वेदान्त-ज्ञान-रूपिण्यै नमः
ॐ विभावर्यै नमः
ॐ विक्रान्तायै नमः
ॐ विश्व-मित्रायै नमः
ॐ विधि-प्रियायै नमः
ॐ वरिष्ठायै नमः
ॐ विप्रकृष्टायै नमः
ॐ विप्र-वर्य-प्रपूजितायै नमः ॥ ६०
ॐ वेद-रूपायै नमः
ॐ वेद-मय्यै नमः
ॐ वेद-मूर्त्यै नमः
ॐ वल्लभायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ गुण-वत्यै नमः
ॐ गोप्यायै नमः
ॐ गन्धर्व-नगर-प्रियायै नमः
ॐ गुण-मात्रे नमः
ॐ गुहान्तस्थायै नमः ॥ ७०
ॐ गुरु-रूपायै नमः
ॐ गुरु-प्रियायै नमः
ॐ गिरि-विद्यायै नमः
ॐ गान-तुष्टायै नमः
ॐ गायक-प्रिय-कारिण्यै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः
ॐ गिरिशाराध्यायै नमः
ॐ गिरे नमः
ॐ गिरीश-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ गिरिज्ञायै नमः ॥ ८०
ॐ ज्ञान-विद्यायै नमः
ॐ गिरि-रूपायै नमः
ॐ गिरीश्वर्यै नमः

ॐ गीर्मात्रे नमः
ॐ गण-संस्तुत्यायै नमः
ॐ गणनीय-गुणान्वितायै नमः
ॐ गूढ-रूपायै नमः
ॐ गुहायै नमः
ॐ गोप्यायै नमः
ॐ गो-रूपायै नमः ॥ ९०
ॐ गवे नमः
ॐ गुणात्मिकायै नमः
ॐ गुर्व्यै नमः
ॐ गुर्वम्बिकायै नमः
ॐ गुह्यायै नमः
ॐ गेयजायै नमः
ॐ ग्रह-नाशिन्यै नमः
ॐ गृहिण्यै नमः
ॐ गृह-दोषघ्न्यै नमः
ॐ गवघ्न्यै नमः ॥ १००
ॐ गुरु-वत्सलायै नमः
ॐ गृहात्मिकायै नमः
ॐ गृहाराध्यायै नमः
ॐ गृह-बाधा-विनाशिन्यै नमः
ॐ गङ्गायै नमः
ॐ गिरि-सुतायै नमः
ॐ गम्यायै नमः
ॐ गज-यानायै नमः
ॐ गुह-स्तुतायै नमः
ॐ गरुडासन-संसेव्यायै नमः ॥ ११०
ॐ गो-मत्यै नमः
ॐ गुण-शालिन्यै नमः
ॐ शारदायै नमः
ॐ शाश्वत्यै नमः
ॐ शैव्यै नमः

ॐ शाङ्कर्यै नमः
ॐ शङ्करात्मिकायै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ शर्वाण्यै नमः
ॐ शतघ्न्यै नमः ॥ १२०
ॐ शरच्चन्द्र-निभाननायै नमः
ॐ शर्मिष्ठायै नमः
ॐ शमनघ्न्यै नमः
ॐ शत-साहस्र-रूपिण्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शम्भु-प्रियायै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ श्रुति-रूपायै नमः
ॐ श्रुति-प्रियायै नमः
ॐ शुचिष्मत्यै नमः ॥ १३०
ॐ शर्म-कर्यै नमः
ॐ शुद्धिदायै नमः
ॐ शुद्धि-रूपिण्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शिवङ्कर्यै नमः
ॐ शुद्धायै नमः
ॐ शिवाराध्यायै नमः
ॐ शिवात्मिकायै नमः
ॐ श्रीमत्यै नमः
ॐ श्री-मय्यै नमः ॥ १४०
ॐ श्राव्यायै नमः
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ श्रवण-गोचरायै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ शान्ति-कर्यै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ शान्ताचार-प्रियङ्कर्यै नमः

ॐ शील-लभ्यायै नमः
ॐ शील-वत्यै नमः
ॐ श्री-मात्रे नमः ॥ १५०
ॐ शुभ-कारिण्यै नमः
ॐ शुभ-वाण्यै नमः
ॐ शुद्ध-विद्यायै नमः
ॐ शुद्ध-चित्त-प्रपूजितायै नमः
ॐ श्री-कर्यै नमः
ॐ श्रुत-पापघ्न्यै नमः
ॐ शुभाक्ष्यै नमः
ॐ शुचि-वल्लभायै नमः
ॐ शिवेतरघ्न्यै नमः
ॐ शर्वर्यै नमः ॥ १६०
ॐ श्रवणीय-गुणान्वितायै नमः
ॐ शार्यै नमः
ॐ शिरीष-पुष्पाभायै नमः
ॐ शम-निष्ठायै नमः
ॐ शमात्मिकायै नमः
ॐ शमान्वितायै नमः
ॐ शमाराध्यायै नमः
ॐ शिति-कण्ठ-प्रपूजितायै नमः
ॐ शुद्ध्यै नमः
ॐ शुद्धि-कर्यै नमः ॥ १७०
ॐ श्रेष्ठायै नमः
ॐ श्रुतानन्तायै नमः
ॐ शुभावहायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ सर्वज्ञायै नमः
ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः

ॐ सर्वेप्सित-प्रदायै नमः ॥ १८०
ॐ सर्वार्तिघ्न्यै नमः
ॐ सर्व-मय्यै नमः
ॐ सर्व-विद्या-प्रदायिन्यै नमः
ॐ सर्वेश्वर्यै नमः
ॐ सर्व-पुण्यायै नमः
ॐ सर्ग-स्थित्यन्त-कारिण्यै नमः
ॐ सर्वाराध्यायै नमः
ॐ सर्व-मात्रे नमः
ॐ सर्व-देव-निषेवितायै नमः
ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदायै नमः ॥ १९०
ॐ सत्यायै नमः
ॐ सत्यै नमः
ॐ सत्व-गुणाश्रयायै नमः
ॐ स्वर-क्रम-पदाकारायै नमः
ॐ सर्व-दोष-निषूदिन्यै नमः
ॐ सहस्राक्ष्यै नमः
ॐ सहस्रास्यायै नमः
ॐ सहस्र-पद-संयुतायै नमः
ॐ सहस्र-हस्तायै नमः
ॐ सहस्र-गुणालंकृत-विग्रहायै नमः
ॐ सहस्र-शीर्षायै नमः
ॐ सद्रूपायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ सुधा-मय्यै नमः
ॐ षड्-ग्रन्थि-भेदिन्यै नमः
ॐ सेव्यायै नमः
ॐ सर्व-लोकैक-पूजितायै नमः
ॐ स्तुत्यायै नमः
ॐ स्तुति-मयायै नमः ॥ २१०
ॐ साध्यायै नमः

ॐ सवितृ-प्रिय-कारिण्यै नमः
ॐ संशयच्छेदिन्यै नमः
ॐ सांख्य-वेद्यायै नमः
ॐ संख्यायै नमः
ॐ नदीश्वर्यै नमः
ॐ सिद्धिदायै नमः
ॐ सिद्धि-सम्पूज्यायै नमः
ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः
ॐ सर्वज्ञायै नमः ॥ २२०
ॐ सर्व-शक्त्यै नमः
ॐ सर्व-सम्पत्-प्रदायिन्यै नमः
ॐ सर्वाशुभघ्न्यै नमः
ॐ सुखदायै नमः
ॐ सुखायै नमः
ॐ संवित्-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ सर्व-सम्भीषण्यै नमः
ॐ सर्व-जगत्-सम्मोहिन्यै नमः
ॐ सर्व-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ सर्व-शुभदायै नमः ॥ २३०
ॐ सर्व-मङ्गलायै नमः
ॐ सर्व-मन्त्र-मय्यै नमः
ॐ सर्व-तीर्थ-पुण्य-फल-प्रदायै नमः
ॐ सर्व-पुण्य-मय्यै नमः
ॐ सर्व-व्याधिघ्न्यै नमः
ॐ सर्व-कामदायै नमः
ॐ सर्व-विघ्न-हर्यै नमः
ॐ सर्व-वन्दितायै नमः
ॐ सर्व-मङ्गलायै नमः
ॐ सर्व-मन्त्र-कर्यै नमः ॥ २४०
ॐ सर्व-लक्ष्म्यै नमः
ॐ सर्व-गुणान्वितायै नमः
ॐ सर्वानन्द-मय्यै नमः

ॐ सर्व-ज्ञानदायै नमः
ॐ सत्य-नायिकायै नमः
ॐ सर्व-ज्ञान-मय्यै नमः
ॐ सर्व-राज्यदायै नमः
ॐ सर्व-मुक्तिदायै नमः
ॐ सुप्रभायै नमः
ॐ सर्वदायै नमः ॥ २५०
ॐ सर्वायै नमः
ॐ सर्व-लोक-वशङ्कर्यै नमः
ॐ सुभगायै नमः
ॐ सुन्दर्यै नमः
ॐ सिद्धायै नमः
ॐ सिद्धाम्बायै नमः
ॐ सिद्ध-मातृकायै नमः
ॐ सिद्ध-मात्रे नमः
ॐ सिद्ध-विद्यायै नमः
ॐ सिद्धेश्यै नमः ॥ २६०
ॐ सिद्ध-रूपिण्यै नमः
ॐ सुरूपिण्यै नमः
ॐ सुख-मय्यै नमः
ॐ सेवक-प्रिय-कारिण्यै नमः
ॐ स्वामिन्यै नमः
ॐ सर्वदायै नमः
ॐ सेव्यायै नमः
ॐ स्थूल-सूक्ष्मापराम्बिकायै नमः
ॐ सार-रूपायै नमः
ॐ सरो-रूपायै नमः ॥ २७०
ॐ सत्य-भूतायै नमः
ॐ समाश्रयायै नमः
ॐ सितासितायै नमः
ॐ सरोजाक्ष्यै नमः
ॐ सरोजासन-वल्लभायै नमः

ॐ सरोरुहाभायै नमः
ॐ सर्वाङ्ग्यै नमः
ॐ सुरेन्द्रादि-प्रपूजितायै नमः
ॐ महा-देव्यै नमः
ॐ महेशान्यै नमः ॥ २८०
ॐ महा-सारस्वत-प्रदायै नमः
ॐ महा-सरस्वत्यै नमः
ॐ मुक्तायै नमः
ॐ मुक्तिदायै नमः
ॐ मल-नाशिन्यै नमः
ॐ महेश्वर्यै नमः
ॐ महानन्दायै नमः
ॐ महा-मन्त्र-मय्यै नमः
ॐ मह्यै नमः
ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः ॥ २९०
ॐ महा-विद्यायै नमः
ॐ मात्रे नमः
ॐ मन्दार-वासिन्यै नमः
ॐ मन्त्र-गम्यायै नमः
ॐ मन्त्र-मात्रे नमः
ॐ महा-मन्त्र-फल-प्रदायै नमः
ॐ महा-मुक्त्यै नमः
ॐ महा-नित्यायै नमः
ॐ महा-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः
ॐ महा-सिद्धायै नमः ॥ ३००
ॐ महा-मात्रे नमः
ॐ महदाकार-संयुतायै नमः
ॐ महायै नमः
ॐ महेश्वर्यै नमः
ॐ मूर्त्यै नमः
ॐ मोक्षदायै नमः
ॐ मणि-भूषणायै नमः

ॐ मेनकायै नमः
ॐ मानिन्यै नमः
ॐ मान्यायै नमः ॥ ३१०
ॐ मृत्युघ्न्यै नमः
ॐ मेरु-रूपिण्यै नमः
ॐ मदिराक्ष्यै नमः
ॐ मदावासायै नमः
ॐ मख-रूपायै नमः
ॐ मखेश्वर्यै नमः
ॐ महा-मोहायै नमः
ॐ महा-मायायै नमः
ॐ मातॄणां मूर्ध्नि-संस्थितायै नमः
ॐ महा-पुण्यायै नमः ॥ ३२०
ॐ मुदावासायै नमः
ॐ महा-सम्पत्-प्रदायिन्यै नमः
ॐ मणिपूरैक-निलयायै नमः
ॐ मधु-रूपायै नमः
ॐ महोत्कटायै नमः
ॐ महा-सूक्ष्मायै नमः
ॐ महा-शान्तायै नमः
ॐ महा-शान्ति-प्रदायिन्यै नमः
ॐ मुनि-स्तुतायै नमः
ॐ मोह-हन्त्र्यै नमः ॥ ३३०
ॐ माधव्यै नमः
ॐ माधव-प्रियायै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ महादेव-संस्तुत्यायै नमः
ॐ महिषी-गण-पूजितायै नमः
ॐ मृष्टान्नदायै नमः
ॐ माहेन्द्र्यै नमः
ॐ महेन्द्र-पद-दायिन्यै नमः
ॐ मत्यै नमः

ॐ मति-प्रदायै नमः ॥ ३४०
ॐ मेधायै नमः
ॐ मर्त्य-लोक-निवासिन्यै नमः
ॐ मुख्यायै नमः
ॐ महा-निवासायै नमः
ॐ महा-भाग्य-जनाश्रितायै नमः
ॐ महिलायै नमः
ॐ महिमायै नमः
ॐ मृत्यु-हार्यै नमः
ॐ मेधा-प्रदायिन्यै नमः
ॐ मेध्यायै नमः ॥ ३५०
ॐ महा-वेग-वत्यै नमः
ॐ महा-मोक्ष-फल-प्रदायै नमः
ॐ महा-प्रभाभायै नमः
ॐ महत्यै नमः
ॐ महा-देव-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ महा-पोषायै नमः
ॐ महर्ध्यै नमः
ॐ मुक्ता-हार-विभूषणायै नमः
ॐ माणिक्य-भूषणायै नमः
ॐ मन्त्रायै नमः ॥ ३६०
ॐ मुख्य-चन्द्रार्ध-शेखरायै नमः
ॐ मनो-रूपायै नमः
ॐ मनश्शुद्धयै नमः
ॐ मनश्शुद्धि-प्रदायिन्यै नमः
ॐ महा-कारुण्य-सम्पूर्णायै नमः
ॐ मनो-नमन-वन्दितायै नमः
ॐ महा-पातक-जालघ्न्यै नमः
ॐ मुक्तिदायै नमः
ॐ मुक्त-भूषणायै नमः
ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ३७०
ॐ महा-स्थूलायै नमः

ॐ महा-क्रतु-फल-प्रदायै नमः
ॐ महा-पुण्य-फल-प्राप्यायै नमः
ॐ माया-त्रिपुर-नाशिन्यै नमः
ॐ महा-नसायै नमः
ॐ महा-मेधायै नमः
ॐ महा-मोदायै नमः
ॐ महा-महेश्वर्यै नमः
ॐ माला-धर्यै नमः
ॐ महोपायायै नमः ॥ ३८०
ॐ महा-तीर्थ-फल-प्रदायै नमः
ॐ महा-मङ्गल-सम्पूर्णायै नमः
ॐ महा-दारिद्र्य-नाशिन्यै नमः
ॐ महा-मखायै नमः
ॐ महा-मेधायै नमः
ॐ महा-काल्यै नमः
ॐ महा-प्रियायै नमः
ॐ महा-भूषायै नमः
ॐ महा-देहायै नमः
ॐ महा-राज्यै नमः ॥ ३९०
ॐ मुदालयायै नमः
ॐ भूरिदायै नमः
ॐ भाग्यदायै नमः
ॐ भोग्यायै नमः
ॐ भोग्यदायै नमः
ॐ भोग-दायिन्यै नमः
ॐ भवान्यै नमः
ॐ भूतिदायै नमः
ॐ भूत्यै नमः
ॐ भूम्यै नमः ॥ ४००
ॐ भूमि-सुनायिकायै नमः
ॐ भूत-धात्र्यै नमः
ॐ भय-हर्यै नमः

ॐ भक्त-सारस्वत-प्रदायै नमः
ॐ भुक्त्यै नमः
ॐ भुक्ति-प्रदायै नमः
ॐ भेक्यै नमः
ॐ भक्त्यै नमः
ॐ भक्ति-प्रदायिन्यै नमः
ॐ भक्त-सायुज्यदायै नमः ॥ ४१०
ॐ भक्त-स्वर्गदायै नमः
ॐ भक्त-राज्यदायै नमः
ॐ भागीरथ्यै नमः
ॐ भवाराध्यायै नमः
ॐ भाग्य-सज्जन-पूजितायै नमः
ॐ भव-स्तुत्यायै नमः
ॐ भानु-मत्यै नमः
ॐ भव-सागर-तारण्यै नमः
ॐ भूत्यै नमः
ॐ भूषायै नमः ॥ ४२०
ॐ भूतेश्यै नमः
ॐ भाल-लोचन-पूजितायै नमः
ॐ भूतायै नमः
ॐ भव्यायै नमः
ॐ भविष्यायै नमः
ॐ भव-विद्यायै नमः
ॐ भवात्मिकायै नमः
ॐ बाधाप-हारिण्यै नमः
ॐ बन्धु-रूपायै नमः
ॐ भुवन-पूजितायै नमः ॥ ४३०
ॐ भवघ्न्यै नमः
ॐ भक्ति-लभ्यायै नमः
ॐ भक्त-रक्षण-तत्परायै नमः
ॐ भक्तार्ति-शमन्यै नमः
ॐ भाग्यायै नमः

ॐ भोग-दान-कृतोद्यमायै नमः
ॐ भुजङ्ग-भूषणायै नमः
ॐ भीमायै नमः
ॐ भीमाक्ष्यै नमः
ॐ भीम-रूपिण्यै नमः ॥ ४४०
ॐ भाविन्यै नमः
ॐ भ्रातृ-रूपायै नमः
ॐ भारत्यै नमः
ॐ भव-नायिकायै नमः
ॐ भाषायै नमः
ॐ भाषा-वत्यै नमः
ॐ भीष्मायै नमः
ॐ भैरव्यै नमः
ॐ भैरव-प्रियायै नमः
ॐ भूत्यै नमः ॥ ४५०
ॐ भासित-सर्वाङ्ग्यै नमः
ॐ भूतिदायै नमः
ॐ भूति-नायिकायै नमः
ॐ भास्वत्यै नमः
ॐ भग-मालायै नमः
ॐ भिक्षा-दान-कृतोद्यमायै नमः
ॐ भिक्षु-रूपायै नमः
ॐ भक्ति-कर्यै नमः
ॐ भक्त-लक्ष्मी-प्रदायिन्यै नमः
ॐ भ्रान्तिघ्नायै नमः ॥ ४६०
ॐ भ्रान्ति-रूपायै नमः
ॐ भूतिदायै नमः
ॐ भूति-कारिण्यै नमः
ॐ भिक्षणीयायै नमः
ॐ भिक्षु-मात्रे नमः
ॐ भाग्य-वद्-दृष्टि-गोचरायै नमः
ॐ भोग-वत्यै नमः

ॐ भोग-रूपायै नमः
ॐ भोग-मोक्ष-फल-प्रदायै नमः
ॐ भोग-श्रान्तायै नमः ॥ ४७०
ॐ भाग्य-वत्यै नमः
ॐ भक्ताघौघ-विनाशिन्यै नमः
ॐ ब्राह्म्यै नमः
ॐ ब्रह्म-स्वरूपायै नमः
ॐ बृहत्यै नमः
ॐ ब्रह्म-वल्लभायै नमः
ॐ ब्रह्मदायै नमः
ॐ ब्रह्म-मात्रे नमः
ॐ ब्रह्माण्यै नमः
ॐ ब्रह्म-दायिन्यै नमः ॥ ४८०
ॐ ब्रह्मेश्यै नमः
ॐ ब्रह्म-संस्तुत्यायै नमः
ॐ ब्रह्म-वेद्यायै नमः
ॐ बुध-प्रियायै नमः
ॐ बालेन्दु-शेखरायै नमः
ॐ बालायै नमः
ॐ बलि-पूजा-कर-प्रियायै नमः
ॐ बलदायै नमः
ॐ बिन्दु-रूपायै नमः
ॐ बाल-सूर्य-सम-प्रभायै नमः
ॐ ब्रह्म-रूपायै नमः
ॐ ब्रह्म-मय्यै नमः
ॐ ब्रध्न-मण्डल-मध्यगायै नमः
ॐ ब्रह्माण्यै नमः
ॐ बुद्धिदायै नमः
ॐ बुद्ध्यै नमः
ॐ बुद्धि-रूपायै नमः
ॐ बुधेश्वर्यै नमः
ॐ बन्ध-क्षय-कर्यै नमः

ॐ बन्ध-नाशिन्यै नमः ॥ ५००
ॐ बन्धु-रूपिण्यै नमः
ॐ बिन्द्वालयायै नमः
ॐ बिन्दु-भूषायै नमः
ॐ बिन्दु-नाद-समन्वितायै नमः
ॐ बीज-रूपायै नमः
ॐ बीज-मात्रे नमः
ॐ ब्रह्मण्यायै नमः
ॐ ब्रह्म-कारिण्यै नमः
ॐ बहु-रूपायै नमः
ॐ बल-वत्यै नमः ॥ ५१०
ॐ ब्रह्मजायै नमः
ॐ ब्रह्म-चारिण्यै नमः
ॐ ब्रह्म-स्तुत्यायै नमः
ॐ ब्रह्म-विद्यायै नमः
ॐ ब्रह्माण्डाधिप-वल्लभायै नमः
ॐ ब्रह्मेश-विष्णु-रूपायै नमः
ॐ ब्रह्म-विष्णवीश-संस्थितायै नमः
ॐ बुद्धि-रूपायै नमः
ॐ बुधेशान्यै नमः
ॐ बन्ध्यै नमः ॥ ५२०
ॐ बन्ध-विमोचन्यै नमः
ॐ अक्ष-मालायै नमः
ॐ अक्षराकारायै नमः
ॐ अक्षरायै नमः
ॐ अक्षर-फलदायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः
ॐ आनन्द-सुखदायै नमः
ॐ अनन्त-चन्द्र-निभाननायै नमः
ॐ अनन्त-महिमायै नमः
ॐ अघोरायै नमः ॥ ५३०
ॐ अनन्त-गम्भीर-सम्मितायै नमः

ॐ अदृष्टायै नमः
ॐ अदृष्टदायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः
ॐ अदृष्ट-भाग्य-फल-प्रदायै नमः
ॐ अरुन्धत्यै नमः
ॐ अव्ययी-नाथायै नमः
ॐ अनेक-सद्-गुण-संयुतायै नमः
ॐ अनेक-भूषणायै नमः
ॐ अदृश्यायै नमः ॥ ५४०
ॐ अनेक-लेख-निषेवितायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः
ॐ अनन्त-सुखदायै नमः
ॐ अघोरायै नमः
ॐ अघोर-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ अशेष-देवता-रूपायै नमः
ॐ अमृत-रूपायै नमः
ॐ अमृतेश्वर्यै नमः
ॐ अनवद्यायै नमः
ॐ अनेक-हस्तायै नमः ॥ ५५०
ॐ अनेक-माणिक्य-भूषणायै नमः
ॐ अनेक-विघ्न-संहर्त्र्यै नमः
ॐ अनेकाभरणान्वितायै नमः
ॐ अविद्यायै नमः
ॐ अज्ञान-संहर्त्र्यै नमः
ॐ अविद्या-जाल-नाशिन्यै नमः
ॐ अभिरूपायै नमः
ॐ अनवद्याङ्ग्यै नमः
ॐ अप्रतर्क्य-गति-प्रदायै नमः
ॐ अकलङ्क-रूपिण्यै नमः ॥ ५६०
ॐ अनुग्रह-परायणायै नमः
ॐ अम्बरस्थायै नमः
ॐ अम्बर-मयायै नमः
ॐ अम्बर-मालायै नमः
ॐ अम्बुजेक्षणायै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ अब्ज-करायै नमः
ॐ अब्जस्थायै नमः
ॐ अंशु-मत्यै नमः
ॐ अंशु-शतान्वितायै नमः ॥ ५७०
ॐ अम्बुजायै नमः
ॐ अनवरायै नमः
ॐ अखण्डायै नमः
ॐ अम्बुजासन-महा-प्रियायै नमः
ॐ अजरामर-संसेव्यायै नमः
ॐ अजर-सेवित-पद-युगायै नमः
ॐ अतुलार्थ-प्रदायै नमः
ॐ अर्थैक्यायै नमः
ॐ अत्युदारायै नमः
ॐ अभयान्वितायै नमः ॥ ५८०
ॐ अनाथ-वत्सलायै नमः
ॐ अनन्त-प्रियायै नमः
ॐ अनन्तेप्सित-प्रदायै नमः
ॐ अम्बुजाक्ष्यै नमः
ॐ अम्बु-रूपायै नमः
ॐ अम्बुजातोद्भव-महा-प्रियायै नमः
ॐ अखण्डायै नमः
ॐ अमर-स्तुत्यायै नमः
ॐ अमर-नायक-पूजितायै नमः
ॐ अजेयायै नमः ॥ ५९०
ॐ अज-सङ्काशायै नमः
ॐ अज्ञान-नाशिन्यै नमः
ॐ अभीष्टदायै नमः
ॐ अक्तायै नमः
ॐ अघ-नेनायै नमः
ॐ अस्त्रेश्यै नमः
ॐ अलक्ष्मी-नाशिन्यै नमः
ॐ अनन्त-सारायै नमः
ॐ अनन्त-श्रियै नमः
ॐ अनन्त-विधि-पूजितायै नमः
ॐ अभीष्टायै नमः
ॐ अमर्त्य-सम्पूज्यायै नमः
ॐ अस्तोदय-विवर्जितायै नमः
ॐ आस्तिक-स्वान्त-निलयायै नमः
ॐ अस्त्र-रूपायै नमः
ॐ अस्त्र-वत्यै नमः
ॐ अस्खलत्यै नमः
ॐ अस्खलद्-रूपायै नमः
ॐ अस्खलद्विद्या-प्रदायिन्यै नमः
ॐ अस्खलत्सिद्धिदायै नमः ॥ ६१०
ॐ आनन्दायै नमः
ॐ अम्बुजायै नमः
ॐ अमर-नायिकायै नमः
ॐ अमेयायै नमः
ॐ अशेष-पापघ्न्यै नमः
ॐ अक्षय-सारस्वत-प्रदायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ जयदायै नमः
ॐ जन्म-कर्म-विवर्जितायै नमः
ॐ जगत्-प्रियायै नमः
ॐ जगन्मात्रे नमः
ॐ जगदीश्वर-वल्लभायै नमः
ॐ जात्यै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ जितामित्रायै नमः
ॐ जप्यायै नमः

ॐ जपन-कारिण्यै नमः
ॐ जीवन्यै नमः
ॐ जीव-निलयायै नमः ॥ ६३०
ॐ जीवाख्यायै नमः
ॐ जीव-धारिण्यै नमः
ॐ जाह्नव्यै नमः
ॐ ज्यायै नमः
ॐ जप-वत्यै नमः
ॐ जाति-रूपायै नमः
ॐ जय-प्रदायै नमः
ॐ जनार्दन-प्रिय-कर्यै नमः
ॐ जोषनीयायै नमः
ॐ जगत्स्थितायै नमः ॥ ६४०
ॐ जगज्ज्येष्ठायै नमः
ॐ जगन्मायायै नमः
ॐ जीवन-त्राण-कारिण्यै नमः
ॐ जीवातुलतिकायै नमः
ॐ जीव-जन्यै नमः
ॐ जन्म-निबर्हण्यै नमः
ॐ जाड्य-विध्वंसन-कर्यै नमः
ॐ जगद्योनये नमः
ॐ जयात्मिकायै नमः
ॐ जगदानन्द-जनन्यै नमः ॥ ६५०
ॐ जम्ब्यै नमः
ॐ जलजेक्षणायै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ जङ्गपूगघ्नचै नमः
ॐ जनित-ज्ञान-विग्रहायै नमः
ॐ जटायै नमः
ॐ जटा-वत्यै नमः
ॐ जप्यायै नमः
ॐ जप-कर्तृ-प्रियङ्कर्यै नमः

ॐ जप-कृत्पाप-संहर्त्र्यै नमः ॥ ६६०
ॐ जप-कृत्-फल-दायिन्यै नमः
ॐ जपा-पुष्प-सम-प्रख्यायै नमः
ॐ जपा-कुसुम-धारिण्यै नमः
ॐ जनन्यै नमः
ॐ जन्म-रहितायै नमः
ॐ ज्योतिर्वृत्यभि-दायिन्यै नमः
ॐ जटा-जूटन-चन्द्रार्धायै नमः
ॐ जगत्-सृष्टि-कर्यै नमः
ॐ जगत्-त्राण-कर्यै नमः
ॐ जाड्य-ध्वंसन-कर्त्र्यै नमः ॥ ६७०
ॐ जयेश्वर्यै नमः
ॐ जगद्बीजायै नमः
ॐ जयावासायै नमः
ॐ जन्म-भुवे नमः
ॐ जन्म-नाशिन्यै नमः
ॐ जन्मान्त्य-रहितायै नमः
ॐ जैत्र्यै नमः
ॐ जगद्योनये नमः
ॐ जपात्मिकायै नमः
ॐ जय-लक्षण-सम्पूर्णायै नमः ॥ ६८०
ॐ जय-दान-कृतोद्यमायै नमः
ॐ जम्भराद्यादि-संस्तुत्यायै नमः
ॐ जम्भारि-फल-दायिन्यै नमः
ॐ जगत्-त्रय-हितायै नमः
ॐ ज्येष्ठायै नमः
ॐ जगत्-त्रय-वशङ्कर्यै नमः
ॐ जगत्-त्रयाम्बायै नमः
ॐ जगत्यै नमः
ॐ ज्वालायै नमः
ॐ ज्वालित-लोचनायै नमः
ॐ ज्वालिन्यै नमः

ॐ ज्वलनाभासायै नमः
ॐ ज्वलन्त्यै नमः
ॐ ज्वलनात्मिकायै नमः
ॐ जिताराति-सुर-स्तुत्यायै नमः
ॐ जित-क्रोधायै नमः
ॐ जितेन्द्रियायै नमः
ॐ जरा-मरण-शून्यायै नमः
ॐ जनित्र्यै नमः
ॐ जन्म-नाशिन्यै नमः ॥ ७००
ॐ जलजाभायै नमः
ॐ जल-मय्यै नमः
ॐ जलजासन-वल्लभायै नमः
ॐ जलजस्थायै नमः
ॐ जपाराध्यायै नमः
ॐ जन-मङ्गल-कारिण्यै नमः
ॐ कामिन्यै नमः
ॐ काम-रूपायै नमः
ॐ काम्यायै नमः
ॐ काम-प्रदायिन्यै नमः ॥ ७१०
ॐ कमाल्यै नमः
ॐ कामदायै नमः
ॐ कर्त्र्यै नमः
ॐ ऋतु-कर्म-फल-प्रदायै नमः
ॐ कृतघ्नघ्न्यै नमः
ॐ क्रिया-रूपायै नमः
ॐ कार्य-कारण-रूपिण्यै नमः
ॐ कञ्जाक्ष्यै नमः
ॐ करुणा-रूपायै नमः
ॐ केवलामर-सेवितायै नमः ॥ ७२०
ॐ कल्याण-कारिण्यै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कान्तिदायै नमः

ॐ कान्ति-रूपिण्यै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कमलावासायै नमः
ॐ कमलोत्पल-मालिन्यै नमः
ॐ कुमुद्वत्यै नमः
ॐ कल्याण्यै नमः
ॐ कान्त्यै नमः ॥ ७३०
ॐ कामेश-वल्लभायै नमः
ॐ कामेश्वर्यै नमः
ॐ कमलिन्यै नमः
ॐ कामदायै नमः
ॐ काम-बन्धिन्यै नमः
ॐ काम-धेन्वे नमः
ॐ काञ्चनाक्ष्यै नमः
ॐ काञ्चनाभायै नमः
ॐ कला-निधये नमः
ॐ क्रियायै नमः ॥ ७४०
ॐ कीर्ति-कर्यै नमः
ॐ कीर्त्यै नमः
ॐ क्रतु-श्रेष्ठायै नमः
ॐ कृतेश्वर्यै नमः
ॐ क्रतु-सर्व-क्रिया-स्तुत्यायै नमः
ॐ क्रतु-कृत्-प्रिय-कारिण्यै नमः
ॐ क्लेश-नाश-कर्यै नमः
ॐ कर्त्र्यै नमः
ॐ कर्मदायै नमः
ॐ कर्म-बन्धिन्यै नमः ॥ ७५०
ॐ कर्म-बन्ध-हर्यै नमः
ॐ कृष्टायै नमः
ॐ क्लमघ्न्यै नमः
ॐ कञ्ज-लोचनायै नमः
ॐ कन्दर्प-जनन्यै नमः
ॐ कान्तायै नमः

ॐ करुणायै नमः
ॐ करुणा-वत्यै नमः
ॐ क्लीं-कारिण्यै नमः
ॐ कृपाकारायै नमः ॥ ७६०
ॐ कृपा-सिन्धवे नमः
ॐ कृपा-वत्यै नमः
ॐ करुणार्द्रायै नमः
ॐ कीर्ति-कर्यै नमः
ॐ कल्मषघ्न्यै नमः
ॐ क्रिया-कर्यै नमः
ॐ क्रिया-शक्त्यै नमः
ॐ काम-रूपायै नमः
ॐ कमलोत्पल-गन्धिन्यै नमः
ॐ कलायै नमः ॥ ७७०
ॐ कला-वत्यै नमः
ॐ कूर्म्यै नमः
ॐ कूटस्थायै नमः
ॐ कञ्ज-संस्थितायै नमः
ॐ कालिकायै नमः
ॐ कल्मषघ्न्यै नमः
ॐ कमनीय-जटान्वितायै नमः
ॐ कर-पद्मायै नमः
ॐ कराभीष्ट-प्रदायै नमः
ॐ क्रतु-फल-प्रदायै नमः ॥ ७८०
ॐ कौशिक्यै नमः
ॐ कोशदायै नमः
ॐ काव्यायै नमः
ॐ कर्त्र्यै नमः
ॐ कोशेश्वर्यै नमः
ॐ कृशायै नमः
ॐ कूर्म-यानायै नमः
ॐ कल्प-लतायै नमः
ॐ काल-कूट-विनाशिन्यै नमः

ॐ कल्पोद्यान-वत्यै नमः ॥ ७९०
ॐ कल्प-वनस्थायै नमः
ॐ कल्प-कारिण्यै नमः
ॐ कदम्ब-कुसुमाभासायै नमः
ॐ कदम्ब-कुसुम-प्रियायै नमः
ॐ कदम्बोद्यान-मध्यस्थायै नमः
ॐ कीर्तिदायै नमः
ॐ कीर्ति-भूषणायै नमः
ॐ कुल-मात्रे नमः
ॐ कुलावासायै नमः
ॐ कुलाचार-प्रियङ्कर्यै नमः ॥ ८००
ॐ कुलला-नाथायै नमः
ॐ काम-कलायै नमः
ॐ कला-नाथायै नमः
ॐ कलेश्वर्यै नमः
ॐ कुन्द-मन्दार-पुष्पाभायै नमः
ॐ कपर्द-स्थित-चन्द्रिकायै नमः
ॐ कवित्वदायै नमः
ॐ काम्य-मात्रे नमः
ॐ कवि-मात्रे नमः
ॐ कला-प्रदायै नमः ॥ ८१०
ॐ तरुण्यै नमः
ॐ तरुणीतातायै नमः
ॐ ताराधिप-समाननायै नमः
ॐ तृप्तये नमः
ॐ तृप्ति-प्रदायै नमः
ॐ तर्क्यायै नमः
ॐ तपन्यै नमः
ॐ तापिन्यै नमः
ॐ तर्पण्यै नमः
ॐ तीर्थ-रूपायै नमः ॥ ८२०
ॐ त्रि-दशायै नमः
ॐ त्रि-दशेश्वर्यै नमः

ॐ त्रि-दिवेश्यै नमः
ॐ त्रि-जनन्यै नमः
ॐ त्रि-मात्रे नमः
ॐ त्र्यम्बकेश्वर्यै नमः
ॐ त्रिपुरायै नमः
ॐ त्रिपुरेशान्यै नमः
ॐ त्र्यम्बकायै नमः
ॐ त्रिपुराम्बिकायै नमः ॥ ८३०
ॐ त्रिपुर-श्रियै नमः
ॐ त्रयी-रूपायै नमः
ॐ त्रयी-वेद्यायै नमः
ॐ त्रयीश्वर्यै नमः
ॐ त्रय्यन्त-वेदिन्यै नमः
ॐ ताम्रायै नमः
ॐ ताप-त्रितय-हारिण्यै नमः
ॐ तमाल-सदृश्यै नमः
ॐ त्रात्रे नमः
ॐ तरुणादित्य-सन्निभायै नमः ॥ ८४०
ॐ त्रैलोक्य-व्यापिन्यै नमः
ॐ तृप्तायै नमः
ॐ तृप्ति-कृते नमः
ॐ तत्त्व-रूपिण्यै नमः
ॐ तुर्यायै नमः
ॐ त्रैलोक्य-संस्तुत्यायै नमः
ॐ त्रिगुणायै नमः
ॐ त्रिगुणेश्वर्यै नमः
ॐ त्रिपुरघ्न्यै नमः
ॐ त्रि-मात्रे नमः ॥ ८५०
ॐ त्र्यम्बकायै नमः
ॐ त्रिगुणान्वितायै नमः
ॐ तृष्णाच्छेद-कर्यै नमः
ॐ तृप्तायै नमः
ॐ तीक्ष्णायै नमः

ॐ तीक्ष्ण-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ तुलायै नमः
ॐ तुलादि-रहितायै नमः
ॐ तत्तद्-ब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ त्राण-कर्त्र्यै नमः ॥ ८६०
ॐ त्रि-पापघ्न्यै नमः
ॐ त्रिपदायै नमः
ॐ त्रिदशान्वितायै नमः
ॐ तथ्यायै नमः
ॐ त्रिशक्त्यै नमः
ॐ त्रिपदायै नमः
ॐ तुर्यायै नमः
ॐ त्रैलोक्य-सुन्दर्यै नमः
ॐ तेजस्कर्यै नमः
ॐ त्रिमूर्त्याद्यायै नमः ॥ ८७०
ॐ तेजो-रूपायै नमः
ॐ त्रिधा-मतायै नमः
ॐ त्रि-चक्र-कर्त्र्यै नमः
ॐ त्रिभगायै नमः
ॐ तुर्यातीत-फल-प्रदायै नमः
ॐ तेजस्विन्यै नमः
ॐ ताप-हर्यै नमः
ॐ तापोपप्लव-नाशिन्यै नमः
ॐ तेजो-गर्भायै नमः
ॐ तपस्सारायै नमः ॥ ८८०
ॐ त्रिपुरारि-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ तन्व्यै नमः
ॐ तापस-सन्तुष्टायै नमः
ॐ तपताङ्गज-भीति-तुदे नमः
ॐ त्रि-लोचनायै नमः
ॐ त्रि-मार्गायै नमः
ॐ तृतीयायै नमः
ॐ त्रिदश-स्तुतायै नमः

ॐ त्रि-सुन्दर्यै नमः
ॐ त्रिपथगायै नमः ॥ ८९०
ॐ तुरीय-पद-दायिन्यै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ शुभावत्यै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ शन्तिदायै नमः
ॐ शुभ-दायिन्यै नमः
ॐ शीतलायै नमः
ॐ शूलिन्यै नमः
ॐ शीतायै नमः
ॐ श्री-मत्यै नमः ॥ ९००
ॐ शुभान्वितायै नमः
ॐ योग-सिद्धि-प्रदायै नमः
ॐ योग्यायै नमः
ॐ यज्ञेन परिपूरितायै नमः
ॐ यज्यायै नमः
ॐ यज्ञ-मय्यै नमः
ॐ यक्ष्यै नमः
ॐ यक्षिण्यै नमः
ॐ यक्षि-वल्लभायै नमः
ॐ यज्ञ-प्रियायै नमः ॥ ९१०
ॐ यज्ञ-पूज्यायै नमः
ॐ यज्ञ-तुष्टायै नमः
ॐ यम-स्तुतायै नमः
ॐ यामिनीय-प्रभायै नमः
ॐ याम्यायै नमः
ॐ यजनीयायै नमः
ॐ यशस्कर्यै नमः
ॐ यज्ञ-कर्त्र्यै नमः
ॐ यज्ञ-रूपायै नमः
ॐ यशोदायै नमः ॥ ९२०
ॐ यज्ञ-संस्तुत्यायै नमः

ॐ यज्ञेश्यै नमः
ॐ यज्ञ-फलदायै नमः
ॐ योग-योनये नमः
ॐ यजुस्तुतायै नमः
ॐ यमि-सेव्यायै नमः
ॐ यमाराध्यायै नमः
ॐ यमि-पूज्यायै नमः
ॐ यमीश्वर्यै नमः
ॐ योगिन्यै नमः ॥ ९३०
ॐ योग-रूपायै नमः
ॐ योग-कर्तृ-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ योग-युक्तायै नमः
ॐ योग-मय्यै नमः
ॐ योग-योगीश्वराम्बिकायै नमः
ॐ योग-ज्ञान-मय्यै नमः
ॐ योनये नमः
ॐ यमाद्यष्टाङ्ग-योग-युतायै नमः
ॐ यन्त्रिताघौघ-संहारायै नमः
ॐ यम-लोक-निवारिण्यै नमः ॥ ९४०
ॐ यष्टि-व्यष्टीश-संस्तुत्यायै नमः
ॐ यमाद्यष्टाङ्ग-योग-युजे नमः
ॐ योगीश्वर्यै नमः
ॐ योग-मात्रे नमः
ॐ योग-सिद्धायै नमः
ॐ योगदायै नमः
ॐ योगारूढायै नमः
ॐ योग-मय्यै नमः
ॐ योग-रूपायै नमः
ॐ यवीयस्यै नमः ॥ ९५०

ॐ यन्त्र-रूपायै नमः
ॐ यन्त्रस्थायै नमः
ॐ यन्त्र-पूज्यायै नमः
ॐ यन्त्रितायै नमः
ॐ युग-कर्त्र्यै नमः
ॐ युग-मय्यै नमः
ॐ युग-धर्म-विवर्जितायै नमः
ॐ यमुनायै नमः
ॐ यमिन्यै नमः
ॐ याम्यायै नमः ॥ ९६०
ॐ यमुना-जल-मध्यगायै नमः
ॐ यातायात-प्रशमन्यै नमः
ॐ यातनानान्निकृन्तन्यै नमः
ॐ योगावासायै नमः
ॐ योगि-वन्द्यायै नमः
ॐ यत्तच्छब्द-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ योग-क्षेम-मय्यै नमः
ॐ यन्त्रायै नमः
ॐ यावदक्षर-मातृकायै नमः
ॐ यावत्पद-मय्यै नमः ॥ ९७०
ॐ यावच्छब्द-रूपायै नमः
ॐ यथेश्वर्यै नमः
ॐ यत्तदीयायै नमः
ॐ यक्ष-वन्द्यायै नमः
ॐ यति-विद्यायै नमः
ॐ यति-संस्तुतायै नमः
ॐ यावद्विद्या-मय्यै नमः
ॐ यावद्विद्या-बृन्द-सुवन्दितायै नमः
ॐ योगि-हृत्पद्म-निलयायै नमः

ॐ योगि-वर्य-प्रियङ्कर्यै नमः ॥ ९८०
ॐ योगि-वन्द्यायै नमः
ॐ योगि-मात्रे नमः
ॐ योगीश-फल-दायिन्यै नमः
ॐ यक्ष-वन्द्यायै नमः
ॐ यक्ष-पूज्यायै नमः
ॐ यक्ष-राज-सुपूजितायै नमः
ॐ यज्ञ-रूपायै नमः
ॐ यज्ञ-तुष्टायै नमः
ॐ यायजूक-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ यन्त्राराध्यायै नमः ॥ ९९०
ॐ यन्त्र-मध्यायै नमः
ॐ यन्त्र-कर्तृ-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ यन्त्रारूढायै नमः
ॐ यन्त्र-पूज्यायै नमः
ॐ योगि-ध्यान-परायणायै नमः
ॐ यजनीयायै नमः
ॐ यम-स्तुत्यायै नमः
ॐ योग-युक्तायै नमः
ॐ यशस्कर्यै नमः
ॐ योग-बद्धायै नमः ॥ १०००
ॐ यति-स्तुत्यायै नमः
ॐ योगज्ञायै नमः
ॐ योग-नायक्यै नमः
ॐ योगि-ज्ञान-प्रदायै नमः
ॐ यक्ष्यै नमः
ॐ यम-बाधा-विनाशिन्यै नमः
ॐ योगि-काम्य-प्रदात्र्यै नमः
ॐ योगि-मोक्ष-प्रदायिन्यै नमः ॥ १००८

'दीपावली' महा-पर्व
हेतु
कुछ विशेष साधनाएँ

१

सुख-शान्ति-दायक महा-लक्ष्मी महा-मन्त्र-प्रयोग

विनियोग : ॐ अस्य श्रीपञ्च - दश-ऋचस्य श्री - सूक्तस्य श्रीआनन्द - कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा- सुता ऋषयः, अनुष्टुप् - वृहति - प्रस्तार - पंक्ति - छन्दांसि, श्रीमहा-लक्ष्मी देवताः, श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रसाद - सिद्धयर्थे राज - वश्यार्थे सर्व - स्त्री - पुरुष-वश्यार्थे महा - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीआनन्द - कर्दम - चिक्लीतेन्दिरा - सुता - ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्- वृहति - प्रस्तार - पंक्ति - छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रसाद-सिद्धयर्थे राज - वश्यार्थे सर्व - स्त्री - पुरुष - वश्यार्थे महा - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ रजत-स्रजायै मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ हिरण्य-स्रजायै अनामिकाभ्यां हुं। ॐ हिरण्य-स्रक्षायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ हिरण्य-वर्णायै कर-तल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै नमः हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा। ॐ रजत-स्रजायै नमः शिखायै वषट्। ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः कवचाय हुम्। ॐ हिरण्य-स्रक्षायै नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान : ॐ अरुण-कमल-संस्था, तद्रजः पुञ्ज-वर्णा,
कर-कमल - धृतेष्टा, भीति - युग्माम्बुजा च।
मणि-मुकुट- विचित्रालंकृता कल्प-जालैर्भवतु—
भुवन - माता सततं श्रीः श्रियै नः ॥

मानस-पूजनः ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु - तत्त्वात्मकं धूपं श्री महा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि - तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।ष्टा।।

।। महा-मन्त्र ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह।।१

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्।।२

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

अश्व-पूर्वां रथ- मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्।
श्रियं दवामुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

कांसोऽस्मि तां हिरण्य - प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदारां।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।७

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

क्षुत्-पिपासामला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहं।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्।।८

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

गन्ध-द्वारां दुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूताना, तामिहोपह्वये श्रियम्।।९

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भ्रम-कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम्।।११

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
निच - देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह।।१३

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीं।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह।।१४

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्च-दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत्।।१६

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।

।। स्तुति-पाठ ।।

।। ॐ नमो नमः।।

पद्मानने पद्मिनि पद्म - हस्ते, पद्म-प्रिये पद्म-दलायताक्षि!
विश्व-प्रिये विष्णु-मनोनुकूले, त्वत्- पाद-पद्मं मयि सन्निधत्स्व।।

पद्मानने पद्म - उरु, पद्माक्षी पद्म - सम्भवे!
त्वन्मा भजस्व पद्माक्षि! येन सौख्यं लभाम्यहम्।।

अश्व - दायि च गो-दायि, धनदायै महा-धने!
धनं मे जुषतां देवि! सर्व - कामांश्च देहि मे।।

पुत्र - पौत्र - धन - धान्यं, हस्त्यश्वादि - गवे रथम्।
प्रजानां भवति मातः, अयुष्मन्तं करोतु माम्।।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रा बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्नुते।।
वैनतेय सोमं पिब, सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो, मह्यं ददातु सोमिनि।।
न क्रोधो न च मात्सर्यं, न लोभो नाशुभा मतीः।
भवन्ती कृत - पुण्यानां, भक्तानां श्री-सूक्तं जपेत्।।

★★★

सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-लक्ष्मी महा-मन्त्र-प्रयोग

विनियोग : ॐ अस्य श्रीपञ्च-दश-ऋचस्य श्री-सूक्तस्य श्रीआनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा-सुता ऋषयः, अनुष्टुप्-वृहति-प्रस्तार-पंक्ति-छन्दांसि, श्रीमहा-लक्ष्मी देवताः, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद- सिद्ध्यर्थे राज - वश्यार्थे सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीआनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा-सुता-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्-वृहति-प्रस्तार-पंक्ति-छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे राज-वश्यार्थे सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ रजत-स्त्रजायै मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ हिरण्य - स्त्रजायै अनामिकाभ्यां हुं। ॐ हिरण्य - स्त्रक्षायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ हिरण्य - वर्णायै कर-तल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै नमः हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा।। ॐ रजत-स्त्रजायै नमः शिखायै वषट्। ॐ हिरण्य-स्त्रजायै नमः कवचाय हुम्। ॐ हिरण्य-स्त्रक्षायै नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान : **ॐ अरुण-कमल-संस्था, तद्रजः पुञ्ज-वर्णा, कर-कमल-धृतेष्टा, भीति-युग्माम्बुजा च।**
मणि-मुकुट-विचित्रालंकृता कल्प-जालैर्भवतु— भुवन - माता सततं श्रीः श्रियै नः।।

मानस-पूजन : ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। महा-मन्त्र।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण - रजत - स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह ।।१

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम् ।।२

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।

पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव - जुष्टामुदाराम्।

तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आदित्य - वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥७

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

क्षुत् - पिपासाऽमला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।

अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥८

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

गन्ध - द्वारां दुराधर्षां, नित्य - पुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्व - भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भ्रम - कर्दम।

श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम् ॥११

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।

निच - देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम - मालिनीम्।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥१३

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥१४

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।

श्रियः पञ्च-दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत् ॥१६

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

विधि— उक्त **महा-मन्त्र** के तीन **'पाठ'** नित्य करें। **'पाठ'** के बाद कमल के श्वेत फूल, तिल, मधु, घी, शक्कर, बेल-गूदा मिलाकर बेल की लकड़ी से नित्य १०८ बार **हवन** करें। ऐसा ६८ दिन करें। इससे मन - वाञ्छित धन प्राप्त होता है। **हवन - मन्त्र :** ॐ श्रीं ह्रीं महा-लक्ष्म्यै सर्वाभीष्ट-सिद्धिदायै स्वाहा।

३

एकाक्षर लक्ष्मी-बीज (श्रीं) की साधना

** प्रस्तुत - कर्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री सतीशकुमार उपाध्याय, प्रयागराज (उ०प्र०)*

['**श्रीं**' बीज प्रत्यक्ष चिन्तामणि है। माँ कमला के इस एकाक्षरी रूप के चमत्कार आए दिन देखने को मिलते हैं। गुरु-मुख से '**श्रीं**' -बीज ग्रहण कर, तीन-चार बार '**पुरश्चरण**' कर कोई भी इसके प्रभाव का अनुभव कर कता है। आज भी यह बीज इच्छित ऐश्वर्य-प्रद है, इसमें सन्देह नहीं। — प्रस्तुत-कर्ता]

विनियोग— ॐ अस्य श्रीकमला-एकाक्षरी-मन्त्रस्य भृगुः ऋषिः, निवृत् छन्दः, श्रीः देवता, शं बीजं, ईं शक्तिः, मम धनाप्तये विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीभृगु-ऋषये नमः शिरसि, निवृच्छन्दसे नमः मुखे, श्रीदेवतायै नमः हृदये, शं-बीजाय नमः गुह्ये, ईं- शक्तये नमः पादयोः, मम धनाप्तये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास— ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ श्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्ग-न्यास— ॐ श्रां हृदयाय नमः, ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रूं शिखायै वषट्, ॐ श्रैं कवचाय हुं, ॐ श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान— कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,

हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत- घटैराषिञ्च्यमानां श्रियम्।।

बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब - ललितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

अर्थात् हिमालय के समान विशाल एवं उज्ज्वल चार हाथी अपनी सूँड़ों में उठाए हुए अमृत-पूर्ण स्वर्ण-कलशों से अमृत-धारा द्वारा स्वर्ण-समान देह-कान्तिवाली भगवती श्री का अभिषेक कर रहे हैं। भगवती भी अपने दाएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में वर-मुद्रा और बाँएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में अभय-मुद्रा धारण किए हैं। उनके मस्तक पर उज्ज्वल रत्न-मुकुट है। पट्ट वस्त्र धारण किए वे अरविन्द के ऊपर विराजमाना हैं।

पुरश्चरण— निर्दिष्ट नियमों का पालन करते हुए १२ लाख'जप' कर दशांश-क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन करे। अन्त में ब्राह्मण-भोजन कराए।

पूजन— सुगन्धित पुष्पादि द्वारा '**श्रीकमला-पूजन-यन्त्र**' में पूजन करे। '**आवरण-पूजन**' '**हिन्दी तन्त्रसार**', पृष्ठ१२१ पर दिया गया है। यदि '**आवरण-पूजन**' नित्य न कर सके, तो माँ कमला के १०८ नामों द्वारा नित्य पूजन करे।

हवन— 'पुरश्चरण' के अनुसार जप-संख्या पूर्ण होने पर १२०० कमल-पुष्पों को मधु में मिलाकर उनकी 'आहुति' दे। अथवा, शक्कर - घी से युक्त तिल, बिल्व-फल की 'आहुति' दे।

विशेष— यदि कोई योग्य 'गुरु' न मिले, तो जगद्-गुरु भगवान् दक्षिणामूर्ति से **'श्रीं'**-बीज ग्रहण कर 'पुरश्चरण' का 'सङ्कल्प' करे। रात्रि-जागरण-पूर्वक माँ की पूजा जप-पूर्वक करे। आश्चर्य-जनक रूप से कार्य-सिद्धि होगी, इसमें सन्देह नहीं। विशेष लाभ देखने के लिए **'श्रीं'**-बीज से सम्पुटित **'सप्तशती'** का पाठ करे। प्रयोग-कर्ता फल को देखकर स्वयं आश्चर्य-चकित होगा, अन्यों की क्या बात!

४

श्रीमञ्जु-घोष की साधना

** 'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामकृष्ण तिवारी', सैदाबाद, प्रयागराज (उ०प्र०)*

'मञ्जुघोष' शशधर की तरह शुभ्र वर्ण के हैं। इनके एक हाथ में खड्ग और दूसरे हाथ में पुस्तक है। ये कुमार और अति शान्त हैं। ये बड़े मनोरम हैं और इनके मस्तक पर पाँच चूड़ाएँ हैं। इनकी मूर्ति स्थूल है और इनकी आँखें कमल के फूल की पङ्खुड़ियों की तरह बड़ी-बड़ी हैं।

'मञ्जुघोष' के मन्त्र के जप से साधक की जड़ता दूर हो जाती है। इनका पहला शुभ मन्त्र है — **'अ-र-व-च-ल-धीं'** । **इस मन्त्र का केवल १०८ बार जप करने से प्रत्यक्ष चमत्कार देखने को मिलता है।** साधक की जड़ता और सुस्ती न जाने कहाँ गायब हो जाती है। यह इनका **मूल-मन्त्र (प्रधान मन्त्र)** है।

दोपहर के समय पानी में, अथवा भोजन के बाद जूठी थाली पर, अथवा गाँव या शहर के बाहर, गोबर के ऊपर और रात्रि के समय गाय या बैल बाँधने की जगह पर अर्थात् 'गोष्ठ-स्थान' (गो-शाला) में 'गो-मुण्ड' के ऊपर **'डमरु'** के आकार का यन्त्र बनाकर उसके ऊपर और नीचे तीन पंक्तियों में मूल-मन्त्र **(अ-र-व-च-ल-धीं)**, लिखा जाता है। **'यन्त्र'** चन्दन की लकड़ी की बनाई हुई लेखनी से लिखना चाहिए।

जल में **'यन्त्र'** लिखने से साधक **सर्वत्र विजयी** होता है। भोजन करने के बाद जूठी थाली में **'यन्त्र'** लिखने से **धन की प्राप्ति** होती है। गोबर पर **'यन्त्र'** लिखने से **सर्वज्ञता— विद्वत्ता की प्राप्ति** होती है।

गुरु-मुख से इस मन्त्र को लेकर दो मास उपासना करने से इच्छित धन की प्राप्ति होती है।

साधक-वर्ग के अति शीघ्र कल्याण के हेतु यहाँ एक बहुत ही सरल विधि दी जा रही है। सभी नित्य भोजन करते ही हैं। भोजन करते समय **'अ-र-व-च-ल-धीं'** मन्त्र का 'जप' मन-ही-मन करता जाए। भोजन करने के बाद जूठी थाली में **'डमरु'** जैसा **'यन्त्र'** अँगुली से बनाकर, उसके ऊपर और नीचे तीन बार उक्त मन्त्र लिखे। इस **'मन्त्र'** को बाद में जल से धो डाले। कुछ ही दिनों में मन्त्र का प्रभाव दिखाई देगा और सभी अभाव दूर हो जाएँगे।

★ ★ ★

५

महा-लक्ष्मी अष्टोत्तर शत-नाम-साधना

* *'कुल-वाणी-रत्न' श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास, कोट मुहल्ला, डीडवाना (राजस्थान)*

विनियोग — ॐ अस्य श्रीमहा-माया महा-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महा-माया देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम महा-माया-प्रसाद- सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यास — ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, महा-माया-देवतायै नमः हृदि, ह्रीं-बीजाय नमः नाभौ, क्लीं-कीलकाय नमः पादयोः, श्रीं-शक्तये नमः सर्वाङ्गे।

अङ्ग - न्यास— ह्रीं-बीजाय नमः हृदि। श्रीं - शक्तये नमः शिरसि। क्लीं-कीलकाय नमः शिखायै वषट्। ब्रह्मर्षये नमः कवचाय हुं। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। महा-माया -देवतायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान— संविद्-रूपा ज्योतिराद्या स्फुरन्ती, ब्रह्माण्डानां कोटिभिः क्रीडमाना।
स्वात्मारामा दिव्य-रूपा पराख्या, देवी श्यामा सर्वदाऽस्मान् पुनातु।।

।।अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्।।

ॐ ह्रींकारा महा-माया, स्वतन्त्रा चेतना परा। कलातीता कला-रूपा, वैन्दवी नाद-रूपिणी।।१
प्रणवा प्रकृतिः प्राज्ञा, तैजसी विश्व-धारिणी। महा-लक्ष्मी महा-काली, महा-वागीश्वरी रमा।।२
राज-राजेश्वरी प्रज्ञा, सिद्धा च ललिता ध्रुवा। परा-भट्टारिका दिव्या, कुल-कुण्डैक-शायिनी।।३
श्यामा रामा प्रभा कामा, उमा माहेश्वरीश्वरी। भोगदा भुवना वाणी, भारती च शतम्भरा।।४
सन्ध्या सरस्वती गोत्रा, मोहिनी ऋतजा ऋचा। सोम चाथर्वणा वेदी, याजुषी वेद-संस्तुता।।५
पुराणा चेतिहासा च, निगमा चाङ्गना-समा। गतिर्मतिर्मुक्तिदा च, चिन्ता-मणिरधोक्षजा।।६
शुभा श्रेयस्करी भूमिः, शिखा तरणि-विग्रहा। हंसी हंसात्मिका सोऽहं, भवा भावात्मिका सुधा।।७
अणिमा महिमा प्राप्तिरीशिता वशिता क्षमा। नित्यानन्द - घना मेधा, स्मृतिर्ह्रीर्भी कुलाङ्गना।।८
त्रिकूटा च त्रि-बीजा च, गायत्री च शताक्षरा। मृत्युञ्जया जात-वेदा, सावित्री व्याहृतिः क्रमात्।।९
एकाक्षरी त्र्यक्षरी च, चतुष्षष्टि-स्वरात्मिका। माता दधिमथी सिन्धु - क्षोभिणी कुल-देवता।।१०
गोष्ठेश्वरी मङ्गला च, सर्वतोऽक्षि-शिरो-मुखा। वैनायिकी वैष्णवी च, सौरी शैवी स्वयम्भवी।।११
सर्वदा सर्व-रूपा च, ब्रह्मादि-जननी परा। शुभ-नाम्नां शतं देव्याः, अष्टाधिकमथोत्तरम्।।१२
मन्त्र — ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः भगवत्यै दधि-मथ्यै नमः। (१६)

★ ★ ★

ऋण-हरण श्री गणेश-मन्त्र-प्रयोग

'तन्त्र-शास्त्र' में विविध समस्याओं के निवारण तथा आत्म-कल्याण के लिए विभिन्न मन्त्रादि का विधान है। **"कलौ चण्डी-विनायकौ"** के अनुसार वर्तमान काल में **'चण्डी'** तथा **'गणेश'** की उपासना सद्यः फल-दायी होती है। **श्रीगणेश** ऋद्धि-सिद्धि के दाता हैं। अतः आर्थिक समस्याओं एवं ऋण-नाश के लिए **श्रीगणेश** की उपासना निश्चयात्मक रूप से फल-प्रद होती है। ऋण-नाश हेतु **'ऋण-हरण गणेश-स्तोत्र'** बहुत प्रसिद्ध है।

❖ *श्री के० के० श्रीवास्तव, श्री ज्योतिष-संस्थान, पेटलावद (म०प्र०)*

'ऋण-हरण श्रीगणेश-मन्त्र-प्रयोग'— धन-दायी प्रयोग है। जब कहीं से धन की प्राप्ति होगी, तभी ऋण का हरण होगा। अतः यह प्रयोग धन-दायी है। यदि प्रयोग नियमित करना हो, तो साधक अपने द्वारा निर्धारित वस्त्र में कर सकता है किन्तु, यदि प्रयोग पर्व-विशेष मात्र में करना हो, तो पीले रङ्ग के आसन पर पीले वस्त्र (धोती) धारण कर पीले रङ्ग की माला अथवा पीले सूत में बनी स्फटिक की माला से करे। **भगवान् गणेश** जी की पूजा में **'दूर्वा-अंकुर'** चढ़ाए। यदि **'हवन'** करना हो, तो **'लाक्षा'** एवं **'दूर्वा'** से **'हवन'** करे। **विनियोग, न्यास, ध्यान** कर **आवाहन** और **पूजन** करे। **'पूजन'** के बाद **'कवच'**- पाठ कर **'स्तोत्र'** का पाठ करे।

❖ *श्री बलराम बली, २८३/६२ क/२ हरचन्दपुर गढ़ी कनौरा, पो० मानकनगर, लखनऊ (उ०प्र०)*

विनियोग— ॐ अस्य श्रीऋण-हरण-कर्तृ-गणपति-मन्त्रस्य सदा-शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीऋण-हर्ता गणपति देवता, ग्लौं बीजं, गं शक्तिः, गों कीलकं, मम सकल-ऋण-नाशार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— सदा-शिव-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीऋण-हर्ता-गणपति-देवतायै नमः हृदि, ग्लौं-वीजाय नमः' गुह्ये, गं शक्तये नमः पादयो, गों कीलकाय नमः नाभौ, मम सकल-ऋण-नाशार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास— ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः, ऋणं छिन्धि-तर्जनीभ्यां नमः, वरेण्यं मध्यमाभ्यां नमः, हुं अनामिकाभ्यां नमः, नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, फट् कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास— ॐ गणेश हृदयाय नमः, ऋणं छिन्धि शिरसे स्वाहा, वरेण्यं शिखायै वषट्, हुं कवचाय हुम्, नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्, फट् अस्त्राय फट्।

ध्यान— **ॐ सिन्दूर-वर्णं द्वि-भुजं गणेशं, लम्बोदरं पद्म-दले निविष्टम्।**
ब्रह्मादि-देवैः परि-सेव्यमानं, सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्॥

'आवाहन' आदि कर पञ्चोपचारों से अथवा **'मानसिक पूजन'** करे।

।। कवच-पाठ ।।

ॐ आमोदश्च शिरः पातु, प्रमोदश्च शिखोपरि, सम्मोदो भ्रू-युगे पातु, भ्रू-मध्ये च गणाधिपः।
गण-क्रीडश्चक्षुर्युगं, नासायां गण - नायकः, जिह्वायां सुमुखः पातु, ग्रीवायां दुर्म्मुखः।।
विघ्नेशो हृदये पातु, बाहु-युग्मे सदा मम, विघ्न-कर्त्ता च उदरे, विघ्न-हर्त्ता च लिङ्गके।
गज-वक्त्रो कटि-देशे, एक-दन्तो नितम्बके, लम्बोदरः सदा पातु, गुह्य-देशे ममारुणः।।
व्याल-यज्ञोपवीती मां, पातु पाद-युगे सदा, जापकः सर्वदा पातु, जानु-जङ्घे गणाधिपः।
हरिद्राः सर्वदा पातु, सर्वाङ्गे गण-नायकः।।

।। स्तोत्र-पाठ ।।

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक्, पूजितः फल-सिद्धये। सदैव पार्वती-पुत्रः, ऋण-नाशं करोतु मे।।१।।
त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं, शम्भुना सम्यगर्चितः। हिरण्य - कश्यप्वादीनां, वधार्थे विष्णुनार्चितः।।२।।
महिषस्य वधे देव्या, गण - नाथः प्रपूजितः। तारकस्य वधात् पूर्वं, कुमारेण प्रपूजितः।।३।।
भास्करेण गणेशो हि, पूजितश्छवि-सिद्धये। शशिना कान्ति - वृद्ध्यर्थं, पूजितो गण-नायकः।
पालनाय च तपसां, विश्वामित्रेण पूजितः।।४।।

।।फल-श्रुति।।

इदं त्वृण-हर-स्तोत्रं, तीव्र-दारिद्र्य-नाशनम्, एक-वारं पठेन्नित्यं, वर्षमेकं समाहितः।
दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा, कुबेर-समतां व्रजेत्।।

मन्त्र— **ॐ गणेश! ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्** (१५ अक्षर)

उक्त मन्त्र का अन्त में कम-से-कम २१ बार **'जप'** करे। २१,००० **'जप'** से इसका **'पुरश्चरण'** होता है। वर्ष भर **'स्तोत्र'** पढ़ने से **दारिद्र्य-नाश** होता है तथा **लक्ष्मी-प्राप्ति** होती है। इसके स्मरण-मात्र से भूत-प्रेत-पिशाच का नाश होता है।

७

ऋण-मोचन महा-गणपति-स्तोत्र

❖ ***'कुल-वाणी-रत्न' श्रीअनिलगोविन्द बोकील, हड़पसर, पुणे (महा-राष्ट्र)***

विनियोग— ॐ अस्य श्रीऋण-मोचन महा-गणपति-स्तोत्र-मन्त्रस्य भगवान् शुक्राचार्य ऋषिः, ऋण-मोचन-गणपतिः देवता, मम ऋण-मोचनार्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— भगवान् शुक्राचार्य-ऋषये नमः शिरसि, ऋण-मोचन-गणपति-देवतायै नमः हृदि, मम ऋण-मोचनार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ मूल-स्तोत्र ॥

ॐ स्मरामि देव-देवेश! वक्र-तुण्डं महा-बलम्। षडक्षरं कृपा-सिन्धु, नमामि ऋण-मुक्तये॥१
महा-गणपतिं देवं, महा-सत्त्वं महा-बलम्। महा-विघ्न-हरं सौम्यं, नमामि ऋण - मुक्तये॥२
एकाक्षरं एक-दन्तं, एक - ब्रह्म सनातनम्। एकमेवाद्वितीयं च, नमामि ऋण - मुक्तये॥३
शुक्लाम्बरं शुक्ल-वर्णं, शुक्ल-गन्धानुलेपनम्। सर्व-शुक्ल-मयं देवं, नमामि ऋण - मुक्तये॥४
रक्ताम्बरं रक्त-वर्णं, रक्त-गन्धानुलेपनम्। रक्त - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥५
कृष्णाम्बरं कृष्ण-वर्णं, कृष्ण-गन्धानुलेपनम्। कृष्ण -पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण मुक्तये॥६
पीताम्बरं पीत-वर्णं, पीत-गन्धानुलेपनम्। पीत - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥७
नीलाम्बरं नील-वर्णं, नील-गन्धानुलेपनम्। नील - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥८
धूम्राम्बरं धूम्र-वर्णं, धूम्र - गन्धानुलेपनम्। धूम्र - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥९
सर्वाम्बरं सर्व-वर्णं, सर्व - गन्धानुलेपनम्। सर्व - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥१०
भद्र-जातं च रूपं च, पाशांकुश-धरं शुभम्। सर्व - विघ्न - हरं देवं, नमामि ऋण-मुक्तये॥११

॥ फल-श्रुति ॥

यः पठेत् ऋण-हर-स्तोत्रं, प्रातः-काले सुधी नरः। षण्मासाभ्यन्तरे चैव, ऋणच्छेदो भविष्यति॥१

जो व्यक्ति उक्त **'ऋण-मोचन-स्तोत्र'** का नित्य प्रातः-काल पाठ करता है, उसका छः मास में ऋण-निवारण होता है।

८

श्रीहनुमत्-साधना

❖ *प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामप्रसाद अवस्थी, सुभाष मार्ग, जौरा (म०प्र०)*

मन्त्र — 'ॐ नमो हनुमते श्रीरामचन्द्राय नमः।

विधि — पहले मध्य-रात्रि में गीले **'सिन्दूर'** से अपने **'आसन'** के बराबर स्थान लीपकर, उस पर अपना **'लाल आसन'** बिछाए। फिर अपने सम्मुख **'लकड़ी'** की एक स्वच्छ **'चौकी'** पर **'श्रीहनुमान जी'** के लिए **'लाल आसन'** बिछाए और उस पर **'हनुमान जी'** का **'चित्र'** रखे। तब **'हनुमान जी'** की **'पूजा'** करे। **'पूजा'** में लाल-पीले फूल, सुगन्धित धूप या अगरबत्ती और शुद्ध देशी घी का **'दीपक'** रखे। **'पूजा'** करने के बाद उक्त **'मन्त्र'** का एकाग्र चित्त से ५००० बार **'जप'** करे। ऐसा ७ रात्रियों तक मध्य-रात्रि में करे। इससे कठिन-से-कठिन कार्य पूरा होता है।

विशेष— 'जप' एकान्त में करे और **'लाल वस्त्र'** धारण करे। **मङ्गलवार, सिद्धि-योग, अमृत-सिद्धि-योग, सर्वार्थ-सिद्धि-योग** अथवा **'दीपावली'** आदि **महा-पर्व** के काल **'साधना'** के लिए विशेष रूप से शुभ हैं। 'साधना' के लिए 'गुरुदेव' या 'मार्ग-दर्शक' से अनुमति एवं आशीर्वाद अवश्य लेले।

६

'श्रीलक्ष्मी'-नाम-मन्त्र-साधना

☐ पूर्व-मुख होकर आसन पर बैठे और अपने पास गन्ध, पुष्प, अक्षत, सामान्यार्घ्य-जल, कुश, काष्ठ आदि **पूजन-सामग्री** रक्खे।

☐ **'कुश'** से काष्ठ आदि सकल सामग्री का मार्जन करे।

☐ भूमि को **गो-मय** और **जल** से लीपे।

☐ तीन बार **'मूल-मन्त्र'** अथवा **'श्रीं'**-एकाक्षर-बीज का उच्चारण कर **हवन-सामग्री** को उठाए और **गो-मय** व जल से लीपे हुए स्थान पर स्थापित करे।

☐ **'मूल-मन्त्र'** अथवा **'श्रीं'**-एकाक्षर-बीज से **'महा-लक्ष्मी-स्वरूपा अग्नि'** को स्थापित करे और प्रोक्षित **'हवन-सामग्री'** को उसमें डाले।

☐ **माँ लक्ष्मी का ध्यान** कर **'मूल-मन्त्र'** अथवा **'एकाक्षर'**-बीज से तीन बार **'अग्नि'** का सिञ्चन कर पञ्चोपचारों द्वारा **'अग्नि' का पूजन** करे।

☐ फिर कमल-पुष्प, तिल, मधु, घृत, शक्कर, बेल-गूदा मिलाकर बेल की लकड़ी से निम्न-लिखित **'नाम'-मन्त्रों से 'हवन'** करे। पहले चार **व्याहृतियों की आहुतियाँ** दे—

१. ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये नमः।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं वायवे नमः।

३. ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय नमः।

४. ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजा-पतये नमः।

☐ अब **भगवती लक्ष्मी के 'नाम'-मन्त्रों से आहुतियाँ** दे—

ॐ श्रियै नमः स्वाहा

ॐ भू-देव्यै नमः स्वाहा

ॐ लीला-देव्यै नमः स्वाहा

ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

ॐ वरदायै नमः स्वाहा

ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः स्वाहा

ॐ वसु-प्रदायै नमः स्वाहा

ॐ हिरण्य-रूपायै नमः स्वाहा

ॐ स्वर्ण-मालिन्यै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-वासिन्यै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-हस्तायै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-प्रियायै नमः स्वाहा

ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः स्वाहा

ॐ चन्द्रायै नमः स्वाहा

ॐ सूर्यायै नमः स्वाहा

ॐ बिल्व-प्रियायै नमः स्वाहा

ॐ ईश्वर्य्यै नमः स्वाहा

ॐ भुक्त्यै नमः स्वाहा

ॐ मुक्त्यै नमः स्वाहा

ॐ विभूत्यै नमः स्वाहा

ॐ ऋद्ध्यै नमः स्वाहा

ॐ समृद्ध्यै नमः स्वाहा

ॐ तुष्ट्यै नमः स्वाहा
ॐ पुष्ट्यै नमः स्वाहा
ॐ कृष्ट्यै नमः स्वाहा
ॐ धनदायै नमः स्वाहा
ॐ धनेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ श्रद्धायै नमः स्वाहा
ॐ भोगिन्यै नमः स्वाहा
ॐ भोगदायै नमः स्वाहा
ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा
ॐ धात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ गायत्र्यै नमः स्वाहा
ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा
ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ हरिण्यै नमः स्वाहा
ॐ सुवर्ण-रजत-स्रजायै नमः स्वाहा
ॐ हिरण्मय्यै नमः स्वाहा
ॐ अनपगामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
ॐ अश्व-पूर्वायै नमः स्वाहा
ॐ रथ-मध्यायै नमः स्वाहा
ॐ हस्ति-नाद-प्रबोधिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ज्वलंत्यै नमः स्वाहा
ॐ तृप्तायै नमः स्वाहा
ॐ तर्पयंत्यै नमः स्वाहा
ॐ पद्म-स्थितायै नमः स्वाहा
ॐ पद्म-वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ चन्द्र-प्रभासायै नमः स्वाहा

ॐ यशसा ज्वलंत्यै नमः स्वाहा
ॐ देव-जुष्टायै नमः स्वाहा
ॐ उदारायै नमः स्वाहा
ॐ पद्मनेम्यै नमः स्वाहा
ॐ अलक्ष्मी-नाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ आदित्य-वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ गन्ध-द्वारायै नमः स्वाहा
ॐ दुराधर्षायै नमः स्वाहा
ॐ नित्य-पुष्टायै नमः स्वाहा
ॐ करीषिण्यै नमः स्वाहा
ॐ पुष्करिण्यै नमः स्वाहा
ॐ पिङ्गलायै नमः स्वाहा
ॐ सुवर्णायै नमः स्वाहा
ॐ हेम-मालिन्यै नमः स्वाहा
ॐ हरिणाक्ष्यै नमः स्वाहा
ॐ हरिद्राभायै नमः स्वाहा
ॐ आर्द्रायै नमः स्वाहा
ॐ सरसिज-निलयायै नमः स्वाहा
ॐ सरोज-हस्तायै नमः स्वाहा
ॐ धवल-तरायै नमः स्वाहा
ॐ शुभ-गन्ध-माल्यै नमः स्वाहा
ॐ भगवत्यै नमः स्वाहा
ॐ हरि-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ मनोज्ञायै नमः स्वाहा
ॐ त्रिभुवन-भूति-करायै नमः स्वाहा
ॐ पद्माननायै नमः स्वाहा
ॐ पद्माक्ष्यै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-सम्भवायै नमः स्वाहा
ॐ क्षमायै नमः स्वाहा
ॐ माधव्यै नमः स्वाहा
ॐ माधव-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ विष्णु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ अच्युत-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ देव-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ विश्व-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ विश्व-मनोऽनुकूलायै नमः स्वाहा
ॐ श्रीरमा-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ श्रीसीतायै नमः स्वाहा
ॐ श्रीराधायै नमः स्वाहा
ॐ श्रीरुक्मिण्यै नमः स्वाहा
ॐ वेदवत्यै नमः स्वाहा
ॐ त्रिपाद-विभूत्यै नमः स्वाहा
ॐ कमलायै नमः स्वाहा
ॐ कमलालयायै नमः स्वाहा
ॐ चञ्चलायै नमः स्वाहा
ॐ हरि-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ दारिद्र्य-परिहारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ गृह-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
ॐ त्रैलोक्य-पूजितायै नमः स्वाहा
ॐ विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा
ॐ लोक-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
ॐ अमृतोद्भवायै नमः स्वाहा
ॐ स्वर्ण-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ स्वर्ण-प्रभायै नमः स्वाहा
ॐ मुक्तिदायै नमः स्वाहा
ॐ भुक्तिदायै नमः स्वाहा
ॐ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ वरारोहायै नमः स्वाहा
ॐ शार्ङ्गिण्यै नमः स्वाहा
ॐ लोक-धात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ब्रह्म-मात्रे नमः स्वाहा
ॐ पद्म-मुख्यै नमः स्वाहा
ॐ पद्म-कान्त्यै नमः स्वाहा
ॐ जगत्प्रसूत्यै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-जीव-शरण्यायै नमः स्वाहा
ॐ करुणाकरायै नमः स्वाहा
ॐ वात्सल्य-सागरायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-सौलभ्यायै नमः स्वाहा
ॐ कोटि-कन्दर्प-लावण्यायै नमः स्वाहा
ॐ सौन्दर्य-सागरायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यायै नमः स्वाहा
ॐ शरणागत-परित्राणायै नमः स्वाहा
ॐ दीनार्ति-हारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ सर्वारिष्ट-शान्ति-करायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-रोग-ग्रह-बाधादि-शमनायै नमः स्वाहा
ॐ सर्वापत्ति-वारणायै नमः स्वाहा
ॐ सदानुग्रह-सम्पन्नायै नमः स्वाहा
ॐ धन-धान्य-समृद्धि-करायै नमः स्वाहा
ॐ पुत्र-पौत्र-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ वंश-वृद्धि-करायै नमः स्वाहा

ॐ सर्वाभीष्ट-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-मनो-वाञ्छित-फलदायै नमः स्वाहा
ॐ सर्वानुष्ठान-सिद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-विधि-विजय-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ हय-भू-गजाश्व-गो-भृत्यादि-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ दिव्यैश्वर्य-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ दिव्य-ज्ञान-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ सत्-सम्प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ शीघ्र-प्रसन्नायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-शान्ति-करायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-मङ्गल-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ साङ्गायै नमः स्वाहा
ॐ सायुधायै नमः स्वाहा
ॐ सपरिवारायै नमः स्वाहा
ॐ सपरिकरायै नमः स्वाहा
ॐ स-पार्षदायै नमः स्वाहा
ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

☐ अन्त में **माता लक्ष्मी के पुत्रों के 'नाम'-मन्त्रों से आहुतियाँ दे—**

१ ॐ देव-सखाय नमः स्वाहा
२ ॐ चिक्लीताय नमः स्वाहा
३ ॐ आनन्दाय नमः स्वाहा
४ ॐ कर्दमाय नमः स्वाहा
५ ॐ श्रीप्रदाय नमः स्वाहा
६ ॐ जातवेदाय नमः स्वाहा
७ ॐ अनुरागाय नमः स्वाहा
८ ॐ सम्वादाय नमः स्वाहा
९ ॐ विजयाय नमः स्वाहा
१० ॐ वल्लभाय नमः स्वाहा
११ ॐ मदाय नमः स्वाहा
१२ ॐ हर्षाय नमः स्वाहा
१३ ॐ बलाय नमः स्वाहा
१४ ॐ तेजसे नमः स्वाहा
१५ ॐ दमकाय नमः स्वाहा
१६ ॐ सलिलाय नमः स्वाहा
१७ ॐ गुग्गुलाय नमः स्वाहा
१८ ॐ कुरुण्टकाय नमः स्वाहा

☐ उक्त **'नाम'-मन्त्रों** द्वारा **'हवन'** करने के बाद निम्न-लिखित मन्त्र द्वारा **भगवती महा-लक्ष्मी के चरणों में 'जल'** अर्पित कर **'प्रणाम'** करे—

'अनेन होमाख्येन कर्मणा महा-लक्ष्मीः प्रीयताम्।'

☐ फिर निम्न मन्त्र पढ़कर 'अग्नि' का विसर्जन करे—

ॐ भो भो वह्ने! महा-शक्ते! सर्व-काम-प्रसाधक!
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम्।।

विशेष—माँ लक्ष्मी के उक्त **'नाम'-मन्त्रों से नित्य 'हवन'** करने से **अभीष्ट धन की प्राप्ति** होती है।

* * *

श्रीमहा-लक्ष्मी-सप्त-विंशाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग—ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-सप्त-विंशाक्षर-मन्त्रस्य श्री भृगु ऋषिः, निवृद्-गायत्री छन्दः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्रीं-बीजम्, ह्रीं-शक्तिः, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीभृगु-ऋषये नमः शिरसि, निवृद्-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदये, **श्रीं**-बीजाय नमः गुह्ये, **ह्रीं**-शक्तये नमः पादयोः, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	**कर-न्यास**	**अङ्ग-न्यास**
श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि श्रीं ह्रीं श्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **सिन्दूरारुण-कान्तिमब्ज-वसतिं सौन्दर्य-वारां निधिः,**
कोटीराङ्गद - हार - कुण्डल-कटी-सूत्रादिभिर्भूषिताम्।
हस्ताब्जैर्वसु-पात्रमब्ज-युगलादर्शौ वदन्तीं परा—
मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शार्ङ्गिणः।।

अर्थात् सिन्दूर के समान देह की अरुण कान्ति। पद्म के ऊपर विराजमान। अनुपम सौन्दर्य-वती। इन्द्रनील, मणि, वलय, हार, कुण्डल और करधनी आदि आभूषणों से विभूषिता। हाथों में रत्न-पूर्ण पात्र, दो कमल और दर्पण लिए हुई। सेविकाओं से घिरी हुई। भगवान् विष्णु की प्रिया महा-लक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूँ। (देखिए, आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित चित्र)

मानस-पूजन—ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहालक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ शं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र— ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः। (२७ अक्षर)।

वर्ण-माला में जप—

ॐ

१ अं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

२ आं ॐ श्रीं हीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्री महा-लक्ष्मि नमः आं

३ इं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः इं

४ ईं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ईं

५ उं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः उं

६ ऊं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऊं

७ ऋं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऋं

८ ॠं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ॠं

९ लृं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लृं

१० लॄं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लॄं

११ एं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः एं

१२ ऐं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऐं

१३ ओं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ओं

१४ औं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः औं

१५ अं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

१६ अः ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अः

१७ कं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः कं

१८ खं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः खं

१९ गं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः गं

२० घं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः घं

२१ ङं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ङं

२२ चं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः चं

२३ छं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः छं

२४ जं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः जं

२५ झं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः झं

२६ ञं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ञं

२७ टं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः टं

२८ ठं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ठं

२९ डं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः डं

३० ढं ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ढं

३१ णं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः णं

३२ तं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः तं

३३ थं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः थं

३४ दं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः दं

३५ धं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः धं

३६ नं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः नं

३७ पं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः पं

३८ फं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः फं

३९ बं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः बं

४० भं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः भं

४१ मं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः मं

४२ यं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः यं

४३ रं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः रं

४४ लं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लं

४५ वं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः वं

४६ शं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः शं

४७ षं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः षं

४८ सं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः सं

४९ हं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः हं

५० ळं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ळं

क्षं

५१ ळं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ळं

५२ हं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः हं

५३ सं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि ःमः सं

५४ षं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः षं

५५ शं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः शं

५६ वं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः वं

५७ लं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लं

५८ रं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः रं

५९ यं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः यं

६० मं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः मं

६१ भं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः भं

६२ बं ॐ श्री ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः बं

६३ फं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः फं

६४ पं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः पं

६५ नं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः नं

६६ धं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः धं

६७ दं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः दं

६८ थं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः थं

६९ तं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः तं

७० णं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः णं

७१ ढं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ढं

७२ डं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः डं

७३ ठं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ठं

७४ टं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः टं

७५ ञं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ञं

७६ झं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः झं

७७ जं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः जं

७८ छं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः छं

७९ चं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः चं

८० ङं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ङं

८१ घं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः घं

८२ गं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः गं

८३ खं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः खं

८४ कं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः कं

८५ अः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अः

८६ अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

८७ औं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः औं

८८ ओं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ओं

८९ ऐं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऐं

९० एं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः एं

९१ लृं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लृं

९२ लृं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लृं

९३ ॠं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ॠं

९४ ऋं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऋं
९५ ऊं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऊं
९६ उं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः उं
९७ ईं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ईं
९८ इं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः इं
९९ आं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः आं
१०० अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं
१०१ अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं
१०२ कं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः कं
१०३ चं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः चं
१०४ टं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः टं
१०५ तं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः तं
१०६ पं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः पं
१०७ यं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः यं
१०८ शं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः शं

* * *

भगवती लक्ष्मी एवं दीपावली हेतु उपयोगी पुस्तकें

१- **श्रीकमला कल्पतरु**

सर्वाभीष्ट-दात्री **लक्ष्मी की उपासना** का विस्तृत विवरण।

२- **दीपावली की पूजा-विधि** १५/-

'दीपावली' महा-पर्व पर प्रामाणिक पुस्तक। **(१) धन-त्रयोदशी, (२) नरक चतुर्दशी, (३) दीपावली, (४) अन्न-कूट (गोवर्द्धन-पूजा), (५) भ्रातृ-द्वितीया या भैया-दूज**— पञ्च-महा-पर्व-विषयक एक आवश्यक पुस्तक।

३- **धन-प्राप्ति के प्रयोग** ६/-

दरिद्रता का निवारण, भगवती लक्ष्मी की उपासना, धनदा प्रयोग, पर्व-प्रयोग, सिद्ध स्तोत्र, सिद्ध बीसा यन्त्र, पञ्च-दशी मन्त्र, कुबेर-मन्त्र, सविधि श्रीकनक-धारा स्तव, माँ कमला के कुछ विशिष्ट मन्त्र— आदि जैसे उपयोगी विषयों से पूर्ण एक बहु-उपयोगी लघु-पुस्तक।

११

सर्व-सिद्धि-दायक

श्रीमहा - लक्ष्मी - नामावली प्रयोग

सङ्कल्प - ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि - द्वितीय - प्रहरार्द्धे, श्वेत - वराह - कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत - खण्डे, आर्यावर्त - देशे, पुण्य - क्षेत्रे, कलि - युगे, कलि - प्रथम - चरणे, अमुक (.......) सम्वत्सरे, अमुक - मासे, अमुक - पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक - वासरे, अमुक - गोत्रः, अमुक- शर्मा (वर्मा, गुप्ता, दासो), अहं श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रीत्यर्थं अष्टोत्तर - शत - नाम - मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये।

विनियोग — ॐ अस्य श्रीमहा - लक्ष्मी - मन्त्रस्य श्रीभृगुः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहा - लक्ष्मीः देवता, शं बीजं, रं शक्तिः, ई कीलकं, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीत्यर्थं अष्टोत्तर - शत - नाम- जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यास — श्रीभृगु - ऋषये नमः शिरसि, गायत्री - छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-लक्ष्मी - देवतायै नमः हृदये, 'शं' - बीजाय नमः गुह्ये, 'रं'- शक्तये नमः पादयोः, 'ई' - कीलकाय नमः नाभौ, श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रीत्यर्थं अष्टोत्तर - शत - नाम - जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर - न्यास — श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, श्रैं अनामिकाभ्यां हुं, श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, श्रः करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग - न्यास — श्रां हृदयाय नमः, श्रीं शिरसे स्वाहा, श्रूं शिखायै वषट्, श्रैं कवचाय हुं, श्रौं नेत्र - त्रयाय वौषट्, श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान : **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिमि-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत - घटैरासिच्यमानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्ज - युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-लसितां वन्देऽरविन्द - स्थिताम्।।

अर्थात् स्वर्ण - समान कान्तिवाली, चार श्वेत हाथियों द्वारा सूँड़ में धारण किए हुए सोने के चार घड़ों से अभिषिक्त होती हुई, दो हाथों में कमल एवं दूसरे दो हाथों में वराभय धारण किए हुई, सुन्दर मुकुट एवं क्षौम - वस्त्र धारण किए, सुन्दर कमलासन पर आसीन भगवती महा-लक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूँ।

मानस - पूजन - ॐ लं पृथ्वी - तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश - तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु- तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल - तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व - तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रीतये समर्पयामि नमः।

नामावली - जप

ॐ श्रीं महा - मायायै नमः,
ॐ श्रीं महा - लक्ष्म्यै नमः,
ॐ श्रीं महा - वाण्यै नमः,
ॐ श्रीं महेश्वर्यै नमः,
ॐ श्रीं महा-देव्यै नमः,
ॐ श्रीं महा - रात्र्यै नमः,
ॐ श्रीं महिषासुर-मर्दिन्यै नमः,
ॐ श्रीं काल - रात्र्यै नमः,
ॐ श्रीं कुह्वै नमः,
ॐ श्रीं पूर्णायै नमः ॥१०॥
ॐ श्रीं आनन्दायै नमः,
ॐ श्रीं आद्यायै नमः,
ॐ श्रीं भद्रिकायै नमः,
ॐ श्रीं निशायै नमः,
ॐ श्रीं जयायै नमः,
ॐ श्रीं रिक्तायै नमः,
ॐ श्रीं महा - शक्त्यै नमः,
ॐ श्रीं देव-मात्रे नमः,
ॐ श्रीं कृशोदर्यै नमः,
ॐ श्रीं शच्यै नमः ॥२०॥
ॐ श्रीं इन्द्राण्यै नमः,
ॐ श्रीं शक्र - नुतायै नमः,
ॐ श्रीं शङ्कर-प्रिय-वल्लभायै नमः,
ॐ श्रीं महा-वराह-जनन्यै नमः,
ॐ श्रीं मदनोन्मथिन्यै नमः,
ॐ श्रीं मत्यै नमः,
ॐ श्रीं वैकुण्ठ-नाथ-रमण्यै नमः,
ॐ श्रीं विष्णु - वक्षः - स्थल - स्थितायै नमः,
ॐ श्रीं विश्वेश्वर्यै नमः,
ॐ श्रीं विश्व - मात्रे नमः ॥३०॥
ॐ श्रीं वरदायै नमः,
ॐ श्रीं अभयदायै नमः,
ॐ श्रीं शिवायै नमः,
ॐ श्रीं शूलिन्यै नमः,
ॐ श्रीं चक्रिण्यै नमः,
ॐ श्रीं मायै नमः,
ॐ श्रीं पाशिन्यै नमः,
ॐ श्रीं शङ्ख - धारिण्यै नमः,
ॐ श्रीं गदिन्यै नमः,
ॐ श्रीं मुण्ड - मालायै नमः ॥४०॥
ॐ श्रीं कमलायै नमः,
ॐ श्रीं करुणालयायै नमः,
ॐ श्रीं पद्माक्ष - धारिण्यै नमः,
ॐ श्रीं अम्बायै नमः,
ॐ श्रीं महा-विष्णु - प्रियङ्कर्यै नमः,
ॐ श्रीं गो-लोक-नाथ - रमण्यै नमः,
ॐ श्रीं गो - लोकेश्वर-पूजितायै नमः,
ॐ श्रीं गयायै नमः,
ॐ श्रीं गङ्गायै नमः,
ॐ श्रीं यमुनायै नमः, ॥५०॥
ॐ श्रीं गोमत्यै नमः,
ॐ श्रीं गरुड़ासनायै नमः,
ॐ श्रीं गण्डक्यै नमः
ॐ श्रीं सरय्वै नमः,
ॐ श्रीं ताप्यै नमः,
ॐ श्रीं रेवायै नमः,

ॐ श्रीं पयस्विन्यै नमः,
ॐ श्रीं नर्मदायै नमः,
ॐ श्रीं कावेर्यै नमः,
ॐ श्रीं केदार-स्थल-वासिन्यै नमः॥६०
ॐ श्रीं किशोर्यै नमः,
ॐ श्रीं केशव - नुतायै नमः,
ॐ श्रीं महेन्द्र - परिवन्दितायै नमः,
ॐ श्रीं ब्रह्मादि-देव-निर्माण-कारिण्यै नमः,
ॐ श्रीं देव - पूजितायै नमः,
ॐ श्रीं कोटि - ब्रह्माण्ड - कारिण्यै नमः,
ॐ श्रीं श्रुति - रूपायै नमः,
ॐ श्रीं श्रुति - कर्य्यै नमः,
ॐ श्रीं श्रुति-परायणायै नमः,
ॐ श्रीं स्मृति-परायणायै नमः ॥७०॥
ॐ श्रीं इन्दिरायै नमः,
ॐ श्रीं सिन्धु - तनयायै नमः,
ॐ श्रीं मातङ्ग्यै नमः,
ॐ श्रीं लोक - मातृकायै नमः,
ॐ श्रीं त्रिलोक - जनन्यै नमः,
ॐ श्रीं तन्त्रायै नमः,
ॐ श्रीं तन्त्र - मन्त्र - स्वरूपिण्यै नमः,
ॐ श्रीं तरुण्यै नमः,
ॐ श्रीं तमो - हन्त्र्यै नमः,
ॐ श्रीं मङ्गलायै नमः ॥८०॥
ॐ श्रीं मङ्गलायनायै नमः,
ॐ श्रीं मधु-कैटभ-मथिन्यै नमः,

ॐ श्रीं शुम्भासुर - विनाशिन्यै नमः,
ॐ श्रीं निशुम्भादि - हरायै नमः,
ॐ श्रीं मात्रे नमः,
ॐ श्रीं हरि - पूजितायै नमः,
ॐ श्रीं शङ्कर - पूजितायै नमः,
ॐ श्रीं सर्व - देव - मय्यै नमः,
ॐ श्रीं सर्वायै नमः,
ॐ श्रीं शरणागत - पालिन्यै नमः ॥९०॥
ॐ श्रीं शरण्यायै नमः,
ॐ श्रीं शम्भु - वनितायै नमः,
ॐ श्रीं सिन्धु - तीर - निवासिन्यै नमः,
ॐ श्रीं गन्धर्व - गान - रसिकायै नमः,
ॐ श्रीं गीतायै नमः,
ॐ श्रीं गोविन्द - वल्लभायै नमः,
ॐ श्रीं त्रैलोक्य - पालिन्यै नमः,
ॐ श्रीं तत्व - रूप - तारुण्य - पूरितायै नमः,
ॐ श्रीं चन्द्रावल्यै नमः,
ॐ श्रीं चन्द्र - मुख्यै नमः ॥१००॥
ॐ श्रीं चन्द्रिकायै नमः,
ॐ श्रीं चन्द्र-पूजितायै नमः,
ॐ श्रीं चन्द्रायै नमः,
ॐ श्रीं शशाङ्क - भगिन्यै नमः,
ॐ श्रीं गीत - वाद्य - परायणायै नमः,
ॐ श्रीं सृष्टि - रूपायै नमः,
ॐ श्रीं सृष्टि-कर्यै नमः,
ॐ श्रीं सृष्टि - संहार - कारिण्यै नमः ॥१०८॥

विशेष : *उक्त नाम-मन्त्रों से* ***'हवन'*** *करने के लिए* ***'नमः'*** *के स्थान पर* ***'स्वाहा'*** *जोड़ लें। भगवती महा-लक्ष्मी के* ***'यन्त्र-राज'*** *में इन्हीं मन्त्रों के अन्त में* ***'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः'*** *जोड़कर गन्धाक्षत, रक्त-पुष्प से पूजन - तर्पण भी कर सकते हैं।*

१२

'कुञ्जिका स्तोत्र' और 'बीसा यन्त्र' का अनुभूत अनुष्ठान

◘ डा० मनोहरलाल देवगुण, अर्जुननगर, नई दिल्ली

'श्री दुर्गा-सप्तशती' एक महान् मान्त्रिक-तान्त्रिक ग्रन्थ है। मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय काशीराम देवगुण एक ऐसे सिद्ध महात्मा के सम्पर्क में रहे थे, जो **'श्रीदुर्गा सप्तशती'** के तत्त्वों के ज्ञाता थे। उनकी बहुत समय तक सेवा करने के फल-स्वरूप उन्होंने अनेक विद्याएँ पिता-श्री को सिखाईं। उस समय हमारा घर साधारण था, किन्तु उक्त विद्याओं के अनुष्ठानों के फल-स्वरूप हम लाखों में खेले। मेरे पिता-श्री विशेष शिक्षित नहीं थे, परन्तु अनुष्ठान पूर्ण करने पर वे कई विद्याओं में पारङ्गत हो गए। संस्कृत, ज्योतिष जैसी विद्याएँ उन्हें अपने आप आ गईं, अरबी-फारसी आदि भाषाएँ भी बोलने, पढ़ने तथा लिखने लग गए। प्रस्तुत प्रयोग की प्राप्ति मुझे पिता-श्री से हुई, जो मैं आज साधकों को भेंट कर रहा हूँ। मैंने और मेरे मित्रों ने, जिन्होंने यह अनुष्ठान पूर्ण किया है, यह अनुभव किया है कि इसके फल-स्वरूप विद्या-प्राप्ति सहज ही हो जाती है। धन का अभाव, ग्रह-अरिष्ट, भूमि-मकान की हीनता, मुकदमें के सङ्कट, विवाह में रुकावट, तलाक-समस्या, घरेलू अशान्ति, पुत्र का अभाव, रोजगार की कमी, दरिद्रता, कारोबार में अवनति आदि दूर होकर पूर्ण अनुकूल फल मिलता है। आर्थिक दृष्टि से आनेवाली कठिनाइयाँ तो इसे प्रारम्भ करते ही समाप्त हो जाती हैं।

प्राण-प्रतिष्ठा करने के पर्व

चन्द्र-ग्रहण, सूर्य-ग्रहण, दीपावली के तीन दिन (धनतेरस, चौदह, अमावस), रवि-पुष्य-योग, रवि-मूल-योग तथा महा-नवमी के दिन 'रजत-यन्त्र' की प्राण-प्रतिष्ठा, पूजादि विधान करें। इनमें से जो समय आपको मिले, साधना प्रारम्भ करें। ४१ दिन तक विधि-पूर्वक पूजादि करने से सिद्धि होती है। ४२वें दिन नहा-धोकर अष्ट-गन्ध से स्वच्छ भोज-पत्र पर ४१ यन्त्र बनाएँ। पहला यन्त्र अपने गले में धारण करें। बाकी यन्त्र दीन-दुखी, दरिद्रों की सेवा में आवश्यकतानुसार बाँट दें।

प्राण-प्रतिष्ठा - विधि

सर्व-प्रथम किसी स्वर्णकार से पन्द्रह ग्राम का तीन इञ्च चौकोर चाँदी का पत्र (यन्त्र) बनवाएँ। अनुष्ठान प्रारम्भ करने के दिन ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर, स्नान करके सफेद धोती-कुरता पहनें। कुशा का आसन बिछाकर उसके ऊपर मृग-छाला बिछाएँ। यदि मृग-छाला न मिले, तो कम्बल बिछाएँ, उसके ऊपर पूर्व को मुख कर बैठ जाएँ।

अपने सामने लकड़ी का एक पाटा रक्खें। पाटे पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर एक थाली (स्टील की नहीं) रक्खें। थाली में पहले से बनवाए हुए चौकोर रजत-पत्र को रक्खें। रजत-पत्र पर अष्ट-गन्ध से 'यन्त्र' लिखें। १ चन्दन, २ अगर, ३ केशर, ४ कुंकुम, ५ गोरोचन, ६ शिला-रस, ७ जटामासी, ८ कपूर — इन आठों को 'अष्ट-गन्ध' कहते हैं। इन्हें पीस कर स्याही बना लें

और अनार या बिल्व-वृक्ष की टहनी की लेखनी बना लें।

पहले 'यन्त्र' की रेखाएँ बनाएँ। रेखाएँ बनाकर बीच में 'ॐ' लिखें। फिर मध्य में **६**, तब २, फिर ३, तब ८ लिखें। इसके बाद पहले खाने में १, दूसरे में ६, तीसरे में १०, चौथे में १४, छठे में ६, सातवें में ५, आठवें में ११, नवें में ४ लिखें। फिर 'यन्त्र' के ऊपरी भाग पर 'ॐ ऐं ॐ' लिखे। तब 'यन्त्र' की निचली तरफ 'ॐ क्लीं ॐ' लिखें। यन्त्र के उत्तर की तरफ 'ॐ श्रीं ॐ' लिखें। यन्त्र के दक्षिण की तरफ 'ॐ क्लीं ॐ' लिखें। देखें चित्र

	ॐ	ऐं	ॐ	
ॐ	१	६	१०	ॐ
श्रीं	१४	७ २ ॐ ३ ८	६	क्लीं
ॐ	५	११	४	ॐ
	ॐ	क्लीं	ॐ	

प्राण-प्रतिष्ठा

अब 'यन्त्र' की प्राण-प्रतिष्ठा करें। यथा— बाँयाँ हाथ हृदय पर रखें और दाएँ हाथ में पुष्प लेकर उससे 'यन्त्र' को छुएँ और निम्न प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र को पढ़ें—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः, ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम सर्व-इन्द्रियाणि इह सर्व-इन्द्रियाणि, ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम वाङ्-मनश्चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

'यन्त्र' का पूजन

इसके बाद 'रजत-यन्त्र' के नीचे थाली पर एक पुष्प आसन के रूप में रखकर 'यन्त्र' को साक्षात् भगवती चण्डी-स्वरूप मानकर पाद्यादि उपचारों से उनकी पूजा करें। प्रत्येक उपचार के साथ **'समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमः'** वाक्य का उच्चारण करें। यथा —

१ पाद्यं (जल) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। २ अर्घ्यं (जल) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ३ आचमनं (जल) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ४ गङ्गा-जलं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ५ दुग्धं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ६ घृतं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ७ तरु-पुष्पं (शहद) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ८ इक्षु-क्षारं (चीनी) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ९ पञ्चामृतं (१ दूध, २ दही, ३ घी, ४ शहद, ५ गङ्गाजल) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १० गन्धम् (चन्दन) समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। ११ अक्षतान् समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १२ पुष्प-मालां समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १३ मिष्ठान्न-द्रव्यं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १४ धूपं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १५ दीपं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १६ पूगी-फलं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः।

१७ फलं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १८ दक्षिणां समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः। १९ आरतीं समर्पयामि चण्डी-यन्त्रे नमो नमः।

तदनन्तर 'यन्त्र' पर पुष्प चढ़ा कर निम्न मन्त्र बोलें—

पुष्पे देवा प्रसीदन्ति, पुष्पे देवाश्च संस्थिताः।

अब **'सिद्ध-कुञ्जिका-स्तोत्र'** का पाठ कर यन्त्र को जागृत करें। यथा —

।।शिव उवाच।।

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, कुञ्जिका - स्तोत्रमुत्तमम्। येन मन्त्र-प्रभावेण, चण्डी - जापः शुभो भवेत्। न कवचं नार्गला-स्तोत्रं, कीलकं न रहस्यकम्। न सूक्तं नापि ध्यानं च, न न्यासो न च वार्चनम्। कुञ्जिका - पाठ - मात्रेण, दुर्गा - पाठ-फलं लभेत्। अति - गुह्यतरं देवि! देवानामपि दुर्लभम्। मारणं मोहनं वश्यं, स्तम्भनोच्चाटनादिकम् । पाठ - मात्रेण संसिध्द्येत् कुञ्जिका - स्तोत्रमुत्तमम्।।

मन्त्र— *ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।*

नमस्ते रुद्र - रूपायै, नमस्ते मधु - मर्दिनि ! नमः कैटभ - हारिण्यै, नमस्ते महिषार्दिनि!१
नमस्ते शुम्भ - हन्त्र्यै च, निशुम्भासुर - घातिनि! जाग्रतं हि महा-देवि! जप-सिद्धिं कुरुष्व मे।।२
ऐं-कारी सृष्टि-रूपायै, ह्रींकारी प्रति - पालिका। क्लींकारी काल-रूपिण्यै, बीज-रूपे नमोऽस्तु ते।३
चामुण्डा चण्ड-घाती च, यैकारी वर - दायिनी। विच्चे नोऽभयदा नित्यं, नमस्ते मन्त्र - रूपिणि!४
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी, वां वीं वागेश्वरी तथा। क्रां क्रीं श्रीं मे शुभं कुरु, ऐं ॐ ऐं रक्ष सर्वदा।५
ॐ ॐ ॐ कार-रूपायै, ज्रां ज्रां ज्रम्भाल-नादिनी। क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि ! शां शीं शूं मे शुभं कुरु।६
हूं हूं हुङ्कार-रूपिण्यै, ज्रं ज्रं ज्रम्भाल - नादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे! भवानि ते नमो नमः।७
अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराविर्भव। आविर्भव हं सं लं क्षं मयि जाग्रय जाग्रय। त्रोटय त्रोटय दीप्तं, कुरु - कुरु स्वाहा। पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा।८
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुञ्जिकायै नमो नमः। सां सीं सप्तशतीं सिद्धिं, कुरुष्व जप-मात्रतः।९

।।फल - श्रुति।।

इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मन्त्र-जागर्ति-हेतवे। अभक्ते नैव दातव्यं, गोपितं रक्ष पार्वति!१
यस्तु कुञ्जिकया देवि! हीनां सप्तशतीं पठेत्। न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।२

फिर 'यन्त्र' की तीन बार 'प्रदक्षिणा' करते हुए यह मन्त्र बोलें—

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणं पदे पदे।।

'प्रदक्षिणा' करने के बाद यन्त्र को पुनः नमस्कार करते हुए यह मन्त्र पढ़ें—

एतस्यास्त्वं प्रसादन, सर्व-मान्यो भविष्यसि। सर्व-रूप-मयी देवी, सर्व-देवी-मयं जगत्।।
अतोऽहं विश्व-रूपां तां, नमामि परमेश्वरीम्।।

अन्त में हाथ जोड़कर 'क्षमा-प्रार्थना' करें। यथा—

अपराध-सहस्राणि, क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा, क्षमस्व परमेश्वरि!

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वरि!

मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि ! यत्-पूजितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे॥

अपराध-शतं कृत्वा, जगदम्बेति चोच्चरेत्। या गतिः समवाप्नोति, न तां ब्रह्मादयः सुराः॥

सापराधोऽस्मि शरणं, प्राप्यस्त्वां जगदम्बिके! इदानीमनुकम्प्योऽहं, यथेच्छसि तथा कुरु॥

अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या, यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तत् सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि!

कामेश्वरि जगन्मातः, सच्चिदानन्द-विग्रहे! गृहाणार्चामिमां प्रीत्या, प्रसीद परमेश्वरि!

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्-प्रसादात् सुरेश्वरि!

विशेष — उक्त प्रकार से ४१ दिन तक **'यन्त्र'** का पूजन कर **'सिद्ध-कुञ्जिका-स्तोत्र'** का पाठ करे और विधिवत् प्रदक्षिणा नमस्कार करें। ४२ वें दिन जन-कल्याण हेतु रोग, शोकादि से पीड़ित दुखियों का कष्ट दूर करने के लिए ही इस **'यन्त्र'** का प्रयोग करें। यदि निर्लोभ-भाव से पूजन और प्रतिष्ठा की जाएगी, तो सभी प्रकार की सफलता तो मिलेगी ही, साथ ही मां की कृपा भी प्रयोग-कर्ता पर बनी रहेगी।

★ ★ ★

दुर्लभ वस्तुएँ :

एकाक्षी नारियल

पौराणिक कथा के अनुसार 'नारियल' की रचना विश्वामित्र ने की है। 'नारियल' के प्रत्येक फल पर, जटा उतारने के बाद, टहनी की ओर तीन बिन्दु दिखाई पड़ते हैं। मान्यता है कि इनमें से दो बिन्दु नेत्र के प्रतीक हैं तथा एक बिन्दु मुख का। तीन बिन्दुवाले नारियल तो सुलभ हैं, किन्तु ऐसा नारियल, जिसमें केवल एक बिन्दु पाया जाता है, उसे 'एकाक्षी नारियल' कहते हैं। ऐसा नारियल अत्यन्त दुर्लभ है। जिसमें दो बिन्दु पाए जाते हैं, वह भी 'एकाक्षी नारियल' की ही श्रेणी में आता है।

'एकाक्षी नारियल' को कभी तोड़ना नहीं चाहिए। अमृत-योग, सिद्धि - योग, पुष्य-योग जैसे शुभ मुहूर्त एवं वृष अथवा सिंह लग्न में 'एकाक्षी नारियल' की पूजा करें। घर में आम की लकड़ी के आसन पर, लाल वस्त्र बिछाकर, थाली में 'एकाक्षी नारियल' रखकर, स्नान कराकर, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, सिन्दूर, पुष्प, चावल अर्पित करके धूप दें। तत्पश्चात् 'नारियल' को घर में सुरक्षित रख दें। जिस परिवार में 'एकाक्षी नारियल' की नियमित पूजा होती है, वहाँ देवी लक्ष्मी स्वयं वास करती हैं। घर में सुख-शान्ति होती है और धन - व्यापार की वृद्धि होती है।

— पं० कृपाशङ्कर दुबे शास्त्री, वर्रा भाग-२, ८५ ए, सेक्टर-वाई, ई.डब्लू.एस., कानपुर

१३

श्रीराम-बीसा-यन्त्र
और
श्रीनृसिंह-बीसा-यन्त्र

अमावास्या, पूर्णिमा, मङ्गलवार, रविवार अथवा शनिवार को इस यन्त्र को भोज-पत्र पर अष्ट-गन्ध के चूर्ण और अनार की टहनी से लिखे। नित्य 'पूजन' करे और 'यन्त्र-गायत्री' का 'जप' करे। इससे सर्व-कार्य-सिद्धि होती है।

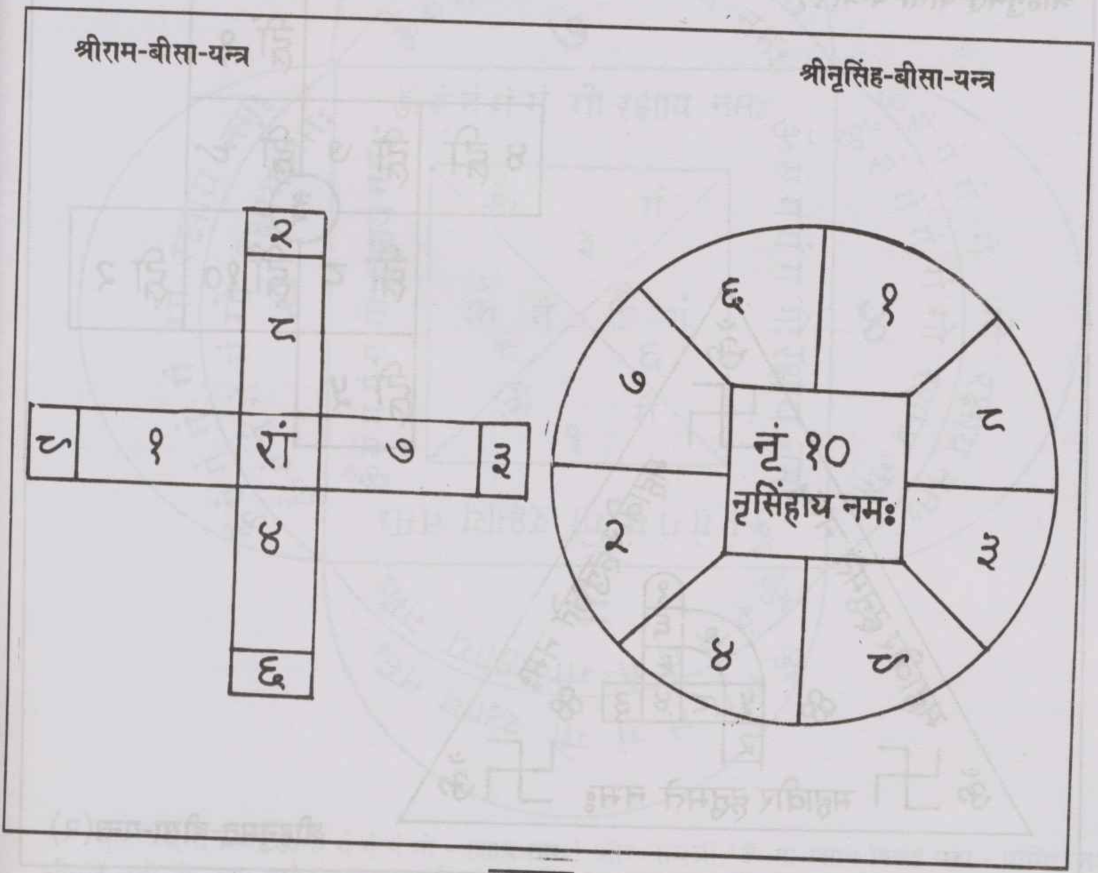

श्रीहनुमन्त-बीसा-यन्त्र

(१) इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त ('पुष्य' नक्षत्र आदि) में ताम्र-पत्र पर खुदवा कर नित्य पूजा करे। इससे ऐश्वर्य, सन्तान की इच्छा की पूर्ति होती है।

(२) इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त में 'अष्ट-गन्ध' से 'भोज-पत्र' पर लिखकर, स्वर्ण या चाँदी की डिबिया के अन्दर रक्खे। नित्य पूजन करे। इससे धन-धान्य, अतुल बल-वैभव की प्राप्ति होती है।

श्रीहनुमत्-बीसा-यन्त्र(१)

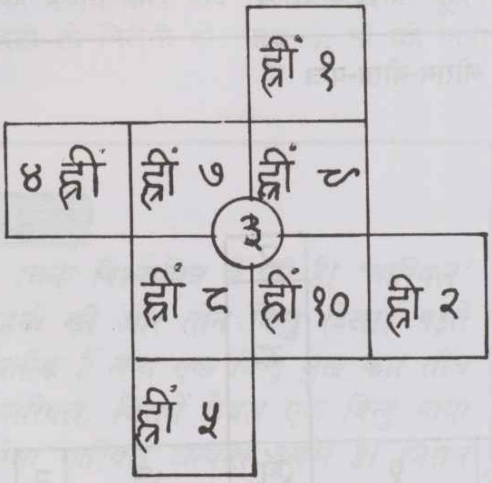

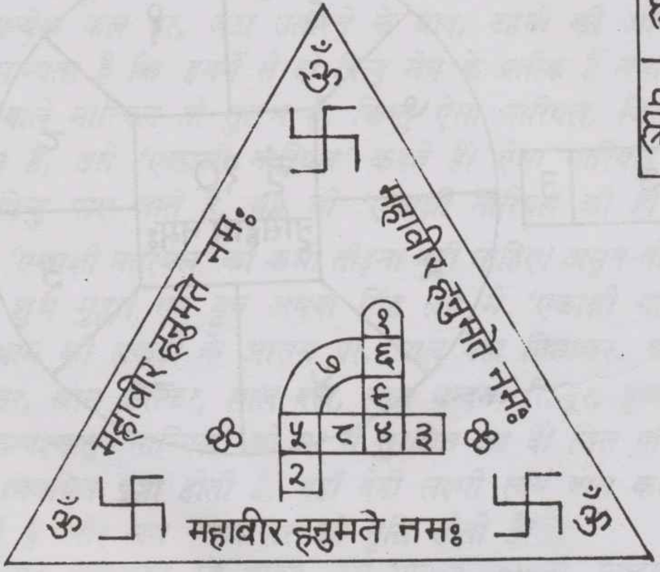

श्रीहनुमत्-बीसा-यन्त्र(२)

१५

श्री गो - रक्ष - बीसा - यन्त्र

अष्ट - गन्ध, कुंकुम, केसर, गोरोचन, मलयगिरि चन्दन, शहद, घृत, सिन्दूर और अनार की कलम से शुभ कार्यों के लिए भोज - पत्र या पीपल के पत्ते पर लिखें। पीपल के पत्ते पर नित्य लिखने से यह स्वतः सिद्ध हो जाता है। क्रूर कर्मों में शाही के काँटे से, बाँएँ हाथ की कनिष्ठा अँगुली के रक्त और चन्दन से लिखे। शत्रु का नाम यन्त्र के पास लिखें।

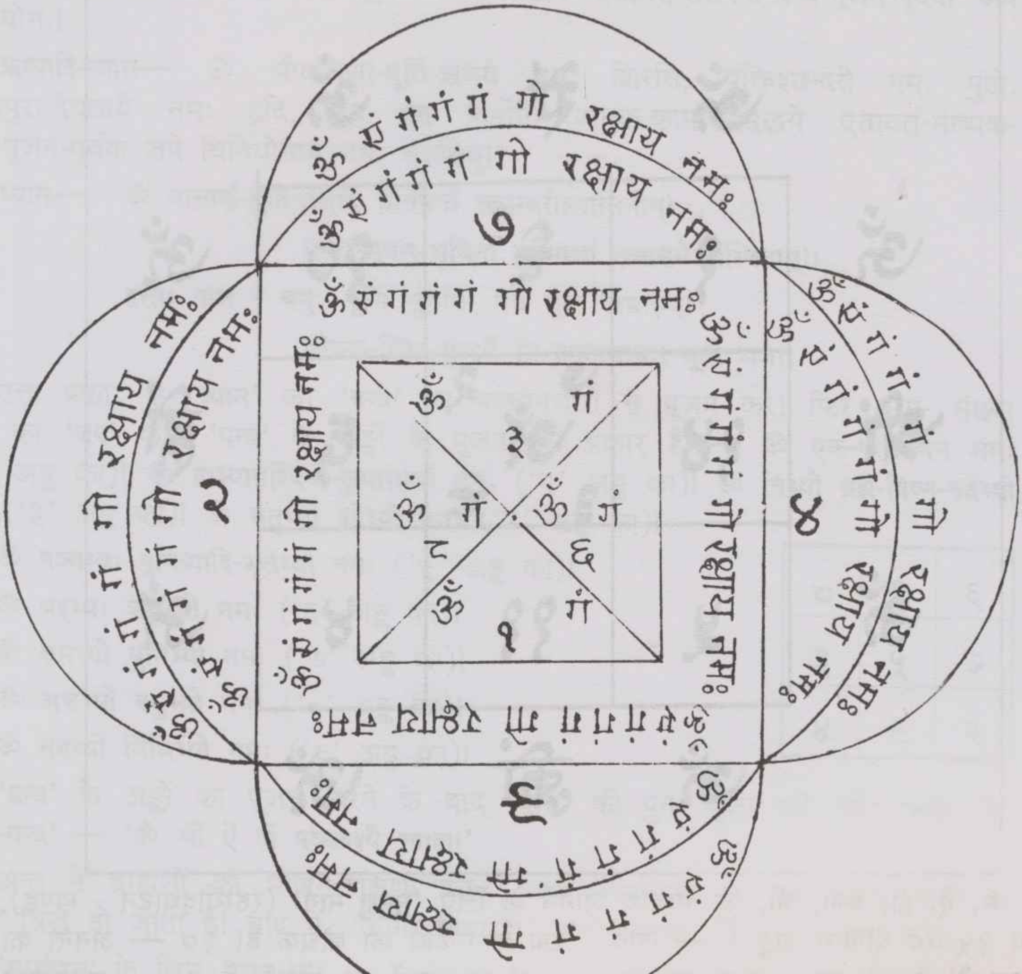

मूल - मन्त्र — **'ॐ ऐं गं गं गं गो - रक्षाय नमः'** और गायत्री **'ॐ गो-रक्षाय विद्महे महा - योगिराजाय धीमहि तन्नो गो- रक्षः प्रचोदयात्,'** का नित्य 'जप' करें।

१६

सर्व-कामना-सिद्धि-यन्त्र

❖ **'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामजी पाठक, दारागञ्ज, प्रयाग-राज**

भोज - पत्र पर रक्त चन्दन से निम्न - लिखित **'बीसा - यन्त्र'** लिखे। 'यन्त्र' के भावार्थ का ध्यान करते हुए प्रति - दिन निश्चित समय पर पञ्चोपचारों से पूजन करे। ऐसा करने से सभी कामनाएँ, मनोरथ पूर्ण होंगे।

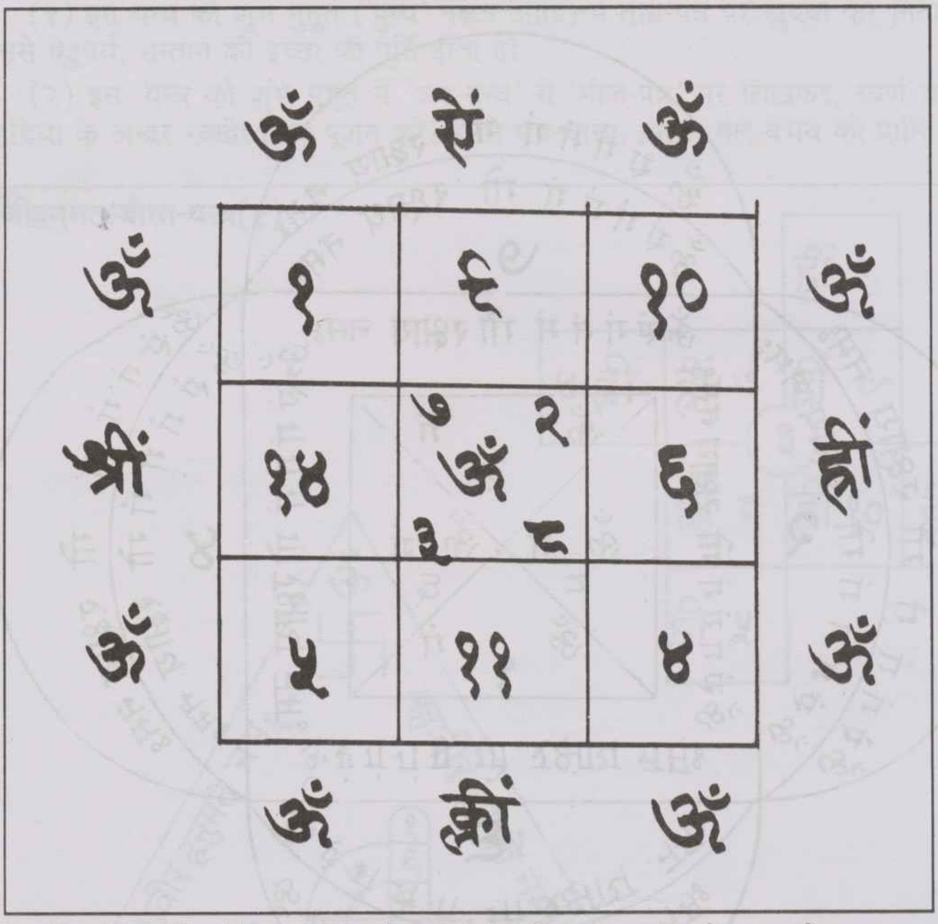

ॐ, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं, का भावार्थ जानने के लिए **'मुमुक्षु मार्ग'** (रहस्योद्घाटन - खण्ड), मूल्य १५-०० देखिए। अङ्क १ — जीव - ब्रह्म के एकत्व का बोधक है। १० — अनन्त का बोधक है। ९ — नव - निधि का। १४ — चौदह भुवनों का बोधक है। ७ — व्याहृतियों का। २ — अन्तर्बाह्य जगत् का बोधक है। ३ — त्रि - गुणात्मक सृष्टि का। ८ — अष्टधा प्रकृति का बोधक है। ६ — षड् - विकार का। ५ — पञ्च - भूतों का बोधक है। ११— एकादश इन्द्रियों का और अङ्क ४ चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का द्योतक है।

पञ्च-दशी प्रयोग-विधि

'पञ्च-दशी-यन्त्र' महा-त्रिपुर-सुन्दरी का स्वरूप है। **'पञ्च-दशी-यन्त्र'** के प्रयोग-कर्त्ता को चाहिए कि पहले **'गुरु'** से आज्ञा लेकर **'यन्त्र'** को किस प्रकार लिखा जाता है, यह समझे। फिर शुभ मुहूर्त्त में **'यन्त्र-लेखन'** करे। **'यन्त्र-लेखन'** के पूर्व निम्न प्रकार से **विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, ध्यान, मन्त्र-जप** करे -----

विनियोग— ॐ अस्य श्रीपञ्च-दशी-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्त्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री त्रिपुरा-देवता, मम इह जन्मनि अमुक-कामना-सिद्धये एतावत्-संख्यक-यन्त्र-पूजन-पूर्वक जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— ॐ श्रीदक्षिणा-मूर्ति-ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, श्रीत्रिपुरा-देवतायै नमः हृदि, मम इह जन्मनि अमुक-कामना-सिद्धये एतावत्-संख्यक-यन्त्र-पूजन-पूर्वक जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

ध्यान— **ॐ बालार्क-द्युति-तेजसां त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम्।**
नाना-भूषण-भूषितां सुविमलां रत्नासने संस्थिताम्।।
हस्तैः पाश - धनुः शृणि सुरुचिरं पद्मं मुदा बिभ्रतीम्।
श्रीचक्र-स्थित-सुन्दरीं त्रि-जगतामाधार-भूतां भजे।।

उक्त प्रकार से **'ध्यान'** कर **'यन्त्र'** का पञ्चोपचारों से पूजन करे। फिर यथा- संख्या मन्त्र का **'जप'** करे। **'यन्त्र'** के अङ्कों के पूजन इस प्रकार हैं — **ॐ एक-परमात्मने नमः** ('१' अङ्क का)। **ॐ द्वाभ्यामश्विनी-कुमाराभ्यां नमः** ('२' अङ्क का)। **ॐ त्रिभ्यो ब्रह्म-विष्णु-रुद्रेभ्यो नमः** ('३' अङ्क का)। **ॐ चतुर्भ्यो वेदेभ्यो नमः** ('४' अङ्क का)।

ॐ पञ्चभ्यः पृथिव्यादि-भूतेभ्यो नमः ('५' अङ्क का)।
ॐ षड्भ्यः ऋतुभ्यो नमः ('६' अङ्क का)।
ॐ सप्तभ्यो मुनिभ्यो नमः ('७' अङ्क का)।
ॐ अष्टभ्यो वसुभ्यो नमः ('८' अङ्क का)।
ॐ नवभ्यो निधिभ्यो नमः ('९' अङ्क का)।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

'यन्त्र' के अङ्कों का पूजन करने के बाद **'यन्त्र'** की पुनः पूजा करे और **'बलि'** दे। **'बलि-मन्त्र'** — **'ॐ श्रीं ऐं ह्रीं पञ्चदश्यै स्वाहा।'**

अन्त में ब्राह्मणों को भोजन-दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद ले। इस प्रकार करने से **'यन्त्र'** सिद्ध हो जाता है। बाद में, 'अनिष्ट-निवारण', मनो-कामना-पूर्ति हेतु **'प्रयोग'** करे।

'सम्मोहन' के लिए **'लाल-रङ्ग'** से, **'वशीकरण'** के लिए **'गोरोचन'** से, **'सर्वाकर्षण'** के लिए **'कस्तूरी'** से, **'स्तम्भन'** के लिए **'हल्दी'** से, देवता के दर्शन के लिए **'केशर'** से **'यन्त्र'** लिखना चाहिए। **'शान्ति'** के लिए **'चन्दन'** से **'यन्त्र'** लिखना चाहिए।

★ ★ ★

१८

'पञ्च-दशी यन्त्र' से भगवती लक्ष्मी की कृपा-प्राप्ति

❖ *'कुल-वाणी-रत्न' श्रीचन्दूलाल गण्डालाल शाह, जामनगर (गुजरात)*

विधि— उक्त **'पञ्च-दशी-यन्त्र'** में **'श्रीं'**-बीज युक्त संख्याएँ हैं। भगवती लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए अथवा दरिद्रता के निवारण के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है।

'श्रीं'-बीज युक्त 'पञ्च-दशी-यन्त्र'

श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्र८ीं	श्र१ीं	श्र६ीं
श्रीं	श्र३ीं	श्र५ीं	श्र७ीं
श्रीं	श्र४ीं	श्र९ीं	श्र२ीं

महा-वीराय नमः

ॐ

श्री विधायकाय

'दीपावली' की सन्ध्या में सूर्यास्त के बाद उक्त **'यन्त्र'** लिखना प्रारम्भ करे। नूतन वर्ष के सूर्योदय तक **'यन्त्र'** लिखता रहे। सूर्योदय के समय अन्तिम **'यन्त्र'** एक बड़े कागज के ऊपर लिखकर **'पूजा'-स्थान** में रक्खे। उसे धूप-दीप दिखाए। साथ ही, एक छोटा और **'यन्त्र'** भी बनाकर उसे **'ताबीज'** में भरकर गले में धारण करे।

'दीपावली' की रात्रि में जागरण करते हुए **'यन्त्र'** लिखे। **'यन्त्रों की गिनती'** न करे। जितने लिख सके, उतने लिखे। किसी प्रकार की गिनती न करे। अन्तिम **'दो यन्त्रों'** को, जैसे ऊपर बताया गया है, उसी प्रकार उपयोग में लाए। शेष **'यन्त्रों'** को बाद में आटे की अलग-अलग गोलियों में रखकर मछलियों को खिलाए या जल में विसर्जित करे।

'यन्त्र' लिखते समय **'श्रीं नमः'** मन्त्र का स्मरण भी बिना गिनती के करे। बाद में, इस मन्त्र का **'जप'** नित्य कम-से-कम १०८ बार करे और **'यन्त्र'** का **'पूजन'** करे। यदि **'दरिद्रता-नाशक सूक्त'** का नित्य ११ बार **'पाठ'** भी करे, तो अति उत्तम। **'दरिद्रता-नाशक सूक्त'** कल्याण मन्दिर प्रकाशन, प्रयाग-६ द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'श्रीकमला-कल्पतरु'** में प्रकाशित है।

★ ★ ★

१९

एक विशिष्ट यन्त्र

❖ *श्री सुधीरकुमार, बरौनी थर्मल पावर स्टेशन, चकिया, बेगूसराय ८५११६१ (बिहार)*

'यन्त्र' किसी-न-किसी देवी या देवता के प्रतीक होते हैं। **'यन्त्र'** को स्वर्ण-पत्र, रजत-पत्र, ताम्र-पत्र या भोज-पत्र पर लिखा जाता है। **'यन्त्र'** मन की एकाग्रता के श्रेष्ठ साधन हैं। **'यन्त्र'** के द्वारा **'निष्काम'** व **'सकाम'**— दोनों प्रकार की साधनाएँ होती हैं। **'यन्त्र-साधना'** की सफलता के लिए शुद्धता, निर्धारित समय के प्रति दृढ़ता, भोग-भावों का त्याग, अल्पाहार, भूमि-शयन, धैर्य आदि बातें आवश्यक हैं। कुछ निर्देश इस प्रकार हैं —

(१) जिस **'यन्त्र'** को **'धारण'** करना हो, उसे चन्दन, रोली आदि से आम, चन्दन या निर्देशित लकड़ी के तख्तों पर सवा लाख बार लिखना चाहिए। फिर **'धारण'** करना चाहिए।

(२) **'यन्त्र-साधना'** के स्थान को धूप-दीप-सुगन्ध से सुवासित करना चाहिए। अपनी दृष्टि के सम्मुख अपने आराध्य देव की मूर्त्ति या चित्र रखना चाहिए।

(३) **'साधना'** की समाप्ति पर **'गुरु-वन्दना'** कर उनसे शुभाशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए तथा यथा-शक्ति सुपात्र ब्राह्मणों को भोजन आदि कराना चाहिए।

(४) शुभ मुहूर्त्त, गुरु-पुष्य, रवि-पुष्य, नवरात्र, विजयादशमी, **दीपावली** आदि के दिन अष्ट-गन्ध, केशर, कस्तूरी, हिंगुल आदि से **'यन्त्र'** लिखना चाहिए। लिखे हुए **'यन्त्र'** को स्वर्ण, रजत, ताम्र, त्रिलोह आदि की **'ताबीज'** में रखना चाहिए।

(५) **'यन्त्र'** धारण करने के बाद सप्ताह में अथवा मास में एक बार १०८ बार **'यन्त्र'** अवश्य लिखते रहना चाहिए। प्रति-दिन ११ बार लिखते रहना चाहिए। ऐसा करने से विशेष सफलता प्राप्त होती है। **'यन्त्र'** के नीचे **स्वयं का नाम, पिता-पितामह के नाम, गोत्रादि** भी लिखना चाहिए। **होली, दीपावली, नवरात्र, ग्रहण** में **'यन्त्र'** को पुनः लिखना चाहिए।

चौवन का यन्त्र

१३	१६	१९	६
१८	७	१२	१७
८	२१	१४	११
१५	१०	९	२०

'चौवन' के **'यन्त्र'** का निर्माण करने के लिए सर्व-प्रथम पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण की ओर ५-५ सीधी रेखाएँ खींचे। इस प्रकार १६ कोष्ठक का **'यन्त्र'** तैयार हो जाएगा।

'यन्त्र' के नीचे अपना नाम............ जन्म-तिथि............... पिता.......... पितामह........... प्रपितामह.......... गोत्र......... यन्त्र-निर्माण-तिथि............ राशि........... कार्य.............. लिखें। **'यन्त्र-निर्माण'** के पश्चात् कर्म-काण्डी ब्राह्मण द्वारा पूजा करानी चाहिए। फिर **'यन्त्र'** को धारण करना चाहिए।

'५४ का यन्त्र' धारण करने से जातक को पूर्ण सुख की प्राप्ति होती है। यदि बाँझ स्त्री धारण करे, तो उसे **सन्तान-लाभ** होता है। यदि छात्र इसे धारण करे, तो उसे **परीक्षा में सफलता** प्राप्त होती है। यदि निर्धन व्यक्ति इसे धारण करे, तो उसे **धन की प्राप्ति** होती है। इस **'यन्त्र'** के प्रभाव से रोगी **रोग से मुक्त** हो जाता है, भूत-प्रेत-पिशाच आदि का भय नहीं रहता, **व्यापार में दिनो-दिन वृद्धि** होती है, **ऋण-भार से मुक्ति** मिलती है।

'जैन-धर्म' के यन्त्र

❖ *'कुल-वाणी-रत्न' पं० राजेन्द्रकुमार अवस्थी, २ ज १० हिरणमगरी, उदयपुर (राज०)*

प्रस्तुत **'यन्त्र'** व उसकी **'लेखन-विधि'** मुझे समय-समय पर जैन-धर्मावलम्बियों एवं आचार्यों से प्राप्त हुई है। **'यन्त्र'** लिखनेवाले बन्धुओं को निम्न-लिखित बातों से अवगत होना चाहिए। यथा—

(१) **गन्ध** — प्रायः **'यन्त्र'** पञ्च-गन्ध, अष्ट-गन्ध या 'यक्ष-कर्दम' से लिखे जाते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

(क) पञ्च-गन्ध— १ केशर, २ कस्तूरी, ३ कपूर, ४ चन्दन व ५ गोरोचन।

(ख) अष्ट-गन्ध— १ अगर, २ गोरोचन, ३ तगर, ४ कस्तूरी, ५ चन्दन, ६ सिन्दूर, ७ लाल चन्दन और ८ केसर।

अथवा १ संघरक, २ गोरोचन, ३ कपूर, ४ कस्तूरी, ५ केसर, ६ चन्दन, ७ अगर और ८ गेहुँआ। अथवा १ केशर, २ कस्तूरी, ३ कपूर, ४ हिंगुल, ५ चन्दन, ६ लाल चन्दन, ७ अगर और ८ तगर।

(ग) **यक्ष-कर्दम—** चन्दन, केशर, कपूर, अगर, कस्तूरी, गोरोचन, हिंगुल, रतांजरी, अम्बर, सोने का वर्क, मिरच, कंकौभु, कंकोल।

उक्त किसी **'गन्ध'** को खरल में गङ्गा-जल अथवा शुद्ध जल में घोटकर लिखने की स्याही-जैसा बना ले। स्याही को किसी स्वच्छ पवित्र पात्र में एकत्रित करे। स्याही यदि पहले से बनाकर सुखाकर रखी हो, तो आवश्यकतानुसार उसमें गङ्गा-जल मिलाकर काम में लाए। यह ध्यान रक्खे कि लिखते समय स्याही कम न पड़े।

(२) **कलम—** प्रायः अनार, चमेली व सोने की कलम का उपयोग होता है। ११ अङ्गुल से कम लम्बी कलम का उपयोग वर्जित है। अतः ११ या १३ अङ्गुल लम्बी कलम की व्यवस्था करे। सोने की कलम में ध्यान रहे कि जिस होल्डर में सोने का निब लगाए, उसमें लोहे का कोई अंश न हो तथा लिखते समय कलम टूटने न पाए।

(३) **भोज-पत्र— 'भोज-पत्र'** स्वच्छ, दाग-रहित हो, कटा-फटा न होना चाहिए। **'भोज-पत्र'** यन्त्र से एक अङ्गुल अधिक लम्बा-चौड़ा होना चाहिए। **'भोज-पत्र'** उपलब्ध न हो, तो स्वच्छ कागज को गङ्गा-जल से पवित्र कर प्रयोग में ला सकते हैं।

(४) **योजना—** सर्व-प्रथम **'यन्त्र'** के आकार व खानों को बना लें। फिर सबसे छोटी संख्या के अङ्क से उत्तरोत्तर वृद्धि अङ्क लिखे। **'यन्त्र'** को भली-भाँति समझकर पहिले अभ्यास कर ले। भूल होने पर दूसरे **भोज-पत्र** या **कागज** पर **'यन्त्र'** लिखे। अङ्क पर अङ्क न लिखे, न ही किसी प्रकार की काट-छाँट करे।

अधिकांश **'यन्त्रों'** में विविध खानों में अङ्कित अङ्कों का योग किसी भी दिशा से गिनें, तो अन्त में समान अङ्क होता है। ऐसे **'यन्त्र'** प्रत्येक दिशा में समान बल रखते हैं व निज प्रभाव को कम नहीं होने देते।

कुछ **'यन्त्रों'** में भिन्न प्रकार के खाने होते हैं व भिन्न अङ्कों से अङ्कित होते हैं। प्रत्येक अङ्क निज बल को पिछले अङ्क से मिला कर दश गुणा बढ़ा देता है। इस प्रकार की योजना **'यन्त्र-शक्ति'** को बंढ़ाने के लिए होती है। अतः योग के अङ्क समान न होने पर प्रभाव व लाभ के प्रति शङ्का न करें।

(५) यन्त्र-लेखन-विधान— यदि विशेष विधान दिया गया हो, तो उसी के अनुसार **'यन्त्र'** लिखना चाहिए। अन्यथा, सामान्यतः **'यन्त्र'** को सुखासन (कुशासन) पर बैठकर लिखे। चौकी या पट्टे पर **भोज-पत्र/कागज** को रक्खे। घुटने पर रखकर कदापि न लिखे। नाभि के नीचे के अङ्ग ऐसे कार्यों में वर्जित हैं। **स्थान, आसन, पूजन-सामग्री** की शुद्धता व पवित्रता का सावधानी-पूर्वक ध्यान रखे। **धूप, दीप** का आयोजन लिखते समय करे।

'यन्त्र'- लिखने के लिए यदि दिशा का निर्देश हो, तो उसी दिशा की ओर मुँह करके **'यन्त्र'** लिखना चाहिए। अन्यथा, सुख-सम्पदा-प्राप्ति हेतु **'पूर्व'** की ओर मुँह करके लिखे और आधि-व्याधि, कष्ट-सङ्कट-निवारण हेतु **'उत्तर'** की ओर मुँह करके लिखे। श्रद्धा व विश्वास अडिग रखे। **'यन्त्र'** लिखने से पूर्व **'णमोकार'** मन्त्र (**णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं**) का कम-से-कम १०८ बार **'जप'** कर ले, तो अति उत्तम।

(६) यन्त्रों के आकार— **'यन्त्रों'** के आकार स्तम्भन हेतु **चौकोर,** उच्चाटन हेतु **षट्-कोण,** विद्वेषण हेतु **त्रिकोण,** वशीकरण हेतु **कमलाकार** व शान्ति हेतु **गोल** होते हैं।

(७) प्राण-प्रतिष्ठा— सभी **'यन्त्रों'** की प्राण-प्रतिष्ठा इस प्रकार करे —

पहले चन्दन-लिप्त **लवङ्ग** व **सर्वौषधि**-सहित **'सूरि मन्त्र'** से अभिषेक करे— **'श्री जिनाय परम-जिनाय नमः, श्री जिन स्नपयामि स्वाहा। सर्वौषधि-स्नपनम्।।'** २१ बार **'मन्त्र'** बोलकर **'अभिषेक'** करे। फिर, **''णमो अरि हन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।''** और—

'ॐ परम-हंसाय नमः हंस हंसः, हं हं हें हैं हौं हः असि आउसा सम्यग्-दर्शन-ज्ञान- चारित्रेभ्यो नमः।' — मन्त्र पढ़कर जल, दूध, चन्दन, दूर्वा, दर्भ, पुष्प— इन सबको **'यन्त्र'** पर छिड़के।

तब, **'प्राण-प्रतिष्ठा-मन्त्र'** पढ़े —

(१) **ॐ आं क्रौं ह्रीं असि आउसा य र ल व श ष स ह आयुष्य प्राणः आमुख्य जीवाः इह स्थिताः आमुख्य यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणिकाय वाङ्-मनश्चक्षुश्रोंत्र-घ्राण-प्राणाः** (यन्त्र का नाम............) **इहैवायन्तु अहं अत्र सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।**

(२) **णमो अरहन्ताणं भय वदो वड्ढमान स्वामीणां चक्क चणन्द आगच्छ।** (इति। मूल-मन्त्र

लिख्यते।) **णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धान्तं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। ॐ ह्रीं ह्रें ह्रों ह्रें ह्रें ह्रैं हः अप्रति-चक्रे फट् स्वाहा।।**

ॐ ह्रीं असि आउसा झ्रों झ्रों स्वाहा।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः असि आउसा स्वाहा।।

अन्त में अपने गुरु-देव को कोटिशः नमन करें।

(१)

लक्ष्मी-प्राप्ति, भय-निवारण और गर्भ-रक्षा-यन्त्र

ॐ ह्रीं लक्ष्मी

१० ॐ	३० ह्रां	७० ह्रीं	११ ह्रूं
६६ ह्रौं	१२ हः	६ अ	३१ सि
१३ आ	७२ इ	२८ सा	८ व
२६ व	७ ट्	१४ न	७१ मः

जाप्य मन्त्र— ॐ ह्रीं लक्ष्मी-सुख-विधायकाय श्रीमहा-वीराय नमः।

विधि— 'भोज-पत्र' पर **केसर** से लिखें। श्रद्धा-पूर्वक सिंहासन पर रखें। घी का **'दीपक'** जलाकर व धूप कर सवा लाख **'जप'** करें।

(२)

दीपावली-यन्त्र

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

विधि— दीपावली के दिन उपवास रखें। शुद्ध भाव से **ब्रह्म-चर्य** का पालन करें। पहली आधी रात तक **नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स** — इस मन्त्र का जप करे और आधी रात के बाद सूर्योदय तक **ओं नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण-महाण-सियस्स** — इस मन्त्र का जप करें। अर्द्ध-रात्रि या सूर्योदय के समय केशर या चन्दन आदि से उक्त **यन्त्र** लिखकर अपने पास रखें। इससे **लक्ष्मी-प्राप्ति** होती है।

* * *

२१

श्रीलक्ष्मी, श्रीसिद्ध-लक्ष्मी, श्रीरमा एवं श्रीमहा-लक्ष्मी-मन्त्र-साधना

इन्द्र द्वारा श्रीलक्ष्मी देवी की पूजा
(पृष्ठ ११४)
चतुरक्षर-श्रीलक्ष्मी-साधन
(पृष्ठ ११५)
दशाक्षर-श्रीलक्ष्मी-साधना
(पृष्ठ ११७)
एकादशाक्षर-श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-साधना
(पृष्ठ ११९)
एकादशाक्षर-श्रीरमा-साधना
(पृष्ठ १२३)
त्रयो-विंशाक्षर-श्रीलक्ष्मी-साधना
(पृष्ठ १२५)
द्वादशाक्षर-श्रीमहा-लक्ष्मी-साधना
(पृष्ठ १२७)

इन्द्र द्वारा श्रीलक्ष्मी देवी की पूजा

'श्रीलक्ष्म्युपाख्यान' के अनुसार दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण जब **इन्द्र-लक्ष्मी से रहित** हो गए, तब वे **भगवान् विष्णु** के पास गए। **भगवान् विष्णु** ने **श्रीलक्ष्मी जी** को **'क्षीर-सागर'** से उत्पन्न होने की और देवताओं को दैत्यों से मिलकर **'समुद्र-मन्थन'** करके **लक्ष्मी जी** को प्राप्त करने की बात कही। **'समुद्र-मन्थन'** हुआ। **लक्ष्मी जी** प्रगट हुईं। **इन्द्र** ने **'लक्ष्मी की पूजा'** का विचार किया और **ब्रह्मा जी** द्वारा बतलाए **'ध्यान एवं मन्त्र'** से उनकी पूजा की। यथा–

सहस्त्र-दल-पद्मस्य, कर्णिका-वासिनीं पराम् ।
शरत्-पार्वण-कोटीन्दु-प्रभा-जुष्ट-करां वराम् ।।
स्व-तेजसां प्रज्वलन्तीं, सुख-दृश्यां मनोहराम् ।
प्रतप्त-काञ्चन-निभां, शोभा-मूर्ति-मती सतीम् ।।

अर्थात् **सहस्त्र-दल कमल पर निवास करनेवाली शरत्-कालीन कोटि चन्द्रमा के समान कान्तिवाली, अपने तेज से जाज्वल्यमान, तपाए हुए स्वर्ण के समान कान्तिवाली, शोभा-मूर्ति लक्ष्मी** का ध्यान करता हूँ।

इस प्रकार **इन्द्र** ने उक्त **'ध्यान'** कर **'षोडशोपचारों'** से **लक्ष्मी जी** की पूजा की और **ब्रह्मा जी** द्वारा बतालाए गए **'द्वादशाक्षर मन्त्र'** (**श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमल-वासिनी स्वाहा**) का **'जप'** किया। **इन्द्र** द्वारा किए गए उक्त **ध्यान एवं मन्त्र** का नित्य **'जप'** करने से भक्तों को भी सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, इसमें सन्देह नहीं।

धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष-प्रदायक

चतुरक्षर-श्रीलक्ष्मी-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी-चतुरक्षर-मन्त्रस्य श्रीभृगु ऋषिः। निवृद्-गायत्री छन्दः। श्री श्री देवता। मम सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीभृगु-ऋषये नमः। मुखे निवृद्-गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्री श्रियै देवतायै नमः। मम सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। श्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। श्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–श्रां हृदयाय नमः। श्रीं शिरसे स्वाहा। श्रूं शिखायै वषट्। श्रैं कवचाय हुम्। श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

माणिक्य-प्रतिम-प्रभां हिम-निभैस्तुङ्गैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्त-ग्राहित-रत्न-कुम्भ-सलिलैरासिञ्च्य-मानां मुदा।
हस्ताब्जैर्वर-दानमम्बुज-युगाभीतिर्दधानां हरेः।
कान्तां कांक्षित-पारिजात-लतिकां वन्दे सरोजासनाम् ।।

अर्थात् माणिक्य के समान देह-कान्ति। बर्फ के समान उज्ज्वल एवं विशाल चार हाथियों की सूँड़ों द्वारा पकड़े हुए कलशों के जल से सानन्द अभिषिक्ता। कर-कमलों द्वारा वर-मुद्रा, दो कमल और अभय-मुद्रा धारण करनेवाली। भगवान् विष्णु की प्रिया कामना-पूर्ति में पारिजात-लता के समान। कमल के ऊपर विराजमाना भगवती श्रीलक्ष्मी की मैं वन्दना करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्री श्रियै समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्री श्रियै समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्री श्रियै घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्री श्रियै दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्री श्रियै निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्री श्रियै समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं (४ अक्षर)। वर्ण-माला में इस मन्त्र का जप आगे दी गई विधि के अनुसार करना चाहिए।

विशेष : उक्त चतुरक्षर मन्त्र में थोड़ा-सा परिवर्तन करने पर यह भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी का सिद्ध मन्त्र हो जाता है– ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं। इस मन्त्र के लिए ऊपर दिए गए विवरण के अनुसार विनियोगादि करना चाहिए। 'ध्यान' इस प्रकार है–

आसिञ्च्य-माना रत्नाभा, पद्मस्था पद्म-लोचना। पद्म-द्वयं च हस्तेषु, बिभ्रती नृप-सेविता।।

ॐ

१. अं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं अं
२. आं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं आं
३. इं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं इं
४. ईं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ईं
५. उं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं उं
६. ऊं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ऊं
७. ऋं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ऋं
८. ॠं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ॠं
९. ऌं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ऌं
१०. ॡं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ॡं
११. एं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं एं
१२. ऐं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं
१३. ओं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ओं
१४. औं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं औं
१५. अं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं अं
१६. अः ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं अः
१७. कं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं कं
१८. खं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं खं
१९. गं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं गं
२०. घं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं घं
२१. ङं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ङं
२२. चं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं चं
२३. छं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं छं
२४. जं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं जं
२५. झं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं झं
२६. ञं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ञं
२७. टं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं टं
२८. ठं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ठं
२९. डं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं डं
३०. ढं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ढं
३१. णं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं णं
३२. तं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं तं
३३. थं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं थं
३४. दं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं दं
३५. धं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं धं
३६. नं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं नं
३७. पं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं पं
३८. फं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं फं
३९. बं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं बं
४०. भं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं भं
४१. मं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं मं
४२. यं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं यं
४३. रं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं रं
४४. लं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं लं
४५. वं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं वं
४६. शं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं शं
४७. षं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं षं
४८. सं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं सं
४९. हं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं हं
५०. ळं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ळं

क्षं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा–

१०१. अं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं अं
१०२. कं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं कं
१०३. चं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं चं
१०४. टं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं टं
१०५. तं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं तं
१०६. पं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं पं
१०७. यं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं यं
१०८. शं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं शं

होम– यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद १. घृत-मधु-शर्करा-युक्त पद्मों (कमल-पुष्पों) या २. तिलों या ३. विल्व-फलों या ४. पद्म-तिल-विल्व-फल तीनों के मिश्रण से होम करे, तो सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। धन-वैभव की प्राप्ति होती है।

❖❖❖

ऋण एवं दरिद्रता-नाशक

दशाक्षर-श्रीलक्ष्मी-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी-दशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीदक्ष ऋषिः। विराट् छन्दः। श्री श्री देवता। मम ऋण-नाशनार्थे-लक्ष्मी-फल-प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीदक्ष-ऋषये नमः। मुखे विराट्-छन्दसे नमः। हृदये श्री श्रियै देवतायै नमः। मम ऋण-नाशनार्थे-लक्ष्मी-फल-प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–ॐ देव्यै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ पद्मिन्यै नमः तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ वरदायै नमः अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ कमल-रूपायै नमः कनिष्ठाभ्यां वौषट्।

पञ्चाङ्ग-न्यास–ॐ देव्यै नमः हृदयाय नमः। ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा। ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः शिखायै वषट्। ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम्। ॐ कमल-रूपायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

आसीना सरसीरुहे स्मित-मुखी हस्ताम्बुजैर्विभ्रती।
दानं पद्म - युगाभये च वपुषा सौदामिनी - सन्निभा।
मुक्ता-हार-विराजमान-पृथुलोत्तुङ्ग-स्तनोद्भासिनी।
पायाद् वः कमला कटाक्ष - विभवैरानन्दयन्ती हरिम्।।

अर्थात् पद्म के ऊपर विराजमाना, मुस्कुराती हुई, कर-कमलों में वर-मुद्रा, दो कमल और अभय-मुद्रा। विद्युत् के समान देह की कान्ति। मोतियों के हार से सुशोभित, अत्यन्त उच्च एवं स्थूल पयोधरों से प्रदीप्त-शोभावाली भगवती कमला अपने कटाक्ष-कौशल से भगवान् विष्णु को आनन्दित करती हैं। वे हमारी रक्षा करें।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्री श्रियै समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्री श्रियै समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्री श्रियै घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्री श्रियै दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्री श्रियै निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्री श्रियै समर्पयामि नमः।

मन्त्र– **नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा** (१० अक्षर)। वर्ण-माला में इस मन्त्र का जप आगे दी गई विधि के अनुसार करना चाहिए।

ॐ

१. अं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा अं
२. आं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा आं
३. इं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा इं
४. ईं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ईं
५. उं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा उं
६. ऊं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ऊं
७. ऋं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ऋं
८. ॠं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ॠं
९. ऌं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ऌं
१०. ॡं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ॡं
११. एं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा एं
१२. ऐं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ऐं
१३. ओं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ओं
१४. औं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा औं
१५. अं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा अं
१६. अः नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा अः
१७. कं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा कं
१८. खं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा खं
१९. गं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा गं
२०. घं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा घं
२१. ङं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ङं
२२. चं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा चं
२३. छं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा छं
२४. जं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा जं
२५. झं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा झं
२६. ञं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ञं
२७. टं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा टं
२८. ठं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ठं
२९. डं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा डं
३०. ढं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ढं
३१. णं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा णं
३२. तं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा तं
३३. थं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा थं
३४. दं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा दं
३५. धं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा धं
३६. नं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा नं
३७. पं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा पं
३८. फं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा फं
३९. बं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा बं
४०. भं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा भं
४१. मं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा मं
४२. यं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा यं
४३. रं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा रं
४४. लं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा लं
४५. वं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा वं
४६. शं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा शं
४७. षं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा षं
४८. सं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा सं
४९. हं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा हं
५०. ळं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा ळं

क्षं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१. अं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा अं
१०२. कं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा कं
१०३. चं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा चं
१०४. टं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा टं
१०५. तं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा तं
१०६. पं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा पं
१०७. यं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा यं
१०८. शं नमः कमल-वासिन्यै स्वाहा शं

होम- यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद घृत, मधु और शर्करा से युक्त पद्मों द्वारा होम करे, तो ऋण, दरिद्रता का नाश होता है और सभी प्रकार से रक्षा होती है तथा यश, कान्ति वैभव की प्राप्ति होती है।

❖❖❖

एकादशाक्षर-श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-एकादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीहिरण्य-गर्भ ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वत्यो देवताः। श्रीं वीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। मम सर्व-क्लेश-पीडा-परीहारार्थं, सर्व-दुःख-दारिद्र्य-नाशनार्थं, सर्व-कार्य-सिद्धयर्थं च जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीहिरण्य-गर्भ-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदये श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवताभ्यो नमः। श्रीं वीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। मम सर्व-क्लेश-पीडा-परीहारार्थं, सर्व-दुःख-दारिद्र्य-नाशनार्थं, सर्व-कार्य-सिद्धयर्थं च जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–ॐ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ सिद्ध-लक्ष्म्यै कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ नमः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–ॐ ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ श्रीं कवचाय हुम्। ॐ सिद्ध-लक्ष्म्यै नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां, षड्-भुजां च चतुर्मुखीं।
त्रि-नेत्रां खड्ग - शूलाभी - पद्म - चक्र - गदा - धराम्।।
पीताम्बर-धरां देवीं, नानालङ्कार-भूषितां।
तेजः-पुञ्ज-धरीं श्रेष्ठीं, ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम्।।

अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु-शिव-स्वरूपा, छः भुजा एवं चार मुखोंवाली, त्रि-नेत्रा, हाथों में खड्ग-शूल-तलवार-पद्म-चक्र-गदा धारण करनेवाली, पीताम्बर एवं नानालङ्कारों से भूषिता, श्रेष्ठ तेज-पुञ्ज से प्रदीप्त बाल-कुमारी-स्वरूपा भगवती श्रीसिद्ध-लक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः (११ अक्षर)। वर्ण-माला में इस मन्त्र का जप आगे दी गई विधि के अनुसार करना चाहिए।

ॐ

१. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः अं
२. आं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः आं
३. इं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः इं
४. ईं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ईं
५. उं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः उं
६. ऊं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ऊं
७. ऋं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ऋं
८. ॠं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ॠं
९. ऌं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ऌं
१०. ॡं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ॡं
११. एं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः एं
१२. ऐं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ऐं
१३. ओं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ओं
१४. औं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः औं
१५. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः अं
१६. अः ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः अः
१७. कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः कं
१८. खं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः खं
१९. गं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः गं
२०. घं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः घं
२१. ङं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ङं
२२. चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः चं
२३. छं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः छं
२४. जं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः जं
२५. झं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः झं
२६. ञं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ञं
२७. टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः टं
२८. ठं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ठं
२९. डं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः डं
३०. ढं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ढं
३१. णं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः णं
३२. तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः तं
३३. थं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः थं
३४. दं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः दं
३५. धं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः धं
३६. नं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः नं
३७. पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः पं
३८. फं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः फं
३९. बं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः बं
४०. भं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः भं
४१. मं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः मं
४२. यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः यं
४३. रं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः रं
४४. लं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः लं
४५. वं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः वं
४६. शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः शं
४७. षं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः षं
४८. सं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः सं
४९. हं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः हं
५०. ळं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः ळं

क्षं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१.अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः अं
१०२.कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः कं
१०३.चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः चं
१०४.टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः टं
१०५.तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः तं
१०६.पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः पं
१०७.यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः यं
१०८.शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः शं

होम- यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद १. घृत-युक्त पायस (खीर) या २. विल्व-पत्र या ३. तिल से होम करे, तो सभी प्रकार के दुःख, कष्ट दूर होते हैं। दरिद्रता की समाप्ति होकर, सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

विशेष : उक्त एकादशाक्षर-श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-साधना के साथ-साथ यदि आगे प्रस्तुत श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-स्तोत्र का भी नित्य पाठ करे, तो विलक्षण अनुभूतियों के साथ-साथ लक्ष्मी की शीघ्र प्राप्ति होती है।

सविधि श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-स्तोत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीहिरण्यगर्भः ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वत्यो देवताः। श्रीं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। मम सर्व-क्लेश-पीडा-परिहारार्थं, सर्व-दुःख-दारिद्र्य-नाशनार्थं, सर्व-कार्य-सिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-स्तोत्र-पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीहिरण्यगर्भ-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। मम सर्व-क्लेश-पीडा-परिहारार्थं, सर्व-कार्य-सिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-स्तोत्र-पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास—श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं विष्णु-तेजसे तर्जनीभ्यां नमः। क्लीं अमृतानन्दायै मध्यमाभ्यां नमः। श्रीं दैत्य-मालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं तेज-प्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास—श्रीसिद्ध-लक्ष्म्यै हृदयाय नमः। ह्रीं विष्णु-तेजसे शिरसे स्वाहा। क्लीं अमृतानन्दायैं शिखायै वषट्। श्रीं दैत्य-मालिन्यै कवचाय हुम्। ह्रीं तेजः-प्रकाशिन्यै नेत्र-त्रयाय वौषट्। क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट्।

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः'

उक्त मन्त्र से ताल-त्रय कर दिग्बन्धन करे। अब 'ध्यान' करे—

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां, षड्-भुजां च चतुर्मुखीम्।
त्रि-नेत्रां खड्ग-त्रिशूल-पद्म-चक्र-गदा-धराम्।।१
पीताम्बर-धरां देवीं, नानाऽलङ्कार-भूषिताम्।
तेजः-पुञ्ज-धरीं श्रेष्ठां, ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम्।।२

अब यथा-विधि मानसोपचारों से पूजन कर 'स्तोत्र-पाठ' करे। यथा—

ॐकारं लक्ष्मी-रूपं तु, विष्णुं हृदयमव्ययम्।
विष्णुमानन्दमव्यक्तं, ह्रींकारं बीज-रूपिणीम्।।१
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां, सदाऽत्यानन्द-दायिनीम्।
श्रीं दैत्य-शमनीं शक्तिं, मालिनीं शत्रु-मर्दिनीम्।।२
तेजः-प्रकाशिनीं देवीं, वरदां शुभ-कारिणीम्।
ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं, कालिका-रूप-शोभिनीम्।।३

अकारे लक्ष्मी-रूपं तु, उकारे विष्णुमव्ययम्।
मकारः पुरुषोऽव्यक्तो, देवी - प्रणव उच्यते।।४
सूर्य-कोटि-प्रतीकाशं, चन्द्र-कोटि-सम-प्रभम्।
तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं, ब्रह्म-रूपं व्यवस्थितम्।।५
ॐकारं परमानन्दं, सदैव सुख-सुन्दरीम्।
सिद्ध-लक्ष्मि! मोक्ष-लक्ष्मि!, आद्य-लक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।६
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये!, शिवे! सर्वार्थ-साधिके!
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।७
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी, द्वितीयं वैष्णवी तथा।
तृतीयं कमला प्रोक्ता, चतुर्थं सुन्दरी तथा।।८
पञ्चमं विष्णु-शक्तिश्च, षष्ठं कात्यायनी तथा।
वाराही सप्तमं चैव, ह्यष्टमं हरि-वल्लभा।।९
नवमी खड्गिनी प्रोक्ता, दशमं चैव देविका।
एकादशं सिद्ध-लक्ष्मीर्द्वादशं हंस-वाहिनी।।१०

।।फल-श्रुति।।

एतत् स्तोत्र-वरं देव्या, ये पठन्ति सदा नराः।
सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते, नात्र कार्या विचारणा।।१
एक-मासं द्वि-मासं च, त्रि-मासं मासश्चतुष्टयम्।
पञ्च-मासं च षण्मासं, त्रि-कालं यः सदा पठेत्।।२
ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी, दारिद्र्यामय-पीडितः।
जन्मान्तर-सहस्त्रोत्थैर्मुच्यते सर्व-किल्विषैः।।३
दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्र-वान् भवेत्।
धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो, वह्नि-चौर-भयेषु च।।४
शाकिनी - भूत - वेताल - सर्प - व्याघ्र - निपातने।
राज-द्वारे सभा-स्थाने, कारा-गृह-निबन्धने।।५
ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं, प्राणिनां हित-कारकम्।
स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं, दारिद्र्यं न च बाधते।
सर्व-पाप-हरा लक्ष्मीः, सर्व-सिद्धि-प्रदायिनी।।६

।। श्रीब्रह्म-पुराणे श्री-सिद्ध-लक्ष्मी-स्तोत्रं ।।

एकादशाक्षर-श्रीरमा-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीरमा-एकादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीजमदग्नि ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। श्रीरमा देवता। मम सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीजमदग्नि-ऋषये नमः। मुखे त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदये श्रीरमायै देवतायै नमः। मम सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–यौं नौं मौं नमः ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। यौं नौं मौं नमः ऐं तर्जनीभ्यां स्वाहा। यौं नौं मौं नमः ऐं मध्यमाभ्यां वषट्। यौं नौं मौं नमः ऐं अनामिकाभ्यां हुम्। श्रियै नमः कनिष्ठाभ्यां वौषट्। श्रीं नमः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–यौं नौं मौं नमः ऐं हृदयाय नमः।यौं नौं मौं नमः ऐं शिरसे स्वाहा। यौं नौं मौं नमः ऐं शिखायै वषट्। यौं नौं मौं नमः ऐं कवचाय हुम्। श्रियै नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। श्रीं नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

सिन्दूराभां च पद्मस्थां, पद्म-पत्रं च दर्पणम्।
अर्घ-पात्रं च दधतीं, सद्धार-मुकुटान्विताम् ।।
नाना-दासि-परिवृतां, काञ्ची-कुण्डल-मण्डिताम्।
लावण्य-भूमिकां वन्दे, सुन्दराङ्गद-बाहुकाम् ।।

अर्थात् सिन्दूर के समान अरुण कान्तिवाली, पद्म के ऊपर विराजमाना, हाथों में कमल-पुष्प, दर्पण एवं अर्घ-पात्र धारण करनेवाली, मनोहर मुकुट धारण करनेवाली, करधनी व कुण्डलों से शोभित दासियों से घिरी हुई, सुन्दर कङ्कणों से देदीप्यमान भुजाओंवाली भगवती श्रीरमा की मैं प्रार्थना करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीरमायै समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीरमायै समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीरमायै घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीरमायै दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीरमायै निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीरमायै समर्पयामि नमः।

मन्त्र– यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः (११ अक्षर)। वर्ण-माला में इस मन्त्र का जप आगे दी गई विधि के अनुसार करना चाहिए।

ॐ

१. अं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः अं
२. आं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः आं
३. इं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः इं
४. ईं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ईं
५. उं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः उं
६. ऊं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ऊं
७. ऋं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ऋं
८. ॠं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ॠं
९. ऌं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ऌं
१०. ॡं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ॡं
११. एं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः एं
१२. ऐं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ऐं
१३. ओं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ओं
१४. औं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः औं
१५. अं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः अं
१६. अः यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः अः
१७. कं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः कं
१८. खं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः खं
१९. गं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः गं
२०. घं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः घं
२१. ङं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ङं
२२. चं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः चं
२३. छं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः छं
२४. जं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः जं
२५. झं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः झं
२६. ञं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ञं
२७. टं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः टं
२८. ठं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ठं
२९. डं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः डं
३०. ढं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ढं
३१. णं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः णं
३२. तं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः तं
३३. थं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः थं
३४. दं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः दं
३५. धं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः धं
३६. नं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः नं
३७. पं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः पं
३८. फं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः फं
३९. बं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः बं
४०. भं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः भं
४१. मं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः मं
४२. यं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः यं
४३. रं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः रं
४४. लं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः लं
४५. वं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः वं
४६. शं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः शं
४७. षं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः षं
४८. सं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः सं
४९. हं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः हं
५०. ळं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः ळं

क्षं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१. अं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः अं
१०२. कं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः कं
१०३. चं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः चं
१०४. टं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः टं
१०५. तं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः तं
१०६. पं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः पं
१०७. यं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः यं
१०८. शं यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः शं

होम- यथा-शक्ति लगातार सात रात्रियों तक नित्य 'जप' करने के बाद १. घृत-युक्त पायस (खीर) या २. विल्व-पत्र या ३. तिल से होम करे, तो सभी प्रकार के दुःख, कष्ट दूर होते हैं। सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

❖❖❖

त्रयो-विंशाक्षर-श्रीलक्ष्मी-साधना

मन्त्र-महार्णव में एक प्राकृत गन्थ के आधार पर प्रस्तुत मन्त्र का उल्लेख है। इस मन्त्र का विनियोगादि ज्ञात नहीं है, केवल प्रतिदिन **१०८ बार** जप करने का निर्देश है। अतएव **वर्ण-माला** में प्रस्तुत मन्त्र का जप निम्न प्रकार से करना चाहिए–

ॐ

१. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा अं

२. आं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा आं

३. इं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा इं

४. ईं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ईं

५. उं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा उं

६. ऊं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॠं

९. ऌं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ऌं

१०. ॡं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॡं

११. एं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ओं

१४. औं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा औं

१५. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा अं

१६. अः ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा अः

१७. कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा कं

१८. खं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा खं

१९. गं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा गं

२०. घं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा घं

२१. ङं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ङं

२२. चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा चं

२३. छं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा छं

२४. जं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा जं

२५. झं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा झं

२६. ञं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ञं

२७. टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा टं

२८. ठं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ठं

२९. डं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा डं

३०. ढं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ढं

३१. णं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा णं

३२. तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा तं

३३. थं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा थं

३४. दं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा दं

३५. धं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा धं

३६. नं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा नं

३७. पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा पं

३८. फं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा फं

३९. बं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा बं

४०. भं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा भं

४१. मं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा मं

४२. यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा यं

४३. रं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा रं

४४. लं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा लं

४५. वं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा वं

४६. शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा शं

४७. षं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा षं

४८. सं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा सं

४९. हं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा हं

५०. ळं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ळं

क्ष

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१.अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा अं

१०२.कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा कं

१०३.चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा चं

१०४.टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा टं

१०५.तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा तं

१०६.पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा पं

१०७.यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा यं

१०८.शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा शं

होम- १०८ बार 'जप' करने के बाद घृत-युक्त पायस (खीर) या विल्व-पत्र या तिल से होम कर सकते हैं।

❖❖❖

द्वादशाक्षर-श्रीमहा-लक्ष्मी-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-द्वादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीमहा-लक्ष्मी देवता। मम सर्वाभीष्ट-सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीमहा-लक्ष्म्यै देवतायै नमः। मम सर्वाभीष्ट-सिद्धये जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्सौः वीर्याय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ जगत्-प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट्। ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम्। ॐ ह्सौः वीर्याय नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ जगत्-प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट्।

ध्यान–

बालार्क-द्युतिमिन्दु-खण्ड-विलसत्-कोटीर-हारोज्ज्वलाम्।
रत्नाकल्प-विभूषितां कुच-नतां शालेः करैर्मञ्जरीम्।।
पद्मं कौस्तुभ-रत्नमप्यविरतं सम्विभ्रतीं सस्मिताम् ।
फुल्लाम्भोज-विलोचन-त्रय-युतां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।

अर्थात् प्रभात-काल के सूर्य के समान आभावाली। अर्द्ध-चन्द्र से सुशोभित मस्तक। गले में उज्ज्वल हार। सभी अङ्ग रत्नाभूषणों से विभूषित। पयोधरों के भार से झुकी हुई। हाथों में धान्य-मञ्जरी, कमल, कौस्तुभ और रत्न धारण किए हुई। हँस-मुखी। तीन नेत्र खिले हुए कमल-पुष्पों के समान। ऐसी श्रेष्ठ माँ श्रीमहा-लक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्म्यै समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्म्यै समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्म्यै घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्म्यै दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्म्यै निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्म्यै समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः (१२ अक्षर)। वर्ण-माला में इस मन्त्र का जप आगे दी गई विधि के अनुसार करना चाहिए।

१. अं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः अं
२. आं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः आं
३. इं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः इं
४. ईं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ईं
५. उं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः उं
६. ऊं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ऊं
७. ऋं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ऋं
८. ॠं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ॠं
९. लृं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः लृं
१०. लॄं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः लॄं
११. एं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः एं
१२. ऐं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ऐं
१३. ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ओं
१४. औं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः औं
१५. अं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः अं
१६. अः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः अः
१७. कं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः कं
१८. खं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः खं
१९. गं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः गं
२०. घं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः घं
२१. ङं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ङं
२२. चं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः चं
२३. छं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः छं
२४. जं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः जं
२५. झं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः झं
२६. ञं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ञं
२७. टं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः टं
२८. ठं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ठं
२९. डं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः डं
३०. ढं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ढं
३१. णं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः णं
३२. तं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः तं
३३. थं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः थं
३४. दं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः दं
३५. धं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः धं
३६. नं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः नं
३७. पं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः पं
३८. फं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः फं
३९. बं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः बं
४०. भं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः भं
४१. मं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः मं
४२. यं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः यं
४३. रं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः रं
४४. लं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः लं
४५. वं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः वं
४६. शं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः शं
४७. षं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः षं
४८. सं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः सं
४९. हं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः हं
५०. ळं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः ळं

इसके बाद 'विलोम'-क्रम से 'ळं' से 'अं' तक (५१ से १०० तक) 'जप' करे। फिर 'अष्ट-मातृका-वर्णों' (अं-कं-चं-टं-तं-पं-यं-शं) से १०१ से १०८ तक 'जप' करे। यथा-

१०१. अं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः अं
१०२. कं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः कं
१०३. चं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः चं
१०४. टं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः टं
१०५. तं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः तं
१०६. पं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः पं
१०७. यं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः यं
१०८. शं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः शं

होम- यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद घृत-श्रीफल अथवा कमल के पुष्पों के द्वारा होम करे तथा सुगन्धित पवित्र जल से भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी का तर्पण करे, तो भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी की कृपा की प्राप्ति होती है और सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।

❖❖❖

श्रीमहा-लक्ष्मी की सिद्ध आरती

कांत्या काञ्चन संनिभा, हिम-गिरि आसीना–माँ हिम-गिरि आसीना।
अमरित-सर-सरसिज-दल, सहस्त्र सदासीना।
पद्मासिनि कमलासिनि, गज-द्वय द्वय दोनों–माँ गज-द्वय द्वय दोनों।
ओर भरे घट अमरित, सींचत कर दोनों।
जय देवि, जय देवि, द्वय कर कमल-धरा माँ, कर-द्वय कमल-धरा।
वर कर अपर अभय कर, चतुर करा मधुरा ।। जय देवि, श्रीलक्ष्मी ।।१
अम्ब प्रसीद करुण दृग्गरुण छटा-लहरी–माँ अरुण छटा-लहरी।
निज जन अतुल प्रदायनि, हरि चित्पर सहरी।
सम्पत्सुखद सनातनि, दुःख-दारिद्र्य-हरिणी–माँ दुःख-दारिद्र्य-हरिणी।
हत्-गत शोक-विनाशिनि, पर हरि-मन-वरिणी।। जय देवि, जय देवि० ।।२
कान्तिशशान्ति-मयी त्वं, शरणागत पाता– माँ शरणागत पाता।
विष्णु-प्रिया सर्वेश्वरि, शक्ति सरा माता।
क्षांतिर्भक्ति स्व-जन प्रण-रक्षिणि सिध्यवधी–माँ रक्षिणि सिध्यवधी ।
धृति धात्री जग धारणि, रति मति देव निधी।। जय देवि, जय देवि० ।।३
लक्ष्मी लक्ष प्रदामा, कोटि प्रदा करुणा–माँ कोटि प्रदा करुणा ।
गति सति भूति भुवन भर, वरुणालय करुणा।
स्थिति पोषणि भव-शोषणि, निर्मल मल-हरिणी–माँ निर्मल मल-हरिणी।
भव-जल पुण्य-परायणि, दुःख सरतर तरिणी।। जय देवि, जय देवि० ।।४
आगच्छागच्छ त्वं, तुम बिन जग फीको– माँ तुम बिन जग फीको ।
दास दया धरि विनवत, जन कर धर नीको।
सदयि दया-मयि अयि, निज जन आपद त्राता– माँ निज जन आपद त्राता।
माता भ्रात सखा तुम, जन तन मन नाता। जय देवि, जय देवि० ।।५

बाबाश्री द्वारा रचित उक्त 'आरती' को कण्ठस्थ कर यदि पूरा परिवार नित्य श्रद्धा से 'पाठ'–'आरती' करे, तो सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। यह अनुभूत है।

कार्तिक अमावास्या
महा-पर्व दीपावली में पूजित
त्रि-ज्योति-स्वरूपा
श्रीसिद्ध-लक्ष्मी

श्रीमहा-कालि!, श्रीमहा-लक्ष्मि!, श्रीमहा-सरस्वति!, त्रयी-विग्रहे!, कुल-पूर्णे!
प्रसीद प्रसीद, सर्वे-मनोरथान् पूरय पूरय, सर्वारिष्ट-विघ्नं छेदय छेदय,
सर्व-ग्रह-पीडा-ज्वरोग्र-भयं विध्वंसय विध्वंसय, सर्व-त्रिभुवन-जातं वशय वशय,
मोक्ष-मार्गं दर्शय दर्शय, ज्ञान-मार्गं प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान-तमो नाशय नाशय,
धन-धान्यादि-समृद्धिं कुरु कुरु, सर्व-कल्याणं कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष,
सर्वापदेभ्यो निस्तारय निस्तारय, मम वज्र-शरीरं साधय साधय।

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२७६७